@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/ qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
गुरुवार, 12 दिसंबर 2024

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 32 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

कपूर खानदान ने की पीएम मोदी से मुलाकात, करीना ने तैमूर और जेह के लिए लिया ऑटोग्राफ

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली। भारतीय सिनेमा जगत के 'ग्रेट शो मैन' राज कपूर की 100वीं जयंती का जश्न जबरदस्त होगा। कपूर फैमिली पूरी आन बान शान से उत्सव की तैयारी में जुटी है। परिवार ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी न्योता दिया है। खुशी का इजहार पूरे परिवार ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर किया है। करीना कपूर ने तो तस्वीरों की श्रृंखला के साथ वो क्लिप भी शेयर किया जिसमें पीएम मोदी उनके बच्चों टिम और जेह को ऑटोग्राफ दे रहे हैं। करीना कपूर ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर पीएम के साथ मुलाकात करने पहुंची कपूर फैमिली की तस्वीर साझा कर कैप्शन

में लिखा, हम अपने दादा और ग्रेट अभिनेता राज कपूर के असाधारण जीवन और विरासत के जश्न को मनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निमंत्रित किए जाने पर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। इस खास दोपहर के लिए मोदी जी का धन्यवाद। इस मील के पत्थर को मनाने में आपकी गर्मजोशी, अटेंशन और समर्थन हमारे लिए बहुत मायने रखता है। जैसा कि हम दादाजी की कलात्मकता और भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के शानदार 100 वर्षों का जश्न मनाने जा रहे हैं। हम उनकी विरासत का सम्मान करते हैं, जो हमें और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। हमें उनकी शानदार फिल्मों और 'राज कपूर 100 फिल्म फेस्टिवल' के साथ भारतीय सिनेमा पर उनके प्रभाव पर गर्व है। इसके साथ अभिनेत्री ने 13-15 दिसंबर, 2024 , 10 फिल्में , 40 शहर, 135 सिनेमाघर के साथ 'राज कपूर के 100 साल लिखा। करीना ने इंस्टाग्राम पर पीएम मोदी के साथ पोज देते हुए कपूर परिवार की तस्वीर साझा की। पीएम मोदी के साथ साझा की गई तस्वीर में करीना के साथ करिश्मा कपूर, नीतू सिंह, रणबीर कपूर, आलिया भट्ट, रिद्धिमा कपूर, सैफ अली खान के साथ अन्य सदस्य नजर आए। एक अन्य तस्वीर में करीना कपूर और करिश्मा कपूर पीएम से ऑटोग्राफ लेती नजर आईं। अन्य तस्वीरों में पीएम मोदी, सैफ अली, रणबीर, नीतू, आलिया और करीना से बात करते दिखाई दे दिए। दिग्गज अभिनेत्री नीतू कपूर और करिश्मा कपूर ने भी पीएम मोदी के साथ तस्वीर पोस्ट की।

लालू यादव बुढापे में 'सठिया' गए हैं : लवली आनंद

नरेश मल्होत्रा

पटना । राजद अध्यक्ष लालू यादव के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रस्तावित 'महिला संवाद यात्रा' को लेकर दिए गए 'आंख सेंकने' वाले बयान पर शुरू हुई बयानबाजी थमने का नाम नहीं ले रही है। इसी कड़ी में सांसद लवली आनंद ने राजद नेता लालू यादव को निशाने पर लेते हुए कहा कि लालू यादव बुढापे में 'सठिया' गए हैं। उन्होंने कहा कि उनका यह बयान महिलाओं का अपमान है। पत्रकारों से चर्चा के दौरान लवली आनंद ने कहा, लालू यादव बहुत गलत बात बोल रहे हैं। मुझे तो लग रहा है कि लालू यादव बुढ़ापा में सठिया गए हैं। उनका बयान महिलाओं का अपमान है। इस तरह की बात नहीं बोलनी चाहिए। लालू यादव मुख्यमंत्री के पद रहे और महिला जाति और मुख्यमंत्री के लिए इस तरह बोलना शोभा नहीं देता है। उनको अपने शब्दों को वापस लेना चाहिए। ज्ञात हो कि एक दिन पहले राजद के प्रमुख और पूर्व केंद्रीय मंत्री

लालू यादव इंडी गठबन्धन में नेतृत्व के सवाल पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भी समर्थन दिया था। पत्रकारों ने जब लालू यादव से पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के एक बयान के संबंध में पूछा तो उन्होंने कहा, इंडिया ब्लॉक का नेतृत्व ममता बनर्जी को दे देना चाहिए। हम सहमत हैं ।कांग्रेस की आपत्ति से जुड़े प्रश्न पर लालू ने कहा था, कांग्रेस के आपत्ति जताने से कुछ नहीं होगा। ममता बनर्जी को नेतृत्व दे देना चाहिए। तिरहुत स्नातक चुनाव में जदयू उम्मीदवार की हार पर लवली आनंद ने कहा कि ये देखना पड़ेगा ऐसा कैसे हुआ। बहुत सारी बातें है उसपर मिल बैठकर समीक्षा करनी चाहिए। यह देखना होगा कि कहां चूक हुई है। उन्होंने जोर देकर कहा कि बिहार में हुए चार विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में सभी सीटें एनडीए ने जीती हैं। इधर, इंडिया ब्लॉक में नेतृत्व परिवर्तन को लेकर पूछे गए सवाल पर उन्होंने कोई भी जवाब नहीं दिया। उन्होंने कहा कि यह उनका मामला है। हालांकि उन्होंने यह जरूर कहा कि एनडीए एकजुट है और देश में भी काम हो रहा है, राज्य में भी काम हो रहा है। इंडी गठबन्धन का कुछ होने वाला नहीं है।

संजय मल्होत्रा ने अगले 3 वर्षों के लिए RBI के 26वें गवर्नर का कार्यभार संभाला

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक के 26वें गवर्नर के रूप में संजय मल्होत्रा ने आज अपना कार्यभार संभाल लिया। उनका तीन साल का कार्यकाल भारतीय बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के लिए नई दिशा तय करेगा। शक्तिकांत दास के कार्यकाल की समाप्ति के बाद संजय मल्होत्रा को इस महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया गया है। संजय मल्होत्रा ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के तहत राजस्थान कैडर से अपनी सेवा शुरू की थी। वह अब रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में कार्यभार संभाला है।उन्होंने उर्जित पटेल के इस्तीफे के बाद केंद्रीय बैंक की जिम्मेदारियां संभाली थी। संजय मल्होत्रा का कार्यकाल अगले तीन साल के लिए होगा। मल्होत्रा के पास वित्तीय

सेवाओं के क्षेत्र में अत्यधिक अनुभव है। उन्होंने भारत सरकार के वित्त मंत्रालय में वित्तीय सेवा विभाग के सचिव के तौर पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाई हैं। इसके अलावा, उन्हें केंद्र और राज्य सरकारों में टैक्स और वित्तीय मामलों का भी गहरा अनुभव है।

शक्तिकांत दास का कार्यकाल भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में 2018 में शुरू हुआ था और उनके कार्यकाल के दौरान कई महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय लिए गए। हालांकि, सरकार ने उनके कार्यकाल में कोई विस्तार करने का निर्णय नहीं लिया है। बताया जा रहा है कि संजय मल्होत्रा की नियुक्ति का फैसला वित्तीय सेवा क्षेत्र में उनके अनुभव को देखते हुए लिया गया है।

कुपवाड़ा जिले में सुरक्षाबलों ने संदिग्ध आईईडी को नियंत्रित विस्फोट से किया नष्ट

कुपवाड़ा। उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के लंगेट इलाके में सुरक्षाबलों ने एक संदिग्ध इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) का पता लगाया और उसे एक नियंत्रित विस्फोट के माध्यम से नष्ट कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस और सेना के संयुक्त गश्ती दल को कुपवाड़ा जिले के हंदवाड़ा इलाके के लंगेट में राजमार्ग के किनारे एक संदिग्ध बैग मिला। उन्होंने बताया कि तुरंत बम निरोधक दस्ते को मौके पर बुलाया गया और संदिग्ध बैग को सुरक्षित एक सुनसान जगह पर ले जाया गया।

प्रणब मुखर्जी और पीएम मोदी का रिश्ता राजनीतिक सीमाओं से परे था : शर्मिष्ठा मुखर्जी

नई दिल्ली । शर्मिष्ठा मुखर्जी ने अपने पिता और पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की जयंती पर कुछ किस्से साझा किए। ये भी बताया कि प्रधानमंत्री मोदी और प्रणब दा के संबंध नए नहीं बल्कि बहुत पुराने थे।

शर्मिष्ठा मुखर्जी ने बताया कि मेरे पिता और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच संबंध राजनीतिक सीमाओं से परे था। ऐसा आमतौर पर देखने को नहीं मिलता है।वे बताती हैं, यह बात बिल्कुल सार्वजनिक था कि मोदी जी, प्रधानमंत्री के रूप में, और प्रणब मुखर्जी, राष्ट्रपति के रूप में, किस तरह से एक टीम की तरह काम करते थे। दोनों ने एकदम लोकतांत्रिक ढंग से काम किया। यह हैरान करने वाली बात थी, क्योंकि दोनों की राजनीतिक

और वैचारिक पृष्ठभूमि बिल्कुल अलग थी। मुझे बाबा की डायरी पढ़ने के बाद और मोदी जी से कुछ दिलचस्प बातें जानने के बाद ये सारी बातें समझ में आईं। वे आगे बताती हैं, एक बार जब मोदी जी प्रधानमंत्री बनने के बाद बाबा से मिलने गए, तो उन्होंने बाबा के पैर छुए और कहा, दादा, आप मुझे मेरे छोटे भाई की तरह मार्गदर्शन दीजिए। बाबा ने उन्हें पूरी मदद का आश्वासन दिया। मोदी जी ने मुझे बताया कि उनका संबंध बाबा से बहुत पुराना है, और ये सिर्फ गुजरात के मुख्यमंत्री बनने के बाद का नहीं था। वह पहले भी, जब आरएसएस के साधारण कार्यकर्ता थे, बाबा से मिलने आते थे। दिल्ली में नॉर्थ एवेन्यू और साउथ एवेन्यू में उनकी मुलाकातें होती थीं।वे बताती हैं, मोदी जी ने मुझे बताया कि जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तो एक बार बाबा ने डायरी में लिखा था कि मोदी जी कांग्रेस सरकार के आलोचक हैं, लेकिन जब भी वह निजी तौर पर बाबा से मिलते, तो हमेशा उनके पैर छूते थे। बाबा ने यह भी लिखा था कि मोदी जी की इज्जत उन्हें बहुत अजीब तरह से महसूस होती थी, हालांकि वह खुद नहीं जानते थे। इसका कारण क्या था। वे आगे बताती हैं, एक और दिलचस्प बात यह है कि जब मोदी जी प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने बाबा से मिलने के बाद कहा कि उन्हें अपनी विदेश नीति को समझने में मदद मिली थी। बाबा ने कहा था कि मोदी जी को विदेशी मामलों में गहरी समझ है, और वह जल्दी ही विदेश नीति के जटिल पहलुओं को समझने में सक्षम हो गए थे।

सभापति के खिलाफ नोटिस को कामयाब नहीं होने देंगे : रिजिजू

नई दिल्ली । विपक्ष ने राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास का नोटिस दिया है। इस बीच बुधवार को राज्यसभा की कार्यवाही एक बार फिर हंगामे के बीच शुरू हुई और थोड़ी ही देर में हंगामा इतना बढ़ गया कि राज्यसभा की कार्यवाही को दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित करना पड़ा। गौरतलब है कि पिछले तीन कार्य दिवसों से राज्यसभा में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच लगातार जबरदस्त गतिरोध बना हुआ है। इस गतिरोध के कारण सदन की कार्यवाही नहीं चल पा रही है।

बुधवार को संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने सदन में हो रहे हंगामे के बीच कहा कि भारतीय लोकतंत्र में 72 साल बाद एक किसान का बेटा उपराष्ट्रपति के पद पर पहुंचा हैं, इस देश की सेवा करने का काम किया

है। पूरा देश देख रहा है कि उपराष्ट्रपति ने राज्यसभा के सभापति के रूप में कैसे इस सदन की गरिमा को बनाए रखा है। संसदीय कार्य मंत्री ने कहा कि आप लोगों ने बाहर जाकर, विभिन्न कार्यक्रमों में उपराष्ट्रपति का नाम लेकर बे-मतलब के आरोप लगाए हैं। उन्होंने विपक्षी सांसदों से कहा कि अगर आप सभापति को सम्मान नहीं दे सकते हैं तो आप इस सदन के सदस्य होने के लायक नहीं हैं। किरेन रिजिजू ने कहा कि हम मंत्री के रूप में इस देश की एकता व अखंडता को बनाए रखने की शपथ लेकर आए हैं। उन्होंने कहा कि यदि आप उपराष्ट्रपति पद की गरिमा पर हमला करेंगे तो हम जरूर उसका बचाव करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता सोनिया गांधी और जार्ज सोरोस के बीच संबंधों को लेकर जो बात आ रही है वह हमने नहीं कहीं, यह बात अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट में कही गई है। उन्होंने कहा कि जो बात जार्ज सोरोस बोलते हैं आप लोग भारत में वही बात बोलते हैं। उन्होंने कहा कि आप भारत विरोधियों के साथ खड़े रहते हो। उन्होंने कहा कि आप सभापति के खिलाफ नोटिस देते हो ऐसा सभापति मिलना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि सभापति ने सदैव किसानों, गरीबों की बात की है।संसदीय कार्य मंत्री ने कहा कि जगदीप धनखड़ सभापति के रूप में इस चेयर पर आसीन है, हमें इस बात का गर्व है। उन्होंने कहा कि सभापति के खिलाफ इस प्रकार के नोटिस की कार्रवाई को हम कभी कामयाब नहीं होने देंगे। किरेन रिजिजू के उपरांत पूर्व प्रधानमंत्री व जेडीएस के राज्यसभा सांसद एचडी देवगौड़ा ने भी विपक्ष द्वारा राज्यसभा सभापति के खिलाफ दिए गए अविश्वास प्रस्ताव का विरोध किया।

निमाड़ के प्रसिद्ध संत सियाराम बाबा का निधन

खरगोन। मध्यप्रदेश के निमाड़ के प्रसिद्ध संत सियाराम बाबा का बीमारी के उपरांत 94 वर्ष की आयु में आज सुबह निधन हो गया। उनके निधन से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। पुलिस अधीक्षक धर्मराज मीणा ने बताया कि संत सियाराम बाबा का आज सुबह 6:10 पर नर्मदा तट के समीप भट्टयांन स्थित आश्रम में निधन हो गया। उनकी पार्थिव देव को अंतिम दर्शन हेतु रखा गया है। आज शाम 4-00 बजे उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव इस दौरान उपस्थित रहेंगे।संत सियाराम बाबा को कुछ दिन पूर्व निमोनिया के चलते सनावद के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उनकी इच्छा के मुताबिक वहां से डिस्चार्ज होने के बाद वे कसरावद तहसील के अंतर्गत भट्टयांन स्थित आश्रम में लौट आये

थे। मुख्यमंत्री डॉ यादव के निर्देश पर मेडिकल कॉलेज इंदौर की टीम ने उनके स्वास्थ्य का परीक्षण कर उपचार का प्रोटोकॉल निर्धारित किया था। इसके अलावा मुख्यमंत्री डॉ यादव निरंतर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ले रहे थे। आज डॉक्टर यादव का उनके दर्शन करने आश्रम आने का कार्यक्रम भी था किंतु इसके पूर्व ही बाबा ने देह त्याग दी।

इसके तहत आश्रम में ही टर्शियरी लेवल की सुविधा उपलब्ध कराकर चिकित्सकों की टीम द्वारा उनके स्वास्थ्य की देखरेख की जा रही थी। साथ ही भक्तों द्वारा भजन व जाप आदि किए जा रहे थे। सेवादारों के मुताबिक हनुमान भक्त बाबा दान स्वरूप ज्यादातर 10 रुपये ही लेते थे और धन राशि को नर्मदा घाटों की मरम्मत व विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के उन्नयन में प्रदान कर देते थे। ज्यादा शिक्षित नहीं होने के बावजूद वह लगातार रामचरितमानस का पाठ करते रहते थे।

ऋषिकेश में योग सीखने आए विदेशी युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

ऋषिकेश। इटली से योग सीखने ऋषिकेश आए एक विदेशी युवक की मुनि की रेती थाना क्षेत्र के तपोवन के एक गेस्ट हाउस में संदिग्ध परिस्थितियों मौत हो गयी। पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना दे दी है।

पुलिस ने जांच पड़ताल कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए एम्स भेज दिया है। थाना मुनि की रेती प्रभारी निरीक्षक रितेश शाह ने बताया कि इटली? निवासी जोस राफेल कारपेंटरी 46 वर्ष यहां टूरिस्ट वीजा पर तपोवन में ?योग सीखने के लिए आया था। वह यहां एक गेस्ट हाउस में ठहरा था।

भारतीय तटरक्षक बल ने 79 नाविकों के साथ दो बंगलादेशी मछली पकड़ने वाले ट्रॉलर को पकड़ा

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली। भारतीय तटरक्षक बल ने भारत-बंगलादेश के बीच समुद्री सीमा के पास 79 नाविकों के साथ दो बंगलादेशी मछली पकड़ने वाले ट्रॉलर को पकड़ लिया है। यह जानकारी मीडिया रिपोर्ट में प्राप्त हुई। द ढाका ट्रिब्यून के अनुसार, ट्रॉलर मालिकों और जहाजरानी विभाग के अनुसार, यह घटना खुलना के हिरोन पॉइंट इलाके में सोमवार दोपहर हुई।

जब्त किए गए ट्रॉलरों की पहचान चैटोग्राम के सी एंड ए एग्रो लिमिटेड के स्वामित्व वाले एफवी मेघना-5 और एसआर फिशिंग के स्वामित्व वाले एफवी लैला-2 के रूप में हुई है। अंसारुल हक, परिचालन प्रबंधक, सी एंड ए एग्रो लिमिटेड ने कहा: एफवी मेघना-5 और एफवी लैला-2 खुलना बेल्ट के हिरोन पॉइंट क्षेत्र में गहरे समुद्र में मछली पकड़ने में लगे हुए थे। सोमवार सुबह लगभग 11 बजे, दोनों जहाजों को भारतीय तटरक्षक बल ने जब्त कर लिया। बाद में, हम नाविकों के साथ संपर्क करने में कामयाब रहे और उन्होंने हमें सूचित किया कि ओडिशा पहुंचने में एक या दो घंटे और लगेंगे।अंसारुल हक ने आगे कहा कि एफवी मेघना-5 में चालक दल और मछुआरों सहित 37 लोग सवार थे, जबकि एफवी लैला-2 में 42 लोग सवार थे। चालक दल से सोमवार रात और मंगलवार सुबह संपर्क किया गया, और उन्होंने अच्छी स्थिति में होने की सूचना दी।जहाजरानी विभाग के प्रबंध निदेशक कमोडोर मोहम्मद मकसूद आलम ने कहा कि दोनों जहाजों को भारतीय जल सीमा के पास जब्त किया गया है। बंगलादेश तटरक्षक बल और अन्य सरकारी एजेंसियां भारतीय अधिकारियों के संपर्क में हैं ।

मतपत्रों द्वारा वोट देने के लिए भारत जोड़ो यात्रा जैसा आंदोलन चलाया जाएगा: पटोले

मार्कडवाडी। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस ने समिति अध्यक्ष नाना पटोले कहा कि लोकतंत्र में वोट देने के अधिकार की रक्षा करने और मतपत्र के माध्यम से चुनाव सुनिश्चित करने के लिए जल्द ही भारत जोड़ो यात्रा जैसा एक बड़े पैमाने पर आंदोलन शुरू किया जाएगा, जो मार्कडवाडी से ही शुरू होगा।मार्कडवाडी के ग्रामीणों के साथ बातचीत करते हुए पटोले ने कहा कि पड़ोसी देशों में लोकतंत्र को खत्म किया जा रहा है और भारत में लोकतांत्रिक प्रणालियों को कमजोर करने के प्रयास शुरू हो गए हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में मतदाता को राजा माना जाता है, लेकिन अब इसी राजा के वोट पर डाका डाला जा रहा है। लोग ईवीएम मशीनों पर संदेह करते हैं, यही कारण है कि मार्कडवाडी के निवासियों ने पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए मतपत्र के माध्यम से मतदान कराने की मांग कर देश को रास्ता दिखाया है।उनके साथ पूर्व विधायक रामहरि रूपनवार, पूर्व विधायक एवं राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हर्षवर्द्धन सपकाल, प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता अतुल लोंढे सहित कई ग्रामीण मौजूद थे। पटोले ने कहा कि विधानसभा चुनाव के

आश्चर्यजनक परिणामों ने चुनाव प्रक्रिया पर ही सवाल खड़े कर दिये हैं। मतदान के दिन शाम पांच बजे चुनाव आयोग द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 58.33 प्रतिशत मतदान हुआ। हालांकि, रात 11-30 बजे तक यह आंकड़ा बढ़कर 65.2 प्रतिशत हो गया।

केजरीवाल का ऐलान : दिल्ली में कांग्रेस से गठबंधन नहीं, अकेले ही चुनाव लड़ेगी आप

नई दिल्ली । दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि उनकी पार्टी आगामी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस से कोई गठबंधन नहीं करेगी। केजरीवाल ने स्पष्ट किया कि आप दिल्ली में अकेले ही चुनाव लड़ेगी। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने आगामी दिल्ली चुनावों के लिए कांग्रेस के साथ संभावित गठबंधन पर स्रोत-आधारित इनपुट से इनकार किया। केजीरवाल ने ट्वीट कर कहा , ÷आम आदमी पार्टी दिल्ली में यह चुनाव अपने दम पर लड़ेगी। कांग्रेस के साथ गठबंधन की कोई संभावना नहीं है। दिल्ली में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले अप्रैल-मई में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच चुनावी गठबंधन हुआ था. गठबंधन के तहत आम आदमी पार्टी के खाते में 4 सीटें गई

जबकि 3 सीटों पर कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार उतारे. हालांकि चुनाव में इस गठबंधन को कोई फायदा नहीं हुआ. दिल्ली की सभी 7 सीटों पर गठबंधन को करारी हार का सामना करना पड़ा. सभी 7 सीटों पर भारतीय जनता पार्टी का कब्जा हो गया.

कांग्रेस और आम आदमी पार्टी इंडिया गठबंधन का हिस्सा हैं, ऐसे में दिल्ली के चुनाव में मिलकर चुनाव लड़ने की संभावना जताई जा रही थी. लेकिन अब केजरीवाल के खंडन के बाद दोनों राष्ट्रीय दलों के मिलकर चुनाव लड़ने की संभावना खत्म हो चुकी है.राजधानी दिल्ली में अगले साल की शुरुआत में विधानसभा चुनाव कराए जाने हैं. चुनाव में मुख्य मुकाबला आम आदमी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के बीच माना जा रहा है. 8 फरवरी 2020 को हुए चुनाव में आम आदमी पार्टी ने शानदार जीत हासिल करते हुए 70 में से 62 सीटों पर जीत हासिल की थी. भारतीय जनता पार्टी को 8 सीटों पर जीत मिली जबकि कांग्रेस का खाता तक नहीं खुला था.

राज्यसभा में गतिरोध जारी, कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली। राज्यसभा में बुधवार को कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और अमेरिकी निवेशक जॉर्ज सोरोस के संबंधों को लेकर भारी हंगामा हुआ जिसके कारण सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित करनी पड़ी।इससे पहले भी सदन की कार्यवाही इसी मुद्दे पर 12 बजे तक स्थगित की गई थी।पहले स्थगन के बाद उपसभापति हरिवंश ने सदन में प्रश्नकाल शुरू करने के लिए कार्यवाही आरंभ की तो सत्ता पक्ष? और विपक्ष के सदस्य जोर-जोर से बोलने लगे। सदन के नेता जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि पिछले दो दिनों से सदस्य श्रीमती गांधी और सोरोस के संबंधों को लेकर उद्वेलित है। इन संबंधों का असर देश की संप्रभुता और अखंडता पर प्रभाव पड़ सकता है। यह संबंध देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के लिए खतरा हैं। उन्होंने कहा कि देश को इन संबंधों की वास्तविकता जानने का अधिकार है इसलिए सदन में इस पर चर्चा होनी चाहिए।श्री नड्डा ने कहा कि कांग्रेस इस मुद्दे पर चर्चा से बचने के लिए देश का ध्यान भटकना चाहती है इसलिए सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लायी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष संवैधानिक संस्थाओं पर हमले कर रहा है और उनका अपमान कर रहा है। विपक्षी ने कभी भी संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों का सम्मान नहीं किया है और सदन के भीतर तथा बाहर लगातार अपमानजनक बर्ताव करता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस निवेशक सोरोस का उपकरण बन गई है और इसके तीव्र भर्त्सना की जानी चाहिए।इस बीच सदन में दोनों पक्षों की ओर से शोरशराबा और नारेबाजी होती रही। श्री हरिवंश दोनों पक्षों से शांत होने की अपील करते रहे लेकिन हंगामा बढ़ता गया। उसके बाद उन्होंने सदन की कार्यवाही गुरुवार तक स्थगित करने की घोषणा कर दी।

राज्यसभा में इस सप्ताह लगातार तीसरे दिन भी सोरोस को लेकर हंगामा जारी रहा और कार्यवाही ठप्प रही। लगातार तीसरे दिन प्रश्नकाल और शून्यकाल नहीं हो सका।

कूचबिहार को अलग राज्य घोषित करने की मांग पर रेल रोको आंदोलन से उत्तर बंगाल के चार जिलों में यातायात बाधित

कोलकाता । ग्रेटर कूचबिहार पीपल्स एसोसिएशन (जीसीपीए) द्वारा कूचबिहार को अलग राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर बुधवार सुबह असम-पश्चिम बंगाल सीमा के जोड़ाई स्टेशन पर 'रेल रोको' आंदोलन शुरू किया गया। आंदोलनकारियों के इस कदम के चलते उत्तर बंगाल के चार जिलों में रेल यातायात पूरी तरह बाधित हो गया। कई लंबी दूरी की ट्रेनें रोक दी गईं, जबकि कई ट्रेनों को रद करना पड़ा। इनमें वंदे भारत एक्सप्रेस भी शामिल है।जीसीपीए की लंबे समय से मांग है कि कूचबिहार को अलग राज्य का दर्जा दिया जाए। इस मुद्दे पर संगठन ने बुधवार को फिर से अपना आंदोलन तेज कर दिया। सुबह होते ही संगठन के नेता बंशी मदन के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ता जोड़ाई स्टेशन पर ट्रैक पर बैठ गए। आंदोलनकारियों ने साफ कर दिया कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं होंगी, आंदोलन जारी रहेगा।रेलवे सूत्रों के मुताबिक, इस आंदोलन के चलते अप और डाउन वंदे भारत एक्सप्रेस, गुवाहाटी-न्यू जलपाईगुड़ी और बंगाईगांव-न्यू जलपाईगुड़ी एक्सप्रेस सहित चार ट्रेनों को रद्द करना पड़ा। वहीं, डिब्रूगढ़-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस, अरुणाचल एक्सप्रेस और गुवाहाटी-नई दिल्ली एक्सप्रेस को फकीराग्राम, गोलकगंज और न्यू कूचबिहार होते हुए अन्य मार्गों से चलाया गया।

श्रीलंका में स्पीकर अशोक रानवाला की डॉक्टरेट की डिग्री पर विवाद, संसद की वेबसाइट ने संशोधन किया

एजेंसी

कोलंबो। श्रीलंका में स्पीकर अशोक रानवाला की डॉक्टरेट की डिग्री पर मचे बवाल के बाद संसद की वेबसाइट ने उनके प्रोफाइल में नाम से पहले लिखे गए 'डॉ.' को हटा दिया है। अब उनका नाम अशोका रानवाला सांसद के रूप में दर्ज है। डेली मिरर समाचार पत्र के अनुसार इस बदलाव से उनकी कथित डॉक्टरेट की वैधता पर और संदेह पैदा हो गया है। 'डॉ.' शीर्षक को हटाने के लिए वेबपेज को पिछले 24 घंटों के भीतर अपडेट किया गया। सोशल मीडिया यूजर्स फेसबुक पर इस विवाद के बाद उनकी साख पर सवाल उठा चुका है। चुनाव आयोग के पूर्व चेयरमैन महिंदा देशप्रिया ने भी स्पीकर को अपनी डिग्री साबित करने की चुनौती दी है। उन्होंने फेसबुक पोस्ट में कहा कि अगर रानवाला ऐसा करने में विफल रहते हैं तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। देशप्रिया ने नेशनल पीपुल्स पावर से भी आग्रह किया कि अगर स्पीकर जवाब नहीं देते हैं तो कार्रवाई की जाए।उल्लेखनीय है कि रानवाला को अध्यक्ष नियुक्त किए जाने के संबंध में संसद की प्रेस विज्ञप्ति में उन्हें मोरातुवा विश्वविद्यालय से केमिकल इंजीनियरिंग में डिग्री के अलावा वासेदा विश्वविद्यालय, जापान से बायोकैमिस्ट्री में डॉक्टरेट की उपाधि लेने की जानकारी दी गई थी। ताजा विवाद पर स्पीकर ने कोई जवाब नहीं दिया है।

यमन के हौथी समूह ने तीन अमेरिकी सैन्य आपूर्ति जहाजों को निशाना बनाने का दावा किया

सना। यमन के हौथी समूह ने जिबूती बंदरगाह से रवाना होने के बाद तीन अमेरिकी सैन्य आपूर्ति जहाजों को निशाना बनाने का दावा किया। हौथी सैन्य प्रवक्ता याह्या सरिया ने एक टेलीविजन बयान में कहा, हमने अदन की खाड़ी में दो अमेरिकी विध्वंसक जहाजों को भी निशाना बनाया, जो आपूर्ति जहाजों की सुरक्षा कर रहे थे। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, प्रवक्ता ने कहा कि उनके समूह ने अभियान में कई रॉकेट और बम से लदे ड्रोन का इस्तेमाल किया। उन्होंने दावा किया कि यह हमला सटीक था। उन्होंने दावा किया, यह 10 दिनों में उन्हीं जहाजों और विध्वंसक जहाजों के खिलाफ दूसरा अभियान है। प्रवक्ता ने यह भी दावा किया कि उनके समूह ने मंगलवार सुबह इजरायल के जाफा और अश्कलोन क्षेत्रों में दो ड्रोनों का उपयोग कर %इजरायली सैन्य ठिकानों% को निशाना बनाया था। हौथी समूह उत्तरी यमन के अधिकांश हिस्से को नियंत्रित करता है। कथित तौर पर इजरायल के साथ चल रहे संघर्ष के बीच गाजा में फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए समूह नवंबर 2023 से इजरायल की ओर रॉकेट और ड्रोन लॉन्च कर रहा है। वह लाल सागर में इजरायल से जुड़ी शिपिंग को रोक रहा है। जवाब में, जनवरी से ही जलक्षेत्र में तैनात अमेरिकी-ब्रिटिश नौसैनिक गठबंधन ने हौथी ठिकानों पर हवाई हमले और मिसाइल हमले किए हैं, जिसके कारण हौथी हमलों में विस्तार हुआ है। इसमें अमेरिकी और ब्रिटिश कमर्शियल जहाज और नौसैनिक जहाज भी शामिल हो गए हैं।

सड़क दुर्घटना में आठ लोगों की मौत, 5 घायल

काठमांडू। नेपाल के रौतहाट जिले में एक स्पोर्ट्स यूटिलिटी वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई और पांच अन्य घायल हो गए वाहन में 13 लोग सवार थे। इस वाहन पर तीर्थयात्री सवार थे जो कि बारा जिले में एक मंदिर का दर्शन घर लौट रहे थे। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, रौताहट जिला पुलिस के सूचना अधिकारी राम कुमार महतो ने बताया, शुरुआती जांच से पता चलता है कि ड्राइवर तेज रफ्तार से गाड़ी चला रहा था जिसकी वजह से वह वाहन पर नियंत्रण नहीं रख पाया। महतो ने बताया कि घायलों में से एक की हालत गंभीर है और सभी पीड़ित सिराहा जिले के एक ही गांव के हैं। इससे पहले 29 नवंबर को एक वाहन चट्टान से गिर गया था। हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। समाचार एजेंसी के अनुसार, जिला पुलिस प्रमुख प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि बागमती प्रांत के रामेछाप जिले में आठ लोगों को ले जा रहा वाहन करीब 300 मीटर नीचे एक चट्टान से गिर गया। पहाड़ी नेपाल में यातायात दुर्घटनाएं आम हैं, जिनमें हर साल सैकड़ों लोगों की जान जाती है।

विद्रोही गुटों ने की सैनिकों के लिए आम माफी की घोषणा

दमिश्क। सीरिया के विद्रोही गुटों ने अनिवार्य सेवा में भर्ती किए गए सभी सैन्य कर्मियों के लिए आम माफी की घोषणा की है। एक बयान में, विद्रोही गुटों के सैन्य अभियान विभाग ने ऐलान किया, हम अनिवार्य सेवा के तहत सभी सैन्य कर्मियों को माफी देते हैं। उन्हें सुरक्षा की गारंटी दी जाती है, और उनके खिलाफ किसी भी तरह की आक्रामकता वर्जित है।

सरकारी समाचार एजेंसी के हवाले से सिन्हुआ समाचार एजेंसी ने बताया कि इस माफी को सैन्य कर्मियों को फिर से इकट्ठा करने के व्यापक सुलह प्रयासों के हिस्से के रूप में देखा जा रहा है। ये वो सैनिक हैं, जो बशर अल-असद की सरकार के पतन के दौरान पकड़े गए या भाग गए थे। माफी या इसके प्रभाव के बारे में आगे की जानकारी तुरंत स्पष्ट नहीं थी। बता दें विद्रोही गुटों ने रविवार को सीरियाई राजधानी दमिश्क पर कब्जा कर लिया था जिसके बाद राष्ट्रपति असद के देश छोड़ कर भाग गए।

टोरंटो में बांग्लादेश के वाणिज्य दूतावास के बाहर हिंदुओं का प्रदर्शन

एजेंसी

टोरंटो। बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ हो रहे अत्याचार से कनाडा में रह रहे भारतीय चिंतित और गुस्से में हैं। उन्होंने आज टोरंटो में बांग्लादेश के वाणिज्य दूतावास के बाहर प्रदर्शन कर हिंदुओं से एकजुटता का आह्वान किया। कनाडा में रहने वाले हिंदुओं के संगठन 'कनाडा हिंदू वॉलंटियर्स'ने एक्स हैंडल पर प्रदर्शन का ब्यौरा देते हुए फोटो कोलाज जारी किया है। 'कनाडा हिंदू वॉलंटियर्स'के एक्स हैंडल पर उपलब्ध विवरण के अनुसार, बांग्लादेश के कट्टर इस्लामी शासन में हिंदुओं के नरसंहार के विरोध में आज कनाडाई हिंदू समुदाय के सदस्य टोरंटो में बांग्लादेश के वाणिज्य दूतावास के बाहर एकत्र हुए। हिंदू समुदाय के सदस्यों ने प्रदर्शन करते हुए सभी क्षेत्रों के लोगों से न्याय और हिंसा के इस क्रूर चक्र के अंत की लड़ाई में एकजुट होने का आह्वान किया।संगठन ने कहा कि बांग्लादेश में कट्टर इस्लामी मोहम्मद यूनुस के शासन में हिंदुओं को

अभूतपूर्व अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा है। धार्मिक आस्था पर प्रहार कर प्राचीन मंदिरों को अपवित्र और नष्ट किया जा रहा है। कई पुजारियों की हत्या कर दी गई या उन्हें जेल में डाल दिया गया। नौकरीपेशा और कामकाजी हिंदुओं को जबरिया बेरोजगार कर आजीविका का साधन छीना जा रहा है। हिंदुओं को लूटा जा रहा है। उनके परिवार की महिलाओं के साथ बलात्कार किया जा रहा है। संगठन ने इस पर दुनिया के तमाशबीन बने रहने पर चिंता जताई है।'कनाडा हिंदू वॉलंटियर्स' का मानना है कि यह सिर्फ एक संकट नहीं है। यह एक समुदाय, एक संस्कृति और एक आस्था को मिटाने का एक व्यवस्थित अभियान है। बांग्लादेश के हिंदू अल्पसंख्यकों को दिया गया दर्द और पीड़ा मानवता की अंतरात्मा पर एक दाग है। संगठन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से निर्णायक कार्रवाई करने का आह्वान किया है। साथ ही सभी कनाडाई लोगों से अपने निर्वाचित अधिकारियों को पत्र लिखकर इस मुद्दे पर आवाज उठाने का आग्रह किया है। लोगों से कहा गया है कि इस मुद्दे को कनाडा की संसद में उठाने के लिए वह अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों पर जोर डालें। हिंदू संगठन ने कहा कि कनाडा को राजनयिक दबाव और प्रतिबंधों के माध्यम से बांग्लादेशी शासन को जवाबदेह ठहराकर कड़ा स्टैंड लेना चाहिए। बांग्लादेश में हिंदुओं की पीड़ा कोई अकेली त्रासदी नहीं है। यह एक गहरा मानवाधिकार संकट है।

सीरिया में फंसे पाकिस्तान के 350 नागरिक लेबनान पहुंचे

एजेंसी

बेरूत (लेबनान)। सीरिया में फंसे पाकिस्तान के 245 तीर्थयात्रियों सहित लगभग 350 नागरिक लेबनान सीमा पार कर गए । सीरिया में अपदस्थ राष्ट्रपति बशर अल-असद की सरकार के पतन के बाद पैदा हुए संकट के बाद पाकिस्तान के सैकड़ों तीर्थयात्री अभी भी फंसे हुए हैं।पाकिस्तान के एआरवाई न्यूज चैनल की खबर के अनुसार, सीरिया में मौजूद पाकिस्तान के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पाकिस्तान विदेश कार्यालय ने बयान में कहा कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और विदेशमंत्री सीनेटर मोहम्मद इशाक डार के निर्देशों के तहत दमिश्क में पाकिस्तान के दूतावास ने प्रत्यावर्तन प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया।सीरिया में मिशन के उप प्रमुख उमर हयात पाकिस्तान के नागरिकों के साथ सीमा पर पहुंचे। बेरूत में मिशन के उप प्रमुख नवाब आदिल ने लेबनान

में सीमा पर मुल्क के नागरिकों का स्वागत किया। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने सोमवार को लेबनानी समकक्ष नजीब मिकाती से संपर्क कर मांगी थी। लेबनान के प्रधानमंत्री मिकाती ने आश्वासन दिया कि उनका देश पाकिस्तान के व्यक्तियों को हर संभव सहायता प्रदान करेगा और उनकी सुरक्षित घर वापसी की सुविधा प्रदान करेगा।

मर्दु फर्नांडो श्रीलंका सुप्रीम कोर्ट की चीफ जस्टिस बनने वाली दूसरी महिला

एजेंसी

कोलंबो। डॉ. शिरानी भंडारनायके के बाद मर्दु फर्नांडो श्रीलंका सुप्रीम कोर्ट की चीफ जस्टिस बनने वाली दूसरी महिला बन गई हैं। उन्होंने कल न्याय के स्वतंत्र और निष्पक्ष मध्यस्थ के रूप में देश की न्यायपालिका की अखंडता, स्वतंत्रता और गरिमा को बनाए रखने के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता की प्रतिज्ञा की। डेली मिरर समाचार पत्र के अनुसार, चीफ जस्टिस मर्दु फर्नांडो ने यह टिप्पणी औपचारिक स्वागत समारोह में की। श्रीलंका सुप्रीम कोर्ट ने देश के 48वें मुख्य न्यायाधीश के स्वागत के लिए समारोह का आयोजन किया। नवनिर्वाचित मुख्य न्यायाधीश मर्दु फर्नांडो का उच्चतम न्यायालय, अपील न्यायालय, उच्च न्यायालयों, जिला न्यायालयों और मजिस्ट्रेट न्यायालयों के न्यायाधीशों ने गर्मजोशी से स्वागत किया गया। चीफ जस्टिस मुर्दु फर्नांडो ने कहा कि वह कानून के शासन को मजबूत करने और एक ऐसी न्यायपालिका का निर्माण जारी रखने के लिए तत्पर हैं जो न केवल निष्पक्ष हो बल्कि लोगों के लिए पारदर्शी, सुलभ और जवाबदेह भी हो। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका, उनके लिए अन्याय के हमले से लोकतंत्र के किले की रक्षा करने वाले सैनिकों की एक सेना के समान है। उन्होंने कहा कि हम भविष्य की ओर देखते हैं। उन्हें प्रत्येक नागरिक के जीवन में न्याय के महत्व की याद आती है। न्याय मात्र एक आदर्श नहीं है, यह एक जीवित, सांस लेने वाली शक्ति है जो परिवारों, समुदायों और राष्ट्रों को प्रभावित करती है। यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है कि कानून का शासन बिना किसी डर या पक्षपात के निष्पक्ष और निष्पक्ष रूप से लागू हो।

पूर्व आईएसआई प्रमुख फैज हमीद पर राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने का आरोप

एजेंसी

रावलपिंडी। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) के पूर्व चीफ लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) फैज हमीद पर औपचारिक तौर पर राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया गया है। इससे उनके फील्ड जनरल कोर्ट मार्शल (एफजीसीएम) का रास्ता साफ हो गया है। पाकिस्तान के सैन्य प्रतिष्ठान की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने ऐलान किया कि हमीद को राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। रिटायर्ड जनरल को अब डीजी-आईएसआई के रूप में उनकी गतिविधियों को लेकर गंभीर जांच का सामना करना पड़ेगा। हमीद पर यह आरोप भी है कि पाकिस्तान तहरीक-

ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के कार्यकर्ताओं और समर्थकों द्वारा 9 मई, 2023 को सैन्य प्रतिष्ठानों पर हिंसक हमलों की योजना बनाने और उन्हें अंजाम देने में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को उन्होंने सीक्रेट समर्थन दिया। आईएसपीआर की ओर से जारी एक बयान में कहा गया, 12 अगस्त 2024 को लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद (रिटायर्ड) के खिलाफ पाकिस्तान सेना अधिनियम के प्रावधान के तहत एफजीसीएम की प्रक्रिया शुरू की गई। सबसे पहले उन्हें औपचारिक रूप से राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने, राज्य की सुरक्षा और हित के लिए आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम का उल्लंघन करने, अधिकार और सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग और किसी व्यक्ति (व्यक्तियों) को गलत तरीके से नुकसान पहुंचाने के लिए आरोपित किया गया। आईएसपीआर ने कहा, इस प्रक्रिया के दौरान, राजनीतिक हितों के साथ मिलीभगत के तहत अस्थिरता फैलाने वाली 9 मई 2023 की घटना सहित कई संबंधित घटनाओं में लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद के शामिल होने की अलग से जांच की जा रही है। उन्हें कानून के अनुसार सभी वैध अधिकार दिए जा रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फैज हमीद को इस साल अगस्त में पाकिस्तानी सेना ने गिरफ्तार किया था। हमीद के खिलाफ कानूनी कार्रवाई से इमरान खान और उनकी पार्टी की मुश्किलें बढ़ सकती है। 9 मई के कई मामलों को अब पाकिस्तान सेना के आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के तहत सैन्य अदालतों में सुनवाई के लिए लाया जा सकता है।

पड़ोस में एक साथ दो मोर्चों पर जुटा चीन, ताइवान के बाद जापान के पास भेजे 90 नौसैनिक पोत

एजेंसी

ताइपे। चीन ने ताइवान के साथ-साथ दक्षिण चीन सागर में भी अपनी ताकत का प्रदर्शन जारी रखा है। ताजा घटनाक्रम में उसने क्षेत्र के पास ही जापान के अधिकार वाले एक द्वीप के करीब 90 नौसैनिक और कोस्ट गार्ड्स से जुड़े पोत भेजे दिए हैं। ताइवान के रक्षा अधिकारियों के मुताबिक, बीते तीन दशकों में यह चीन की तरफ से सबसे बड़ी तैनाती है। ताइवान के अधिकारियों का कहना है कि चीन का यह कदम जापान के करीब सैन्य अभ्यास की तरह है। हालांकि, चीन ने अब तक इस बात की पुष्टि नहीं की है कि वह क्षेत्र में युद्धाभ्यास कर रहा है या नहीं।

ताइवान के रक्षा मामलों से जुड़ी प्रेस ब्रीफिंग को संबोधित करते हुए एक अधिकारी ने कहा, ÷बीजिंग के अभियान न सिर्फ ताइपे को निशाना बना रहे हैं, बल्कि वह क्षेत्र में मौजूद देशों को भी अपनी क्षमता दिखाने की कोशिश हैं। खासकर जापान और फिलीपींस को, ताकि वह ताइवान की रक्षा के लिए आगे न आ पाएं। रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता सुन ली-फैंग ने कहा, चीन की ओर से मौजूदा समय

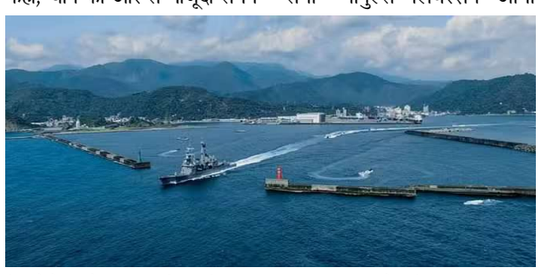

में नौसैन्य तैनाती उसके बीते चार युद्धाभ्यासों से ज्यादा है। उन्होंने कहा, ताइवान के आसपास के क्षेत्रों में आवाजाही रोकने के साथ ही चीन पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में दो दीवारें बना रहा है। वह ताइवान के हवाई रक्षा पहचान क्षेत्र के पूर्वी छोर और प्रशांत महासागर में एक और जगह बड़ी संख्या में पोतों को तैनात कर रहा है।उन्होंने आगे कहा, इन दो दीवारों के जरिए चीन साफ संदेश दे रहा है÷ ताइवान जलडमरूमध्य हमारा क्षेत्र है और इसके आसपास के मुद्दे चीन की सेना- पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) और देश की सरकार संभालेगी। गौरतलब है कि ताइवान अपने आसपास चीनी युद्धाभ्यास के मद्देनजर टकराव की स्थिति के लिए तैयारियां कर रहा है। पिछले महीने ताइवान के राष्ट्रपति लाइ चिंग-ते के प्रशांत क्षेत्र में दौरे के बाद से ही चीन भड़का हुआ है। ताइवानी राष्ट्रपति का यह विदेश दौरा अमेरिका के गुआम क्षेत्र और हवाई तक था।

मार्शल लॉ को लेकर राष्ट्रपति के कार्यालय पर छापेमारी, पूर्व रक्षा मंत्री ने की जान देने की कोशिश

एजेंसी

दक्षिण कोरिया। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यूं सुक योल के कार्यालय पर बुधवार को पुलिस ने छापा मारा। छापेमारी देश में मार्शल लॉ लागू करने के मामले की जांच के तहत की गई। रिपोर्ट के मुताबिक, सियोल मेट्रोपॉलिटन पुलिस और नेशनल असेंबली पुलिस गार्ड्स के कार्यालयों पर भी छापे मारे गए हैं। इस बीच खबर है कि दक्षिण कोरिया के पूर्व रक्षा मंत्री किम योंग ह्यून ने आत्महत्या का प्रयास किया। गनीमत रही कि उन्हें बचा लिया गया और अब उनकी हालत स्थिर है।

इससे पहले मार्शल लॉ को लागू करने वाले अधिकारियों पर गाज गिरनी जारी है। इसके तहत दक्षिण कोरिया की राष्ट्रीय पुलिस एजेंसी के आयुक्त जनरल चो जी हो और पुलिस अफसर किम बॉन्ग सिक पर भी कार्रवाई की गई है। दोनों को सोल के नैमदेमुन पुलिस स्टेशन में हिरासत में रखा गया है। पुलिस के दोनों उच्चाधिकारियों के खिलाफ राजधानी सोल में स्थित संसद के बाहर बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात करने का आरोप है, जिसे सांसदों को अंदर घुसने से रोकने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। तब सांसदों का

एक बड़ा समूह राष्ट्रपति यून की तरफ से लगाए गए मार्शल लॉ को हटाने के लिए संसद में वोटिंग करना चाहते थे। हालांकि, पुलिसबल की तैनाती की वजह से उन्हें मुख्य दरवाजे से एंट्री नहीं मिली थी। बाद में सांसद खिड़कियों और अन्य रास्तों से संसद में घुसे। इस पूरे घटनाक्रम के बाद राष्ट्रपति यून ने अपने रक्षा मंत्री किम योंग-ह्यून का इस्तीफा स्वीकार कर लिया था। बाद में उन्हें मार्शल लॉ के फैसले में उनकी भूमिका के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। स्थानीय मीडिया के अनुसार, किम योंग-ह्यून पर यात्रा प्रतिबंध भी लगा दिया गया है और मामले की जांच चल रही है। वहीं रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को तीन वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को भी निलंबित कर दिया, जो इस ऑपरेशन में शामिल थे।

अमेरिकी दबाव के बाद नेपाल ने सार्वजनिक किया बीआरआई संबंधी समझौता दस्तावेज

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल के विदेश मंत्रालय ने बेल्ट एंड रोड सहयोग के लिए फ्रेमवर्क का दस्तावेज जारी किया है, जिस पर पिछले सप्ताह प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली की आधिकारिक चीन यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए थे। कल ही अमेरिका के सहायक मंत्री डोनाल्ड लू ने नेपाल-चीन के बीच हुए समझौते को सार्वजनिक करने की मांग की थी।

दोनों देशों के विदेश सचिवों ने 4 दिसंबर को बीजिंग में बीआरआई के फ्रेमवर्क दस्तावेज पर हस्ताक्षर किया था। चीन ने नेपाल द्वारा भेजे गए मसौदे से अनुदान शब्द हटाने के बाद 3 दिसंबर को ढांचे पर हस्ताक्षर नहीं हो पाया। नेपाल ने 29 नवंबर को एक मसौदा भेजा था जिसमें प्रस्ताव दिया गया था कि चीन नेपाल सरकार द्वारा आगे बढ़ने वाली परियोजनाओं पर अनुदान निवेश

प्रदान करेगा। प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा ने पहले बीआरआई सहयोग पर ढांचे के मसौदे को मंजूरी दी थी जिसमें कहा गया था कि नेपाल केवल चीनी अनुदान स्वीकार करेगा। लेकिन आज सार्वजनिक किए गए समझौते में कहीं भी सिर्फ अनुदान का उल्लेख नहीं है।

नेपाल ने 2017 में बीआरआई पर समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए थे। उसके बाद बीआरआई कार्यान्वयन योजना पर हस्ताक्षर करने की उम्मीद थी लेकिन यह लंबे समय तक नहीं हुआ। उस समय चीन के साथ हुए एमओयू को अब तक सार्वजनिक नहीं किया गया। सरकार इस दस्तावेज को भी एक हफ्ते तक सार्वजनिक नहीं किया था। नेपाल दौरे पर आए अमेरिकी विदेश मंत्रालय के दक्षिण एवं मध्य एशिया मामलों के प्रभारी डोनाल्ड लू ने सार्वजनिक रूप से चीन के साथ हुए समझौते का दस्तावेज सार्वजनिक करने की मांग की थी।

पीएम ओली की चीन यात्रा को अंतिम रूप देने के बाद बीआरआई कार्यान्वयन योजना के तौर-तरीके पर चर्चा करने के लिए एक कार्यदल का गठन किया गया था। इस कार्यदल में प्रधानमंत्री के मुख्य सलाहकार बिष्णु रिमल, आर्थिक और विकास सलाहकार युवराज खतीवड़ा, कांग्रेस के महासचिव गगन थापा और अधिवक्ता सेमंत दहल शामिल थे।

जापान में माउंट फूजी पर आरोहण हो सकता है महंगा

एजेंसी

टोक्यो। अगले साल की गर्मियों से जापान की माउंट फूजी की चढ़ाई करना महंगा हो सकता है। साथ ही कुछ नए प्रतिबंध भी लागू हो सकते हैं। समुद्र तट से 3776 मीटर की ऊंचाई पर स्थित माउंट फूजी जापान की सबसे ऊंची चोटी है।

यह पर्वत 2013 से यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट की सूची में शामिल है। यह चोटी लगभग एक लाख साल पहले शुरू हुई ज्वालामुखी गतिविधि का परिणाम है। आज माउंट फूजी और आसपास का क्षेत्र लंबी पैदल यात्रा और कैंपिंग के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है। जापान टुडे समाचार पत्र के अनुसार, माउंट फूजी की चोटी तक पहुंचने के लिए मुख्यतः चार पैदल मार्ग तय किए जाते हैं। टोक्यो से सबसे लोकप्रिय आसान मार्ग योशिदा ट्रेल है। यह यामानाशी प्रांत से शुरू होता है। अन्य तीन मार्ग, सुबाशिरी, गोटेम्बा और फुजिनोमिया ट्रेल्स हैं। यह सभी शिजुओका से शुरू होते हैं। यामानाशी प्रांत के बाद शिजुओका ने भी पैदल मार्ग पर शुल्क लगाने का प्रस्ताव किया है। कुछ समय तक योशिदा ट्रेल के लिए 1,000 येन देने पड़ते थे। हालांकि यह स्वैच्छिक था। पिछले साल मई में यामानाशी ने योशिदा ट्रेल का उपयोग करने वाले प्रति व्यक्ति के लिए 2,000 येन शुल्क अनिवार्य कर दिया था। पिछले महीने फुजिसन वर्ल्ड कल्चरल हेरिटेज काउंसिल की बैठक में चारों पैदल मार्गों के प्रवेश नियमों को मानकीकृत करने के लिए एक रूपरेखा तैयार की गई। इसके लिए पगडंडियों को छोड़कर अन्य मार्ग के लिए 3,000, 4,000 और 5,000 येन शुल्क रखने का प्रस्ताव किया गया। परिषद ने पगडंडियों से चोटी पर चढ़ने के लिए प्रति व्यक्ति 4,000 येन पर समझौता किया।

यामानाशी प्रांत ने शाम चार बजे से सुबह तीन बजे के बीच ट्रेल्स में प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा। अधिकारियों ने कहा कि यह निर्णय बुलेट क्लाइंबिंग को हतोत्साहित करने के लिए किया गया। प्रस्ताव को प्रांतीय असेंबली की बैठक में आधिकारिक तौर पर फरवरी में प्रस्तुत किए जाने की उम्मीद है। यदि मंजूरी मिल जाती है तो यह 2025 की गर्मियों से प्रभावी हो जाएगा।

मोहम्मद अल-बशीर बने सीरिया के अंतरिम प्रधानमंत्री

नई दिल्ली। सीरिया में विद्रोही आर्तकियों ने देश में तख्तापलट कर दिया है। सीरिया से राष्ट्रपति बशर अल-असद को हटाने के कुछ दिनों बाद सीरियाई विद्रोही समूह हयात तहरीर अल-शम (एचटीएस) ने देश में अंतरिम सरकार की घोषणा कर दी है। विद्रोही समूह ने मोहम्मद अल-बशीर को संक्रमणकालीन सरकार का

प्रमुख नामित किया है।

सीरिया में अराजक और अस्थिर हालात, 16 मिलियन से अधिक लोगों को मदद की जरुरत : संयुक्त राष्ट्र

एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र के मानवीय कार्यकर्ताओं ने सीरिया में स्थिति को अराजक और अस्थिर बताया और कहा कि देश में 16 मिलियन से अधिक लोगों को मदद की जरुरत है।मानवीय मामलों के समन्वय के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (ओसीएचए) ने सोमवार को कहा कि 28 नवंबर से 8 दिसंबर तक अकेले पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में 10 लाख लोग अपने घरों से विस्थापित हुए हैं।कार्यालय ने कहा कि हाल ही में विस्थापित हुए लोगों में मुख्य रूप से अलेप्पो, हामा, होम्स और इदलिब प्रांतों से महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। स्थिति बहुत अस्थिर है। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार रास्ते ब्लॉक हो गए हैं, जिससे लोगों, सामान और मानवीय सहायता की आवाजाही सीमित हो गई है।ओसीएचए के अनुसार, नागरिक संपत्तियों और कारखानों के साथ-साथ मानवीय आपूर्ति रखने वाले गोदामों की लूटपाट की कुछ खबरें मिली हैं।

कार्यालय ने कहा, चुनौतियों और अस्थिर स्थिति के बावजूद, हम और हमारे साझेदारों ने आपातकालीन मदद प्रदान करना जारी रखा है। कार्यालय ने कहा कि उत्तर-पश्चिमी सीरिया में, इदलिब और उत्तरी अलेप्पो में सभी मानवीय संगठनों ने नियमित संचालन फिर से शुरू कर दिया है और सीरिया में सहायता पहुंचाने के

लिए तुर्की की तरफ से तीन बॉर्डर क्रॉसिंग खुले हैं। ओसीएचए ने कहा, उत्तर-पूर्व में, हम हाल ही में अलेप्पो से भागे लोगों के लिए आपूर्ति प्रदान कर रहे हैं। अलेप्पो में, भोजन, स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं सहित बुनियादी सहायता प्रदान की जा रही है।÷ हालांकि, कार्यालय ने कहा कि स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति गंभीर हैं, कर्मचारियों, दवाओं और आपूर्ति की कमी के कारण प्रमुख अस्पताल सीमित क्षमता पर काम कर रहे हैं।ओसीएचए ने कहा, हमारे स्वास्थ्य साझेदार प्रभावित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करना जारी रखे हुए हैं, जिसमें ट्रॉमा केयर किट प्रदान करना भी शामिल है। उन्होंने रक्का, तबका और अल-हसाकेह में रिसेप्शन केंद्रों और स्कूलों में मेडिकल यूनिट्स भी तैनात की हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) और संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) ने होम्स में मोबाइल टीमें तैनात कीं और स्थायी क्लीनिक स्थापित किए। उत्तर-पश्चिमी सीरिया में, सभी 24 स्वास्थ्य सुविधाओं ने हाल ही में अपनी सेवाएं फिर से शुरू कर दी हैं, हालांकि अन्य अभी भी बंद हैं। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर) फिलिपो ग्रांडी ने एक बयान में कहा, ÷सीरिया शांति और युद्ध, स्थिरता और अराजकता, पुनर्निर्माण या और अधिक बर्बादी के बीच एक चौराहे पर खड़ा है।

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन एक जनवरी से होगा शुरू, 1.8 करोड़ छात्रों को होगा फायदा

एजेंसी

नई दिल्ली। सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार ए.के. सूदने घोषणा की कि देश में 1 जनवरी से वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन योजना शुरू होगी। इस योजना के तहत विश्वविद्यालयों और आईआईटी सहित राज्य-वित्तपोषित उच्च शिक्षा संस्थानों के लगभग 1.8 करोड़ छात्रों को फायदा होगा । 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' पहल के तहत 1 जनवरी से दुनिया भर की शीर्ष पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों तक पहुंच प्राप्त होगी। नेशनल मीडिया सेंटर में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए ए.के. सूद ने कहा कि ओएनओएस पहल के पहले चरण के तहत शोधकर्ताओं को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, गणित, प्रबंधन, सामाजिक विज्ञान को कवर करने वाली

13,400 से अधिक अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इस पहल के तहत, 451 राज्य स्तर के सार्वजनिक विश्वविद्यालय, 4,864 कॉलेज, राष्ट्रीय महत्व के 172 संस्थान, 6,380 उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थानों में शामिल होंगे, जिन्हें एल्सेवियर, स्प्रिंगर नेचर और विले सहित 30 प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित शीर्ष पत्रिकाओं तक पहुंच प्राप्त होगीसूद ने कहा कि इस पहल से सभी विषयों के छात्रों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के विशाल समूह तक विद्वानों की पत्रिकाओं तक पहुंच का विस्तार होगा, जिसमें टियर 2 और टियर 3 शहरों के छात्र भी शामिल हैं, जिससे देश में कोर के साथ-साथ अंतःविषय अनुसंधान को भी बढ़ावा मिलेगा। इस पहल को तीन साल की अवधि के लिए 6,000 करोड़ रुपये की लागत से एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना के रूप में शुरू किया गया है। वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई एक नई योजना है, जिसका उद्देश्य विद्वानों के शोध लेखों और जर्नल प्रकाशनों तक देश भर में पहुंच प्रदान करना है। सरकार के अनुसार इस योजना के लिए पात्र सभी लोगों को पूरी तरह डिजिटल और उपयोग में आसान प्रक्रिया मुहैया जाएगी।

क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग: आईआईटी दिल्ली देश में शीर्ष स्थान पर

एजेंसी

नई दिल्ली। दुनिया के सबसे बड़े वैश्विक उच्च शिक्षा नेटवर्क क्वाक्वेरेली साइमंड्स (क्यूएस) ने वर्ष 2025 के लिए वहनीयता के लिए क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग का तीसरा संस्करण जारी किया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली (आईआईटी, दिल्ली) ने भारत में शीर्ष स्थान हासिल किया है।क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में इस साल आईआईटी दिल्ली (वैश्विक स्तर पर 171वीं रैंक) 255 रैंक के सुधार के साथ दूसरे स्थान पर है, जबकि आईआईटी खड़गपुर 147 रैंक के सुधार के साथ वैश्विक स्तर पर 202वें स्थान पर है, जबकि आईआईटी बॉम्बे 69 रैंक के सुधार के साथ तीसरे स्थान (वैश्विक स्तर पर 234वीं रैंक) पर है । शीर्ष 10 विश्वविद्यालय इस प्रकार हैं - आईआईटी दिल्ली, आईआईटी खड़गपुर, आईआईटी बॉम्बे, आईआईटी कानपुर, आईआईटी मद्रास, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारतीय विज्ञान संस्थान, वेल्लोर प्रौद्योगिकी संस्थान, मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी - मणिपाल विश्वविद्यालय और अन्ना विश्वविद्यालय।

उच्च सदन के सभापति के खिलाफ इंडी गठबंधन ने पेश किया अविश्वास प्रस्ताव

नई दिल्ली। इंडी गठबंधन (आईएनडीआईए) ने उच्च सदन के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश किया है। इसमें उन पर सदन में पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने का आरोप लगाया गया है। हालांकि, यह प्रस्ताव बहुमत न होने के कारण गिर जाएगा लेकिन देश के इतिहास में यह पहला मौका है, जब किसी सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जा रहा है। इस प्रस्ताव पर समाजवादी पार्टी और तृणमूल कांग्रेस समेत 71 सांसदों ने हस्ताक्षर किए हैं। इसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 67बी के तहत पेश किया गया है। इसके तहत 50 सांसदों का अविश्वास प्रस्ताव पर एक राय होना अनिवार्य है। विपक्षी दल लगातार सभापति जगदीप धनखड़ पर राज्यसभा की कार्यवाही को नियंत्रित करने के तौर-तरीकों पर अपनी नाराजगी दर्ज कराते आए हैं। उनका आरोप है कि सभापति संबोधन में लगातार व्यवधान, महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपर्याप्त बहस और विवादास्पद चर्चाओं के दौरान सत्ता पक्ष को लेकर उनके साथ पक्षपात करते हैं। इस मुद्दे पर कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, समाजवादी पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय विकासात्मक समावेशी गठबंधन-आईएनडीआईए ब्लाक के घटक दल भी लगातार सदन में पक्षपातपूर्ण रवैये का आरोप लगाते रहे हैं। इसको लेकर सदन में लगातार गतिरोध बना हुआ है। विपक्ष ने 9 दिसंबर को हुए व्यवधान के बाद अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए गठबंधन दलों के नेताओं के साथ बात की और देर शाम तक तय हो गया कि गठबंधन अविश्वास प्रस्ताव लेकर आएगा।

गगनयान मिशन के लिए इसरो ने नौसेना के साथ किए 'वेल डेक' रिकवरी ऑपरेशन

नई दिल्ली। गगनयान मिशन के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने भारतीय नौसेना के साथ 'वेल डेक' रिकवरी ऑपरेशन ट्रायल किये हैं। क्रू मॉड्यूल के वेल डेक रिकवरी ट्रायल पूर्वी नौसेना कमान में विशाखापत्तनम के तट पर वेल डेक शिप का उपयोग करके किए गए। गगनयान के लिए चल रही तैयारियों के तहत अभी और रिकवरी ट्रायल होंगे। इस ट्रायल में रिकवरी प्रक्रियाओं को पूर्ण करने पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो मिशन के सुरक्षा प्रोटोकॉल का महत्वपूर्ण हिस्सा है।भारत का लक्ष्य 2025 तक 400 किमी. ऊपर अंतरिक्ष यात्री भेजने का है। इसरो के 'मिशन गगनयान' की क्रू रिकवरी टीम के पहले बैच को कोच्चि में नौसेना की जल जीवन रक्षा प्रशिक्षण सुविधा (डब्ल्यूएसटीएफ) में नौसेना के गोताखोरों और समुद्री कमांडो की एक टीम ने विभिन्न समुद्री परिस्थितियों में प्रशिक्षित किया है। इसरो के अनुसार गगनयान परियोजना में तीन सदस्यों के एक दल को तीन दिवसीय मिशन के लिए 400 किमी. की कक्षा में लॉन्च करके और भारतीय समुद्री जल में उतारा जाएगा। इसके बाद उन्हें सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाकर मानव अंतरिक्ष उड़ान क्षमता का प्रदर्शन करने की परिकल्पना की गई है। यह प्रशिक्षित टीम इसरो के 'मिशन गगनयान' की लॉन्चिंग टीम में शामिल होगी।

मप्र के मुख्यमंत्री ने की प्रधानमंत्री से मुलाकात, ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के शुभारंभ के लिए किया आमंत्रित

नई दिल्ली। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संसद भवन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। इस मुलाकात उन्होंने प्रदेश में चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। इसके साथ ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 के शुभारंभ और केन बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के भूमिपूजन के लिए प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया। मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पत्रकारों को बताया कि मध्यप्रदेश सरकार अपने कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने पर मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान की शुरुआत करने जा रही है, जो 11 दिसंबर 2024 से 26 जनवरी 2025 तक चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य युवा, नारी, किसान और गरीब कल्याण की चिन्हित योजनाओं के माध्यम से शत प्रतिशत सैचुरेशन का लक्ष्य प्राप्त करना है।

सेवा भारती का सेवा सम्मान कार्यक्रम 14 को, माता झंडेवाला मंदिर को दिया जाएगा सेवा रत्न

एजेंसी

नई दिल्ली। सेवा भारती दिल्ली प्रांत पिछले 3 वर्षों की भांति इस वर्ष भी सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले समाज से जुड़े संगठनों और व्यक्तियों को सम्मानित करने जा रही है। इस वर्ष दिल्ली के माता झंडेवाला मंदिर को सेवा रत्न से सम्मानित किया जाएगा। यह जानकारी भाई वीर सिंह मार्ग स्थित सेवा भारती कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में दिल्ली प्रांत अध्यक्ष रमेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष संजय अग्रवाल, सेवा सम्मान स्वागत समिति के अध्यक्ष अशोक और सेवा भारती दिल्ली के महामंत्री सुशील गुप्ता ने एक संयुक्त प्रेस वार्ता में दी।

इस दौरान सेवा भारती की ओर से जारी प्रकल्पों की जानकारी देते हुए बताया गया कि सेवा भारती 14 दिसंबर को दिल्ली के अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में 'सेवा सम्मान' कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इस कार्यक्रम में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह मुख्य अतिथि होंगे। इसके अलावा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह आलोक कुमार मुख्य वक्ता के तौर पर शामिल होंगे।

उन्होंने बताया कि पिछले तीन वर्षों से लगातार सेवा सम्मान प्रदान किए जा रहे हैं। अब तक 50 लोगों को इससे सम्मानित किया गया है, जिनमें दिवंगत उद्योगपति रतन टाटा भी रहे हैं। सेवा भारती (दिल्ली) के अध्यक्ष रमेश अग्रवाल ने कहा कि सेवा भारती का मकसद साधन संपन्न लोगों को जीवन के असल उद्देश्य सेवा कार्यों से जोड़ना है। सेवा सम्मान इसी दिशा में एक प्रयास है। इसकी एक चयन प्रक्रिया होती है और वंचित तथा अभावग्रस्त लोगों के लिए काम करने वाले समाज के लोगों को इसके लिए चुना जाता है।

अरविंद केजरीवाल को जल्द ही सरकारी आवास आवंटित किया जाएगा: मनोहर लाल

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल को जल्द ही एक सरकारी आवास आवंटित किया जाएगा, जिसके वह एक राष्ट्रीय पार्टी के प्रमुख के रूप में हकदार हैं। एक संवाददाता सम्मेलन में एक सवाल का जवाब देते हुए खट्टर ने कहा कि एक राष्ट्रीय पार्टी के अध्यक्ष के रूप में केजरीवाल टाइप 7 बंगले के हकदार हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में टाइप सात बंगले उपलब्ध नही हैं। वर्तमान में हमारे पास केवल टाइप 5 और 6 बंगले उपलब्ध हैं। केजरीवाल को टाइप सात का बंगला उपलब्ध होते ही आवंटित कर दिया जाएगा। गौरतलब है कि आम आदमी पार्टी केजरीवाल के लिए केंद्र सरकार से आवास की मांग कर रही है। पार्टी का कहना है कि केजरीवाल एक

राष्ट्रीय पार्टी के संयोजक होने के नाते इसके हकदार हैं। सितंबर में दिल्ली प्रमुख के पद से इस्तीफा देने के बाद अरविंद केजरीवाल अक्टूबर में आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद अशोक मित्तल के आधिकारिक आवास 5 फिरोजशाह रोड पर स्थानांतरित हो गए।

धनखड़ के खिलाफ विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव पर बोले किरेन रिजिजू, एनडीए के पास बहुमत है

एजेंसी

नई दिल्ली। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को खारिज करते हुए केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि सत्तारूढ़ एनडीए को उच्च सदन में स्पष्ट बहुमत प्राप्त है और उन्होंने धनखड़ के नेतृत्व पर विश्वास व्यक्त किया। पत्रकारों से बातचीत में किरेन रिजिजू ने कहा कि विपक्षी दलों के सदस्य लोकसभा स्पीकर और राज्यसभा के सभापति की गरिमा को गिराने का काम करते आए हैं। कुछ दिन पहले विपक्ष ने आसन पर सवाल उठाए हैं। लोकसभा के स्पीकर और राज्यसभा के सभापति हम लोगों के गाइड होते हैं। सदन में बहुत ही पवित्र स्थान के रूप में आसन के निर्णय का पालन करना होता है। यह व्यवस्था बनाई गई है। इसके बावजूद कांग्रेस और उनके

सहयोगी दलों ने लगातार आसन का अपमान किया है और आसन के निर्देशों को भी नहीं मानते हुए सदन में बहुत गलत व्यवहार किया है। उन्होंने कहा कि उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ एक आम गरीब किसान परिवार से आते हैं। वह जाट समुदाय से पहली बार उपराष्ट्रपति बने हैं। वह सदन में और बाहर भी गरीबों और किसानों का हमेशा पक्ष रखते हैं। वह बहुत विद्वान और नेक व्यक्ति हैं। हम लोग उन पर बहुत फख्र महसूस करते हैं। उन्होंने कहा कि धनखड़ के खिलाफ दिए गए नोटिस पर हस्ताक्षर करने वाले 60 सांसदों के इस कृत्य की निंदा करता हूं। किरेन रिजिजू ने कहा कि जब से देश के सामने जार्ज सोरोस और कांग्रेस पार्टी के आपसी तालमेल के जरिये भारत के विरोध में काम करने की गतिविधि सामने आई है, तब से कांग्रेस पार्टी घबराई हुई है। कांग्रेस और उनके कुछ साथी तिलमिलाए हुए हैं। हम चाहते हैं कि देश के सामने कांग्रेस नेतृत्व इस देश विरोधी कृत्य के लिए माफी मांगे। संसद में जो भी चुने हुए जन प्रतिनिधि हैं और मुख्य राजनीतिक दल हैं, उनमें कांग्रेस पार्टी ने लगभग 60 साल तक इस देश पर शासन किया है। अविश्वास प्रस्ताव इंडी गठबंधन के 60 सांसदों द्वारा दायर किया गया, जिनमें कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, राजद, सीपीआई, सीपीआई-एम, जेएमएम, आआपा, डीएमके और समाजवादी पार्टी के सदस्य शामिल हैं।

शहीद दिवस असम आंदोलन के लिए खुद को समर्पित करने वाले बलिदानियों को याद करने का अवसर : पीएम मोदी

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि शहीद दिवस उन लोगों के असाधारण साहस और बलिदान को याद करने का अवसर है, जिन्होंने असम आंदोलन के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, शहीद दिवस उन लोगों के असाधारण साहस और बलिदान को याद करने का अवसर है, जिन्होंने असम आंदोलन के लिए खुद को समर्पित कर दिया। उनके अटूट संकल्प और निस्वार्थ प्रयासों ने असम की अनूठी संस्कृति और पहचान को संरक्षित करने में मदद की। उनकी वीरता हम सभी को एक विकसित असम की दिशा में काम करना जारी रखने के लिए प्रेरित करती है। वहीं एक दूसरे एक्स पोस्ट में प्रधानमंत्री मोदी ने सी. राजगोपालाचारी को उनकी जयंती पर याद किया। उन्होंने एक्स पोस्ट पर लिखा, सी. राजगोपालाचारी को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके समृद्ध योगदान और भारत की प्रगति को आगे बढ़ाने के प्रयासों के लिए याद किया जाता है। वह एक

बहुमुखी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने शासन, साहित्य और सामाजिक सशक्तिकरण पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

राजाजी के सिद्धांत हमें यह सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित करते हैं कि प्रत्येक भारतीय सम्मान और समृद्धि का जीवन जिए। वहीं केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने असम आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति देने वाले लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने पोस्ट में लिखा, असम आंदोलन असमिया पहचान की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण संघर्ष था और भारत के आधुनिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। आंदोलन के पहले शहीद खड़गेश्वर तालुकदार के शहादत दिवस पर मैं सभी शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनका बलिदान हमारी प्रेरणा है।

उपराष्ट्रपति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव, कांग्रेस का संवैधानिक संस्थाओं पर सुनियोजित हमला : सुधांशु त्रिवेदी

एजेंसी

नई दिल्ली। संसद में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच गतिरोध जारी है। इस सबके बीच विपक्ष अब राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर आया है। इस प्रस्ताव को विपक्षी दलों ने 1 बजकर 37 मिनट पर राज्यसभा के सेक्रेटरी जनरल को सौंपा। इस अविश्वास प्रस्ताव पर 60 सदस्यों के हस्ताक्षर हैं। इस पर भारतीय जनता पार्टी नेता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि कांग्रेस ने सोरोस फाउंडेशन के इशारे पर एक के बाद एक संवैधानिक संस्थाओं पर सुनियोजित हमला करना शुरू किया है। उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, राज्यसभा में उपराष्ट्रपति के खिलाफ विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव के पीछे मुख्य कारण इंडिया गठबंधन में चल रही प्रतिस्पर्धा है। जहां एक पार्टी दूसरे से मुद्दे छीनने की कोशिश कर रही है। यह प्रतिस्पर्धा खासकर कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी के प्रति अविश्वास के रूप में प्रकट हुई है। इसे छिपाने के लिए कांग्रेस का यह प्रयास है, जिसमें जाने-अनजाने में इंडिया गठबंधन के दल शामिल हो रहे हैं। यह तो तात्कालिक कारण था, लेकिन यदि

दीर्घकालिक दृष्टि से देखें तो यह एक लंबी प्रक्रिया का हिस्सा है। हमारी पार्टी ने लगातार आरोप लगाया है कि विदेशी संस्थाएं जैसे ओसीसीआरपी (ऑर्गनाइज्ड क्राइम एंड करप्शन रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट) और सोरोस फाउंडेशन, पिछले सात-आठ वर्षों से भारत में काम कर रही है। इन संस्थाओं ने भारत की हर व्यवस्था पर हमला किया है। सबसे पहले इन्होंने एयरफोर्स को निशाना बनाया, राफेल मामले में। फिर सेना के खिलाफ अविश्वास पैदा करने की कोशिश की, खासकर सर्जिकल स्ट्राइक के मुद्दे पर। इसके बाद इन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाने वाली सरकारी कंपनियों पर हमला करना शुरू किया, जैसे एलआईसी और एसबीआई पर, जो बाद में गलत साबित हुआ। इसके बाद इनका हमला हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स पर हुआ, यह भी गलत निकला। उन्होंने आगे कहा, ÷इसके बाद, इन्होंने चुनाव आयोग और ईवीएम पर हमला किया और अब संवैधानिक पदों पर भी हमला करने की कोशिश की है। अगर हम पिछले 7-8 वर्षों का इतिहास देखें, तो यह देखा जा सकता है कि हर एक हमले के बाद, भारत की व्यवस्थाओं की गरिमा को कम करने के लिए एक सुनियोजित अभियान चलाया गया है। इसलिए, हम यह कह सकते हैं।

केंद्र के दिए गए 43 करोड़ रुपये का दिल्ली सरकार उपयोग करने में रही विफल

नई दिल्ली। राजधानी नई दिल्ली का पर्यावरण सुधारने में दिल्ली की सरकार बीते चार वर्षों में नाकाम साबित हुई है। इतना ही नहीं केंद्र सरकार के दिए गए 43 करोड़ रुपये का दिल्ली सरकार उपयोग करने में भी विफल रही है। चांदनी चौक के सांसद प्रवीन खंडेलवाल के पूछे एक सवाल के लिखित जवाब में केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने लोकसभा में यह जानकारी दी। खंडेलवाल ने जारी एक बयान में कहा कि केंद्रीय मंत्री ने सदन को बताया कि पिछले चार वित्त वर्षों के दौरान दिल्ली में स्वच्छ हवा के लिए केंद्र सरकार द्वारा जारी 42.69 करोड़ रुपये में से सिर्फ 32 फीसदी राशि का उपयोग दिल्ली सरकार तथा अन्य सरकारी निकायों द्वारा किया गया है।

NAME CHANGE
I, hitherto known as AJIT KUMAR CHAUHAN ALIAS ANIL S/O RAJENDER SINGH residing at GRAM-GHAUSGANJ, POST - PATIYALI, TEHSIL - PATIYALI, DISTT- KASGANJ, U.P. 207243, have changed my name and shall hereafter be known as AJIT KUMAR CHAUHAN.

सार्वजनिक सूचना
यह सूचित किया जाता है कि कुकरेजा हॉस्पिटल एण्ड हार्ट सेंटर, सी–1, विशाल एन्कलेव, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–27 संगठन के दस्तावेज अवधारण नीति के अंतर्गत सन् 2019 के मरीजो के मेडीकल रिकार्ड नष्ट करने जा रहा है। यदि इस वर्ष का कोई मरीज अपने रिकार्ड की कापी लेना चाहता है तो 011–45675000 पर फोन करें या 30 दिन के अंदर हॉस्पिटल मे मिलें।

NAME CHANGE
I, Sunaina Dahiya W/o Sumit Dahiya R/o D-68, Ishwar Colony, Arjun Park, Najafgarh, South West Delhi -110043, I declare My Name Written as Sunaina Devi in 10th, 12th, Class, and all other educational documents, and in my Aadhar card My Name Written as Sunaina Dahiya, that Sunaina Dahiya and Sunaina Devi Both is same and one Name person.

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता हैं कि मेरे मुवक्किल श्री ओम पुत्र श्री सुबे सिहं, एंव श्रीमती सोनू पत्नी श्री ओम, दोनों निवासी मकान न0–13, न्यू कॉलोनी पार्ट–2, टटेसर गाँव, नोर्थ वेस्ट दिल्ली, दिल्ली–110081, ने अपने बेटे साहिल पुत्र श्री ओम निवासी– मकान न0–13, न्यू कॉलोनी पार्ट–2, टटेसर गॉव, नोर्थ वेस्ट दिल्ली, दिल्ली–110081 को उसके नियन्त्रण में ना होने, व उसके साथ अभद्र व्यवहार करने और लड़ाई–झगडा करने के कारण उसे अपनी चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर रहे हैं और उससे अपने सारे सम्बन्ध विच्छेद कर रहे हैं। भविष्य में कोई व्यक्ति साहिल पुत्र श्री ओम के साथ किसी प्रकार का लेन–देन व व्यवहार रखता है तो उसका जिम्मेदार वह स्वंय होगा, मेरे मुवक्किल व उसके परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।
J.P.SINGH ADVOCATES
CH. NO.534 DWARKA COURT COMPLEX LAWYERS CHAMBERS BLOCK SECTOR-10, DWARKA NEW DELHI-110075.

PUBLIC NOTICE
It is notified that my clients Mr. Prem Lal Khadotra S/o Bua Ditta and Smt. Prabha Khadotra W/o Mr. Prem Lal Khadotra R/o 11. No 63, Raju Extn, Old Palam Road, Kakroia, South West Delhi, Delhi-110078 has disowned/debarred their Son Mr. Harish Khadotra and his wife Smt. Sakshi Panwar from all their moveable and immovable properties, and relations due to their out of control conduct, misbehavior and other things related to humanity as well as others social activities, Loan, unparliament languages, out of control, not listening to advice and they are not in the instances of my clients. My clients shall not be responsible for their any dealing, transaction and illegal acts done by their and whomsoever acts with them shall be their own risk and cost and my client shall not be responsible for any of their acts in future.
RAVI PRAKASH MISHRA Advocate
Chamber No. 402, Dwarka District Court Sector 10, Dwarka, New Delhi-110075

NAME CHANGE
It is for general information that I, NARENDER KUMAR S/O SH. BALVEER SINGH R/O R-3/62, NAWADA HOUSING COMPLEX, UTTAM NAGAR, NEW DELHI-110059 declare that name of my minor son has been wrongly written as GARVIT KUMAR in my minor son namely GARVIT NARNOLIA aged 14 year in his school record. The actual name of my minor son is GARVIT NARNOLIA which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I SHANE ALAM ANSARI S/O ABDUL MANNAN ANSARI R/O D-544, J.J Colony SHAKUR PUR , I-BLOCK, NORTH WEST DELHI, DELHI-110034, declare that name of mine and my wife has been wrongly written as SHANE ALAM and SHABANA ANSARI in my minor son namely AAMAN ANSARI aged 13 years in his school record. The actual name of mine and my wife are SHANE ALAM ANSARI and SHABANA PERVEEN respectively which may be amended accordingly

NAME CHANGE
I, hitherto known as VIJAYKANT S/o SATYVEER residing at Village Gothra, Gothra, PO: Gothra, Dist. Baghpat, Uttar Pradesh - 250101 have changed my name and shall hereafter be known as VIJAYANT.

NAME CHANGE
I, RUKAIYA W/O ALIM IKRAM R/o H NO-74/1 RAMESH BUILDING BHOLA NATH NAGAR SHAHDARA DELHI-110032 HAVE CHANGED MY NAME FROM RIKAIYA TO RUKAIYA FOR ALL FUTURE PURPOSES.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I MAYARAM KUSHWAH S/O SHIV CHARAN LAL R/O C-102, Raj Pur Khurd, South Delhi, - Delhi-110068, declare that name of mine and my father has been wrongly written as Maya Ram Kushwara in my Adhar card no 9228 9725 0097 and voting card no CKD1149285,The actual name of mine and my father are MAYARAM KUSHWAH and SHIV CHARAN LAL,which may be amended accordingly,.

NAME CHANGE
I, SALMAN KHAN S/o SIRAJUDDIN, R/o House No. B-93, Block - B, Mange Ram Park, Ph – 2, Budh Vihar, North West Delhi, Delhi - 110086, have changed the name of my minor Son's FARHAN SAIFI alias ARHAB SAIFI, aged 3 years and he shall hereafter be known as ARHAB SAIFI.

NAME CHANGE
I, KAWALJIT KAUR W/O GOVINDER SINGH R/O A-2/52, HASTSAL ROAD, NEAR GURUDWARA, UTTAM NAGAR, DELHI-110059, I have changed my name from KAWALJEET KAUR TO KAWALJIT KAUR for all future purpose.

NAME CHANGE
I, SAHID urf MOHAMMAD SAJID HUSAIN / MOHAMMAD SAJID S/O NOORUDDIN residence of HOUSE NO-260, FIRST FLOOR, SECTOR-39, GURGAON, HARYANA-122001 have changed my name to MOHAMMAD SAJID HUSAIN for all future purpose.

NAME CHANGE
I, JC-472165H, Rank-SUB Name-DEEPAK SINGH Father of VAISHNAVI R/o BHADOURIYA AMLTASH COLONY, PO-GOLA KA MANDIR, DIST-GWALIOR, MADHYA PRADESH-474005 have changed my daughter's name from VAISHNAVI to VASHNAVI BHADOURIYA for all future purposes vide Affidavit dated 11/12/2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, Nirav Ramanbhai Patel S/o Ramanbhai Jesangbhai Patel R/o A-70, Kendriya Vihar, Sector-56, Gurgaon-122011, Haryana Have Changed My Name To Niravbhai Ramanbhai Patel For All Future Purpose

NAME CHANGE
I, SATYAPAL SINGH Father of No-3008386H Rank-L/HAV Name-SUSHIL KUMAR R/o VPO-BADHEDI MAJBATA, TEH-DEOBAND, DIST-SAHARANPUR, UP-247554, have changed my name from SATYAPAL SINGH to SATPAL SINGH for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 12/09/1960 instead of my correct date of birth as 01/01/1959 vide Affidavit dated 11/12/2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
It is for general information that I, DINESH KUMAR S/o KISHAN LAL, R/o 2523, Bagichi Raghu Nath, Sadar Thana, Sadar Bazar, Delhi G.P.O, North Delhi, Delhi-110006, declare that name of mine has been wrongly written as DINESH in my SC Cast Certificate No.-SC/01/12/6786/9/9/2008/24833, The actual name of mine is DINESH KUMAR, respectively which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, SHAMBU LINGAPPA HELAVI Father of SANDEEP residing at VILL-HATALAGERI, PO-HATALAGERI, TEHSIL-GADAG, DISTT-GADAG, KARNATAKA-582115 have changed my minor son's name from SANDEEP to SANDEEP S HELAVI for all future purposes vide Affidavit dated 05/12/2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, RANJANA DEVI Wife of No-15202945Y Rank-HAV Name-MANENDRA KUMAR Presently residing at 5, ATHARAHAANSHIK, ATTARAHA, KUSHINAGAR, UTTAR PRADESH-274301 have changed my name from RANJANA DEVI to RANJANI DEVI for all future purposes vide Affidavit dated 11/12/2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SAVITRI W/O JAI PAL residence of H NO-1, TYPE-II, SUNLIGHT COLONY, DELHI-110014 have changed my name to SAVITRI DEVI for all future purpose

NAME CHANGE
I, JAI PAL S/O HARISH CHAND residence of H NO-1, TYPE-II, SUNLIGHT COLONY, DELHI-110014 have changed my name to JAI PAL SINGH for all future purpose.

NAME CHANGE
I, LADAN Wife of JC-471969L, Rank-HONY LT Name-SHARWAN LAL JAT residing at VILL-THAL, PO-THAL, TEHSIL-KISHANGARH, DISTT-AJMER, RAJASTHAN-305801, have changed my name from LADAN to LADAN DEVI for all future purposes vide Affidavit dated 11/12/2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I Shilpi Dhiman D/O Bharat Bhushan Taneja W/O Sandeep Dhiman R/O - Property no 228, Second Floor, Pocket-40, Chittranjan Park, South Delhi-110019 have changed my name to Shilpi Taneja for all future purposes

NAME CHANGE
I Lata Chellani Motwani D/O Ramesh Chellani W/O Tarun Kumar Motwani R/O - K802 Tower K, Logix Blossom Country, Sector 137 Noida, Gautam Buddha Nagar - UP- 201305 have changed my name to Lata Chellani for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Tejal Nirav Patel W/o Niravbhai Ramanbhai Patel R/o A-70, Kendriya Vihar, Sector-56, Gurgaon-122011, Haryana Have Changed My Name To Tejalben Niravbhai Patel For All Future Purpose

NAME CHANGE
I, Niravbhai Ramanbhai Patel S/o Ramanbhai Jesangbhai Patel R/o A-70, Kendriya Vihar, Sector-56, Gurgaon-122011, Haryana Have Changed My Minor Daughter Name Hiyaa Nirav Patel to Hiyaa Niravbhai Patel For All Future Purpose.

NAME CHANGE
I, Nilesh Shah S/o Prem Chand Shah R/o UTE-221,Tower-E, DLF Ultima, Sector-81, Gurgaon Haryana-122004, Have Changed My Minor Son Name Naivedya to Naivedya Shah For All Future Purpose

NAME CHANGE
I, MARUTI Father of No-16123285F Rank-NK Name-VIKAS CHAVAN Presently residing at VILL-KARAJAGE, PO-BAD, TEHSIL-HUKKERI, DIST-BELGAUM, KARNATAKA-591225, have changed my name from MARUTI to MARUTI CHAVAN for all future purposes vide Affidavit dated 11/12/2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, HEMASHREE Mother of No-16123285F Rank-NK Name-VIKAS CHAVAN Presently residing at VILL-KARAJAGE, PO-BAD, TEHSIL-HUKKERI, DIST-BELGAUM, KARNATAKA-591225, have changed my name from HEMASHREE to HEMA MARUTI CHAVAN for all future purposes vide Affidavit dated 11/12/2024 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
My Client Dinesh Kumar Chandhok,S/O Late Dev Raj Chandhok R/O D-205, Upper Ground Floor, Anand Vihar, Delhi-110092, has severed all relations and disowned his son RAVI CHANDHOK & his wife SMT. SHRUTIKA CHANDHOK, from his all movable and immovable properties. Due to their misconduct /misbehavior towards my client. My client shall not be responsible for their any acts/deed in future.If any one deals with them, deals at their own risk.
JITEN SHARMA ADVOCATE
D-503,FAKRUDDIN APARTMENT
Advocate Plot No.18, Sector-10, Dwarka

NAME CHANGE
I, No. 15195492N, Rank: NK, Name: MUTTHU M, Father of M ANANYA residing at 308, ANNA NAGAR STREET, SENGUNAM, POLUR, TIRUVANNAMALAI, TAMIL NADU-606803 have changed my minor daughter's name from M ANANYA to ANANYA M for all future purposes vide Affidavit dated 11/12/2024 Before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, JC-781982F, Rank: NB SUB, Name: D SIVAJI, Father of ADHOORIKA residing at 3/303, VPO-PARALACHI, TEHSIL-ARUPPUKKOTTAI, DISTT-VIRUDHUNAGAR, TAMIL NADU-626114 have changed my minor daughter's name from ADHOORIKA to S.ADHOORIKA for all future purposes vide Affidavit dated 11/12/2024 Before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, KIRAN BALJITSINGH BOTH W/O ANMOL GARG residence of HOUSE NO-205, JAGRITI ENCLAVE, ANAND VIHAR, SHAHDARA, DELHI-110092 have changed my name to KIRAN BALJIT SINGH for all future purpose.

(BEDAKHAL)
That I, ZULQUARNAIN SIDDIQUE S/O MOHAMMAD ABDULLAH declare as under that I disowned my Son AADIL from my all movable/immovable/Patrick properties/assets for his wrong behavior. I shall not be held responsible for any kind of acts done by him in money or transactions and police case and criminal activity illegal/legal and property purposes in the future. That he debarred from entering my premises situated at H NO-R-255/1, FLAT NO-103, FRONT SIDE, GALI NO-5, JOGA BAI EXTN, JAMIA NAGAR, DELHI-110025.

NAME CHANGE
I, PUJA ROY is legally spouse of No. 4588429W Rank- L/NK Name-MANGAL KUMAR, R/o VILL-AKAHA, PO-KHAJRAITHA, TEH-GOGRI, DIST-KHAGARIA (BIHAR)-853203, have changed my name from PUJA ROY to PUJA KUMARI. Vide affidavit dated 11/12/2024 executed before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, GARIMA, D/o. JAG MOHAN RUDHRA, R/o. BE-5A, DDA FLATS, MUNIRKA, NEW DELHI-110067, have changed my name from GARIMA to GARIMA RUDHRA for all future purpose.

PUBLIC NOTICE
This is to inform the general public that **Mr. Bharat Bhushan Gulati** has got Quarter bearing No. 29/69-70, area measuring 66 Sq. yds. out of 200 Sq. Yds., situated at West Patel Nagar, New Delhi after death of Mrs. Tarawanti. Mrs. Taranwanti got the above the said property on the basis of Partition Deed dated 14.07.1998 doc. no. 4255 and Conveyance Deed dated 10.06.1998 regd. as doc. No. 3850 executed by POI through L& DO in favour of Mr. Puran Chand, Mr. Tek Chand and Mrs. Taran Wanti in respect of the said Property. Later, Tarawanti Died on 07.01.2001 and as per SMC shared with us, she was survived by Bharat Bhushan Gulati.
Mr. Bharat Bhushan Gulati intends to transfer the ownership of Entire Second Floor without roof rights, of aforementioned Property by way of Sale Deed to **Mr. Abhinav Rajput and Mrs. Ritika Rajput**. Subsequently, **Mr. Abhinav Rajput and Mrs. Ritika Rajput** are the process of mortgaging the said property with **Aditya Birla Housing Finance Limited.** Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 15 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 15-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.
If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 15-days period by contacting
Law Veritas: North
(Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301;
Landline(s): +910120-3101683,
e-mail: accounts@lvnorth.in

अनुशासन एवं चरित्र निर्माण में एनसीसी की अहम भूमिका : प्रो. बीआर कम्बोज

एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की एनसीसी कैडेट्स ने तृतीय हरियाणा कन्या बटालियन द्वारा हिंदू पब्लिक स्कूल चौधरीवास में आयोजित किए गए एनसीसी प्रशिक्षण शिविर में बेहतर खेल का प्रदर्शन करने पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बधाई दी। हकृवि के विद्यार्थियों ने सदैव शिक्षा, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन करके विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। उन्होंने कहा कि अनुशासन एवं चरित्र निर्माण में एनसीसी की अहम भूमिका है।महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने बताया कि शिविर में छात्राओं ने वॉलीबॉल, रस्साकशी, पोस्टर मेकिंग सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। ड्रिल प्रतियोगिता में महाविद्यालय की टीम द्वितीय स्थान पर रही जबकि कैडेट्स सृष्टि व सार्जेंट गरिमा ने भाषण व निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिविर में सीनियर अंडर ऑफिसर दिव्या शर्मा को बेस्ट कैडेट्स के लिए सम्मानित किया गया। मंच संचालन मुस्कान ने किया। महाविद्यालय की छात्राओं ने रक्तदान शिविर में भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। एनसीसी अधिकारी डॉ. उर्वशी नांदल ने बताया की छात्राओं ने प्रशिक्षण शिविर में अपनी प्रतिभा का श्रेष्ठ प्रदर्शन अनुशासनात्मक ढंग के साथ पूर्ण किया।

पुलिस ने प्रदर्शनी लगाकर लोगों को जागरुक किया

सोनीपत। सोनीपत पुलिस द्वारा सुभाष स्टेडियम, सोनीपत में स्टॉल प्रदर्शनी लगाकर आमजन को विभिन्न प्रकार की सुरक्षा साइबर सुरक्षा, ट्रेफिक सुरक्षा, नशा मुक्ति व भारतीय न्याय सहिंता 2023 के बारे में जानकारी दी। पुलिस लाइन सोनीपत में नियुक्त उप निरीक्षक कुलदीप ने बताया कि पुलिस आयुक्त सोनीपत सतेंदर गुप्ता के निर्देश पर गीता महोत्सव के अवसर पर स्टाल लगाई गई है इसमें लोगों को जागरुक किया जा रहा है। वित्तीय धोखाधड़ी, नौकरी देने सम्बंधी धोखाधड़ी, सोशल मिडिया प्लेटफ़ॉर्म का सुरक्षित उपयोग, साइबर स्टाकिंग, साइबर बुकिंग, साइबर उत्पीड़न, साइबर हेल्पलाइन नम्बर 1930 आदि साइबर अपराधो की रोकथाम महत्वपूर्ण जानकारी दी। वाहन पर सवार सभी व्यक्तियों को सीट बेल्ट या हेलमेट पहनना चाहिए, जेब्रा क्रासिंग से ही पैदल क्रास करें, शराब पीकर गाडी न चलाएं, चौराहों पर गति कम रखें आदि। खुद को शिक्षित रखें, तनाव से निपटने के स्वस्थ तरीके सीखें, परिवार के साथ घनिष्ट सबंध विकसित रखें, एक स्वस्थ जीवन शैली विकसित करें। सजा में सामाजिक सेवा का प्रावधान, मॉब लीचिंग में म्र्त्युदुंड का प्रावधान, महिलाओं एवं बच्चों के विरुद्ध अपराध में सख्ती, संगठित अपराध व आतंकवाद को परिभाषित किया गया, बच्चों के माध्यम से अपराध करवाने पर सजा में बढोत्तरी की जानकारी दी गई।

'बीमा सखी योजना'से लाभांवित सशक्त होंगी महिलाएं : अशोक सैनी

हिसार। भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक सैनी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा हरियाणा के पानीपत से 'बीमा सखी योजना' की शुरूआत करने का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि इस योजना से महिलाएं लाभांवित व सशक्त होगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने इस कार्यक्रम में प्रदेश की नायब सिंह सैनी सरकार के कार्यों की भी प्रशंसा की है, जो यह दर्शाता है कि प्रदेश सरकार हर वर्ग के हितों को ध्यान में रखकर प्रदेश के विकास को गति दे रही है। जिला अध्यक्ष अशोक सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पानीपत में 'बीमा सखी योजना' का शुभारंभ करके महिला वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। इससे पहले प्रधानमंत्री ने पानीपत में ही 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का नारा दिया था, जिसके सकारात्मक परिणाम हमारे सामने है। उन्होंने कहा कि 'बीमा सखी योजना' के लागू होने से 18 से 70 वर्ष की महिलाएं लाभांवित होगी। योजना की शुरूआत करते ही प्रधानमंत्री ने 'बीमा सखी' बनी महिलाओं को नियुक्ति पत्र बांट दिए जो साबित करता है कि भाजपा सरकार के मुखिया जो कहते हैं, उसे लागू करने में देर नहीं लगाते।

हरियाणा में एचएसजीपीसी के चुनाव का कार्यक्रम घोषित, 19 जनवरी को ईवीएम से होगा मतदान

चंडीगढ़। हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी (एचएसजीपीसी) के चुनाव का कार्यक्रम घोषित कर दिया गया है। कुल 40 वार्डों के लिए इच्छुक उम्मीदवार 20 से 28 दिसंबर तक नामांकन कर सकेंगे। मतदान 19 जनवरी को इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) से कराया जाएगा। इस चुनाव में न्यूनतम 25 साल तक के अमृतधारी सिख ही लड़ पाएंगे गुरुद्वारा चुनाव के आयुक्त सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति एचएस भल्ला ने एचएसजीपीसी चुनाव का कार्यक्रम जारी कर दिया है। वर्ष 2014 से समिति का संचालन सरकार के मनोनीत सदस्य करते रहे हैं। आयोग के चुनाव कार्यक्रम के अनुसार प्रत्याशियों को चुनाव चिह्न के लिए गुरुद्वारा चुनाव आयोग के निर्धारित प्रतीक चिह्नों में से तीन को वरीयता क्रम में भरना होगा। संबंधित वार्ड की मतदाता सूची में शामिल अमृतधारी सिख ही चुनाव लड़ सकेंगे। गुरुद्वारे का वेतन भोगी सेवक, अपनी दाढ़ी या केश को काटने या साफ करने वाले, शराब या नशीले पदार्थों तथा तथा हलाल मांस का सेवन करने वाले, मानसिक रूप से अस्वस्थ, दिवालिया घोषित और नैतिक अधमता से संबंधित किसी अपराध में दोषी व्यक्ति चुनाव नहीं लड़ सकेगा।

सफाई कर्मियों के वेतन में देरी पर अधिकारियों को फटकार

एजेंसी

सोनीपत। राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग की उपाध्यक्ष अंजना पंवार ने उन्होंने सफाई कर्मचारियों के वेतन में देरी को लेकर अधिकारियों को फटकार लगाई और सुनिश्चित करने को कहा कि सभी कर्मचारियों को समय पर वेतन मिले। एमएस एक्ट 2013 का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि सीवरेज सफाई के दौरान मृत्यु पर परिवार को 30 लाख रुपये का मुआवजा दिया जाए। दिव्यांगता या अन्य चोट की स्थिति में 10-20 लाख रुपये की सहायता सुनिश्चित की जाए। सोनीपत के लघु सचिवालय में सफाई कर्मचारियों और अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने सफाई कर्मचारियों के प्रति संवेदना जताते हुए उनके कल्याण के लिए ठोस कदम उठाने के निर्देश

दिए। पंवार ने कहा कि अधिकारी सफाई कर्मचारियों की समस्याओं को गंभीरता से लें और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रयास करें। अंजना पंवार ने चिंतपुरनी कॉलोनी में पूर्व में हुई तीन मजदूरों की मौत की एफआईआर को फिरसे खोलने और गहन जांच के आदेश दिए। उन्होंने दोषी फैक्ट्री मालिक पर सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा। सीवरेज सफाई के लिए मशीनों का प्रयोग अनिवार्य उपाध्यक्षा ने निर्देश दिया कि सीवरेज सफाई के लिए केवल मशीनों का इस्तेमाल हो। यदि किसी सफाई कर्मचारी को मजबूर किया गया तो संबंधित अधिकारी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होगी। सफाई कर्मचारियों की साल में दो बार स्वास्थ्य जांच कराने, उन्हें मौसमी कपड़े और सुरक्षा उपकरण देने के निर्देश दिए। साथ ही, केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कैंप आयोजित करने को कहा। बैठक में अतिरिक्त उपायुक्त अंकिता चौधरी, एसडीएम अमित कुमार, और विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। सफाई कर्मचारी संघ के प्रतिनिधियों ने अपनी समस्याएं भी रखीं।

जम्मू-कटरा एक्सप्रेस वे से बंद रास्ते खुलवाने के आदेश

एजेंसी

सोनीपत। उपायुक्त डॉ. मनोज कुमार ने एनएचएआई व राजस्व विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए जम्मू-कटरा एक्सप्रेस वे के बनने से जिन किसानों के चकबंदी या तकसीम के समय लगे रास्ते बंद हो गए हैं, उनके रास्तों का निर्माण करवाएं। गांव पुठी, रूखी, गंगेसर, बुटाना खेतलान आदि के किसानों को हुई परेशानियों के समाधान के लिए की किसानों व एचएचएआई के अधिकारियों के साथ बैठक में बोल रहे थे। उपायुक्त ने कहा कि किसी किसान के एक जगह 10 एकड़ जमीन थी और राजस्व रिकार्ड के अनुसार उसके खेत तक रास्ता था लेकिन एक्सप्रेसवे के निर्माण से उसके खेत चक के दो भाग हो गए और एक चक तक तो रास्ता रह गया और एक्सप्रेस-वे की दूसरी साईड बचे खेत का रास्ता बंद हो गया था उस खेत को भी नजदीक स्थित रास्ते से जोड़ा जाए। सभी संबंधित कानूनगो व पटवारी मौका मुआयना कर जिन खेतों में नए रास्ते लगाने हैं उसकी 31 दिसंबर तक रिपोर्ट तैयार करें ताकि एनएचएआई उन खेतों को रास्ता देने के लिए भूमि का अधिग्रहण कर सके।

बैठक में कुछ गांवों के सरपंचों ने मांग रखी कि उनकी पंचायत की अधिग्रहण हुई जमीन के पैसे नहीं मिले हैं तो इस बारे उपायुक्त ने एनएचएआई विभाग के पीडी जगभूषण को निर्देश दिए कि इस बारे मुख्यालय बात करें ताकि इन पंचायतों को पैसा मिल सके। डीआरओ हरिओम अत्री, डीडीपीओ जितेन्द्र कुमार सहित एनएचएआई विभाग के अधिकारी व विभिन्न गांवों के किसान मौजूद रहे।

सदियों से मानवता का मार्गदर्शन करती आई गीता: पूजा वशिष्ठ

एजेंसी

नारनौल। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2024 के तहत आईटीआई मैदान में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ मुख्य अतिथि के तौर पर पहुंची। उन्होंने प्रदर्शनी का शुभारंभ करने के बाद अवलोकन किया। गीता पूजन एवं हवन के बाद उन्होंने आज के सेमिनार का शुभारंभ किया। इस मौके पर अतिरिक्त उपायुक्त डॉ. आनंद कुमार शर्मा भी मौजूद रहे।

सेमिनार को संबोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक ने कहा कि श्रीमद् भागवत गीता सदियों से मानवता का मार्गदर्शन करती आई है। अध्यात्म और जीवन दर्शन से जुड़ा यह महान ग्रंथ हर युग में पथ प्रदर्शक बना रहेगा। कुरुक्षेत्र से भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया जो आज भी दुनिया को राह दिखा रहा है।

उन्होंने कहा कि गीता निष्काम भाव से कर्म करने की सीख देती है। पुलिस के काम में भी भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कर्म करने का संदेश सहायता करता है। धर्म की स्थापना के लिए कई बार पुलिस को सख्ती दिखानी पड़ती है लेकिन इरादा हमेशा समाज हित रहता है। गीता यही सिखाती है कि अगर आप सही इरादे को लेकर कर्म करेंगे तो कभी परेशानी नहीं आती। प्रजापिता

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से स्नेह दीदी ने अपने व्याख्यान में कहा कि पांच हजार साल पहले श्रीमद् भागवत गीता के ज्ञान की आवश्यकता थी तो आज हमें उससे कहीं अधिक गीता ज्ञान की आवश्यकता है। हम सबको रोज श्रीमद् भागवत गीता का अध्ययन करना चाहिए। हमारे जीवन में हर रोज कोई न कोई समस्या हमारे सामने खड़ी होती है उस समस्या का समाधान गीता में समाहित है। हर समस्या के समाधान के लिए तथा हर चुनौती को स्वीकार करने के लिए हमें श्रीमद् भागवत गीता का अध्ययन करना बहुत जरूरी है। गीता का ज्ञान एक संजीवनी बूटी है जिसको पढ़ने से और सुनने से आत्मा को बहुत ताकत प्राप्त होती है। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों ने स्टाल लगाकर अपनी सेवाएं दी। इस मौके पर नारनौल के एसडीएम डॉ जितेंद्र सिंह के अलावा विभिन्न विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे।

सरकारी जमीन को कब्जा मुक्त करने के लिए ड्राइव चलाएगा निगम: रेनू सोगन

एजेंसी

गुरुग्राम। नगर निगम आयुक्त रेनू सोगन ने कहा कि नगर निगम क्षेत्र में नियमित कॉलोनियों में भवन निर्माण से पहले नगर निगम की प्लानिंग ब्रांच से नक्शा पास करवाना अनिवार्य है। बिना नक्शा के निर्माण करने पर नगर निगम कार्रवाई करेगा। अगले सप्ताह से नगर निगम की टीम सरकारी जमीन को अवैध कब्जा से मुक्त करवाने के लिए स्पेशल ड्राइव चलाएगी।

निगम आयुक्त ने अपने कार्यालय में निगम अधिकारियों की मासिक बैठक में यह बात कही। इस दौरान उन्होंने निगम की ओर से करवाए जा रहे विकास कार्यों की समीक्षा भी की। आयुक्त ने इंफोर्समेंट शाखा के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अधिकारी सुनिश्चित करें कि नगर निगम क्षेत्र में तीनों नियमित कॉलोनी गांव भांगरौला स्थित बी-7, गांव हयातपुर स्थित शहीद भगत सिंह कॉलोनी और वजीरपुर एन्क्लेव स्थित बी-44 में बिना नक्शा पास करवाए निर्माण कार्य न हो। निगम द्वारा नक्शा पास होने से निगम के पास कॉलोनियों में बने मकानों का पूरा ब्यौरा होगा। सुनिश्चित हो। समाधान शिविर में नगर निगम से संबंधित शिकायतों का तय समय में निवारण करते हुए

इसके अलावा आयुक्त ने इंफोर्समेंट विंग से जुड़े अधिकारियों को आदेश दिए कि अगले सप्ताह से निगम की जमीन को अवैध कब्जे से मुक्त करवाने के लिए स्पेशल ड्राइव चलाएं।आयुक्त ने साथ ही कहा कि विभिन्न सरकारी पोर्टल जैसें सीएम विंडो, पीजी पोर्टल, जनसंवाद आदि पोर्टल से प्राप्त शिकायतों का त्वरित समाधान भी शिकायतकर्ता से संतुष्टि पत्र लेकर उसे पोर्टल पर अपलोड करें। बैठक में उनके साथ नगर निगम के उप-निगम आयुक्त विनोद नेहरा, एसई विजय ढ़ाका, एक्सईएन तुषार यादव, सीईओ बीबी कालरा, एसडीओ रविंद्र दहिया, विपिन बूरा, जेडटीओ देवेंद्र कुमार, सहायक उदय सिंह सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

मानव उद्धार का ग्रंथ है गीता: कुलपति अशोक कुमार

एजेंसी

सोनीपत। गोहाना नगर परिषद की चेयरपर्सन रजनी विरमानी ने गीता को भारतीय संस्कृति का प्रतीक बताते हुए इसके संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गीता जयंती को महोत्सव का रूप देकर हरियाणा सरकार ने इसे जनसरोकार का माध्यम बनाया है। सुभाष स्टेडियम में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव के तहत जिला स्तरीय कार्यक्रम में उन्होंने समाज को गीता से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। हरियाणा खेल विश्वविद्यालय के कुलपति अशोक कुमार ने गीता को मानव जीवन के उद्धार का ग्रंथ बताते हुए इसके तीन प्रमुख मार्ग ज्ञान योग, कर्म योग और भक्ति योग पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी की भयंकर समस्या तनाव से मुक्ति का समाधान गीता के ज्ञान में है। वहीं

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी विद्यालय की बहन प्रमोद ने कहा कि आत्मा बंधन मुक्त है और अहंकार से दूर रहकर जीवन को संतुलित बनाना ही गीता का संदेश है। उन्होंने शिक्षकों से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का संचार करने की अपील की। गुरुकुलजुआं के आचार्य वेदनिष्ठ ने गीता के स्थायित्व पर जोर देते हुए इसे वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान बताया। उन्होंने गीता के नियमित अध्ययन और यज्ञ के महत्व को रेखांकित किया।कार्यक्रम के दौरान सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा प्रदर्शनी और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आयोजित की गईं। अंत में नगराधीश रेणुका नांदल और जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी राकेश गौतमने वक्ताओं का सम्मान किया। विभिन्न सामाजिक संगठनों और गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। मंच का कुशल संचालन डॉ. सुभाष सिसोदिया ने किया। कार्यक्रम में रैडक्रॉस सोसायटी के पूर्व सचिव सुभाष वशिष्ठ, पार्षद बबली, भगवती राजपाल, अंजू राजौरा, इनर व्हील क्लब की प्रधान अनीता मदान, डॉ. कमलेश मलिक, समाजसेवी मौजूद रहे।

बांगलादेश में हिन्दु अल्पसख्यकों पर हो रहे अत्याचार के विरोध में सडक़ों पर उतरे लोग

एजेंसी

रोहतक। बांगलादेश में हिन्दु अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार के विरोध में विभिन्न धार्मिक व हिन्दु संगठनों के सदस्यों ने शहर में प्रदर्शन किया और उपायुक्त के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। हिन्दु संगठनों के सदस्यों का कहना है कि जिस तरह से बांगलादेश में निर्दोष हिन्दु समाज के लोगों के साथ अत्याचार व दुव्यवहार किया जा रहा है, वह सरासर गलत है। इससे पूरे हिन्दु समाज में भारी रोष है। केन्द्र सरकार को तुंरत इस मामले में सख्त निर्णय लेना चाहिए। सनातन रक्षा मंच के बैनर तले विभिन्न साधु संतों एव सामाजिक व धार्मिक संगठनों के लोग बांगलादेश में हिन्दु अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ महाबीर पार्क के बाहर एकत्रित हुए और रोष प्रदर्शन कर लघुसचिवाल पहुंचे। विश्व हिन्दु परिषद के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सुरेन्द्र जैन ने बताया कि जिस तरह से बांगलादेश में हिन्दु अल्पसंख्यकों पर अत्याचार किए जा रहे है, उससे पूरे हिन्दु समाज में बांगलादेश सरकार के खिलाफ भारी रोष है। उन्होंने कहा कि सरकार के साथ साथ हिन्दु समाज को भी एकजुट होना होगा, तभी इस तरह की घटनाओं पर अंकुश लग पाएगा। साथ ही चेताया कि अगर बांगालादेश में हिन्दु अल्पसख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा नहीं की गई तो पूरे विश्व का हिन्दु समाज सडक़ों पर उतरने पर मजबूर होगा। उन्होंने आरोप लगाया कि बांगलादेश में मानव अधिकारों का हन्न किया जा रहा है, जिसे सहन नहीं किया जाएगा।

श्रीमद्भागवत गीता में समाहित है संपूर्ण मानवता का सार : एडीसी विवेक आर्य

एजेंसी

जींद। तीन दिवसीय जिला स्तरीय गीता जयंती महोत्सव में अध्यात्म, कला, ज्ञान व संस्कृति के संगम को समर्पित होकर शोभायमान रहा। महोत्सव के दौरान सांस्कृतिक विधा के रूप में जहां गीता ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई वहीं सरकार की जनहितकारी नीतियों व योजनाओं की जानकारी लोगों तक प्रदर्शनी के माध्यम से पहुंचाई गई। गीता जयंती महोत्सव के दूसरे दिन का शुभारंभ एडीसी विवेक आर्य ने किया।

उन्होंने कहा कि गीता के सार के बिना मानव जीवन का उद्धार नहीं हो सकता। आज हमें गीता से प्रेरणा लेकर ही आगे बढना चाहिए। क्योंकि गीता ही हमें जीवन में विपत्तियों, अंधकार व कठिनाई में आगे बढने की राह दिखाती है। उन्होंने कहा कि धर्म में कर्म को प्रधान माना गया है। श्रीमद्भागवत गीता में संपूर्ण मानवता का सार समाहित है। जिसमें यह विदित है कि जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है, उन्हें उसी प्रकार से फल की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति के कर्मों के आधार पर अपना जीवन व्यतीत करता है उन्हें सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होती है और वह कई प्रकार की समस्याओं से दूर रहते हैं। उन्होंने कहा कि धर्म हमें कृतव्य के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देता है अर्थात कर्मों के साथ फलों को नही जोडऩा

चाहिए। गीता विपत्तियों में सहारा देती है। व्यक्ति के जीवन में विपत्तियों, अंधकार व कठिनाई होती है तो गीता हमें राह दिखाती है। गीता के छोटे से सार को पढने के बाद हमारे जीवन के हर संशय को दूर किया जा सकता है। जिला स्तरीय गीता जयंती समारोह के दूसरे दिन स्थानीय कलाकारों के साथ-साथ विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्र मुग्ध किए रखा। सरस्वती वंदना, ग्रुप सॉग, नृत्य, राधा कृष्ण डांस, गीता उपदेश, द्रोपदी चीर हरण, नी मैं नचना मोहन के नाल की प्रस्तुतियों से मन मोह लिया। वहीं जिला स्तरीय गीता जयंती समारोह के अवसर पर लगाई गई स्टॉलों में लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। सरकारी विभागों के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संगठनों ने भी अपनी-अपनी प्रदर्शनी लगाई। गीता जयंती महोत्सव के दौरान मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव मोनिका के नेतृत्व में जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की स्टॉल पर नागरिकों को उनके कानूनी अधिकारों बारे जागरूक किया गया।

भाजपा हरियाणा में बनाएगी 50 हजार सक्रिय सदस्य: बड़ौली

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश स्तरीय सक्रिय सदस्यता अभियान शुरू कर दिया है। इस अभियान के तहत भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली ने आज मुख्यमंत्री नायब सैनी का फार्म भरकर उन्हें पार्टी का सक्रिय सदस्य बनाया। इसके साथ ही प्रदेश में आज चंडीगढ़ के अलावा विभिन्न स्थानों पर सभी मंत्रियों, विधायकों व सांसदों के फार्म भरकर उन्हें भाजपा का सक्रिय सदस्य बनाया गया। इस अवसर पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए मोहन लाल बड़ौली ने बताया कि अगले पांच दिन पार्टी का प्रदेशभर में सक्रिय सदस्यता अभियान तथा सामान्य सदस्यता अभियान एक साथ चलेगा। बड़ौली ने बताया कि अभी तक भाजपा के 34 लाख नए सदस्य बनाए जा चुके हैं। अब आज से सक्रिय सदस्य बनाने का अभियान भी शुरू कर दिया गया है। जिसके अंतर्गत प्रदेश में 50 हजार सक्रिय सदस्य बनाए जाएंगे। सक्रिय सदस्य बनने के लिए यह जरूरी है कि एक नेता कम से कम 50 सदस्य बनाए। जिसे सक्रिय सदस्य का दर्जा प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सदस्यता अभियान को अब तक 15 दिसंबर तक बढ़ा दिया गया है। जिसके अंतर्गत सामान्य सदस्यता अभियान तथा सक्रिय सदस्यता अभियान

एक साथ चलेंगे। नगर निगम चुनाव के संबंध में बड़ौली ने कहा कि भाजपा सरकार व संगठन के स्तर पर निगम चुनाव के लिए पूरी तरह से तैयार है। चुनाव कार्यक्रम घोषित होते ही पार्टी पूरी ताकत के साथ चुनाव लड़ेगी और प्रदेश की सभी निगमों में अपने मेयर बनाएगी।

नारनौल में ठंड का प्रकोप बढ़ा, प्रशासन ने जारी की एडवाइजरी

एजेंसी

नारनौल। सर्दी के मौसम को देखते हुए उपायुक्त डॉ विवेक भारती ने जिला के नागरिकों को एडवाइजरी जारी की है। साथ ही अधिकारियों को आवश्यक दिशा.निर्देश दिए हैं। उपायुक्त ने कहा कि सभी नागरिक भविष्य में आने वाली शीत लहर की स्थिति को देखते हुए स्थिति पर कड़ी नजर रखें। शीत लहर की स्थिति के लिए उचित एहतियाती उपाय करें। साथ ही उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे यह सुनिश्चित करें कि सभी रैन बसेरे कार्यशील स्थिति में हों तथा वहां आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत रूप से यह भी सुनिश्चित करें कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह बेघर हो या अन्य, खुले में न सोए। अधिकारी बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, अस्पताल आदि का दौरा करें। अधिकारी प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को निकटतम रैन बसेरों धर्मशाला में स्थानांतरित करें। कंबल, ऊनी कपड़े, जूते, मोजे आदि के लिए परोपकारी व्यक्तियों और संगठनों से संपर्क करके ऐसी वस्तुओं को जिला रेडक्रॉस सोसाइटी के माध्यम से गरीबों और जरूरतमंदों, विशेषकर बेघर व्यक्तियों को वितरित करवाएं। प्रमुख कस्बों व शहरों में नेकी की दीवार बनाने को प्रोत्साहित करें। सार्वजनिक स्थानों पर आपातकालीन केंद्रए गर्म केंद्रए रात्रि

आश्रय,रैन बसेरा स्थापित करें और गैर सरकारी संगठनोंए सामुदायिक समूहों और व्यक्तियों से जरूरतमंदों को भोजन,गर्म कपड़े, कंबल, स्लीपिंग बैग जूते वितरित करने का आग्रह करें। अभियानों के तहत मनुष्यों और पशुओं दोनों में शीत विकारों के प्राथमिक उपचार पर ध्यान दिया जाना चाहिए। बिजली विभाग अस्पतालों को बिजली आपूर्ति बनाए रखने को प्राथमिकता दें। शीत लहर के बारे में नियमित प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करें। उन्होंने कहा कि विशिष्ट व्यवसायों किसान, बागवानी विशेषज्ञ, पशुपालक, निर्माण और अन्य बाहरी श्रमिक आदि के लिए विशेष जागरूकता कार्यक्रम चलाएं। उन्हें शीत लहर की स्थिति में अपनाए जाने वाले प्रभावों और निवारक और उपचारात्मक उपायों के बारे में जागरूक करें।

निगम की भूमि पर अवैध कब्जा व अनाधिकृत निर्माणों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई की जाएगी

एजेंसी

गुरुग्राम। निगमायुक्त की अध्यक्षता में आयोजित समाधान शिविर में प्रॉपर्टी टैक्स डाटा सुधार से संबंधित आई आधा दर्जन शिकायतों का मौके पर ही समाधान करवाया गया। इनमें विशेष रूप से प्रॉपर्टी मालिक के नाम, पते या मोबाइल नंबर से संबंधित शिकायतें थी, जिनका समाधान संबंधित जोनल टैक्सेशन अधिकारियों द्वारा मौके पर ही कर दिया गया। निगमायुक्त अशोक कुमार गर्ग ने अवैध कब्जा व अनधिकृत निर्माणों से संबंधित शिकायतों की सुनवाई के दौरान एनफोर्समेंट विंग को निर्देश दिए कि वे इस मामले में प्रभावी कार्रवाई करें तथा निगम भूमि पर अवैध कब्जों को हटाने के साथ ही चारदीवारी आदि करके उसे सुरक्षित भी करें, ताकि दोबारा से वहां पर कब्जा ना होने

पाए। इसके साथ ही क्षेत्र में हो रहे अनाधिकृत निर्माणों के खिलाफ भी लगातार कार्रवाई करते रहें। वहीं, सीवरेज मैनहोल के ढक्कन से संबंधित शिकायतों की सुनवाई के दौरान निगमायुक्त ने कहा कि संबंधित इंजीनियर यह सुनिश्चित करें कि एजेंसी द्वारा लगाए जाने वाले मैनहोल ढक्कन बेहतर गुणवत्ता के हों। शिकायतकर्ताओं ने बताया कि कई बार एजेंसी द्वारा ढक्कन लगाने के कुछ दिन बाद ही टूट जाते हैं। इस पर निगमायुक्त ने कहा कि ढक्कनों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के साथ ही एजेंसी की जवाबदेही भी तय की जाए, ताकि इस प्रकार के मामलों की पुनरावृत्ति ना हो। ढक्कन की एक समय सीमा निर्धारित की जाए और इस समय सीमा के भीतर अगर ढक्कन टूटता है तो उसे बिना अतिरिक्त शुल्क बदलने की जिम्मेदारी एजेंसी की होगी।

शक्कर में मांग सुस्त, खाद्य तेलों में नरमी, दलहनों में चना सस्ता, दाल-चावल सामान्य

एजेंसी

इंदौर। सियागंज किराना बाजार में शक्कर में मांग सुस्त बताई गई। खाद्य तेल नरम बोले गए। आज सोयाबीन रिफाइंड तेल नीचा बिका। तिलहनों में रिफाइनरी प्लांटों की लिवाली रही। दलहनों में मांग सुस्ती से चना कांटा सस्ता बिका। दालों में मांग कमी से नरमी बताई गई। चावल में कामकाज सामान्य रहा।

किराना बाजारः सियागंज किराना बाजार में शक्कर में खरीदी सुस्त होने से से सस्ती बिकी। आज शक्कर में चार गाड़ी की आवक हुई। खोपरा बूरा दिसावर के साथ मजबूत रहा। खोपरा गोला तथा हल्दी में पूछपरख रही। साबूदाना में उठाव बताया गया।

तेल-तिलहनःखाद्य तेलों में मांग कमी से सोयाबीन तेल सस्ता बिका। पाम तेल की उपलब्धता बने रहने से तेजी मंदी का अभाव देखा गया। तिलहन में उठाव कमी से सोयाबीन? में नरमी दर्ज की गई।

दाल-दलहनःसंयोगितागंज अनाज मंडी में दलहन जिन्सों में कामकाज गिरावट लिए रहा। आज चना कांटा सस्ता बिका। दालों में उठाव साधारण बताया गया। चावल में लिवाली रही।

यूएलआईपी लॉन्च होने से एपीआई आधारित इंटीग्रेशन के जरिए डेटा तक उद्योग की पहुंच हुई आसान

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने और देशभर में लॉजिस्टिक्स दक्षता को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति 2022 के तहत कई कदम उठाए हैं। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने लोकसभा में एक सवाल के लिखित उत्तर में यह जानकारी दी। केंद्रीय मंत्री ने सदन को बताया कि यूनिफाइड लॉजिस्टिक इंटरफेस प्लेटफॉर्म (यूएलआईपी) के लॉन्च होने से एपीआई-आधारित इंटीग्रेशन के माध्यम से डेटा तक उद्योग जगत की पहुंच आसान हुई है। उन्?होंने कहा कि नीति के हिस्से के रूप में कोयला क्षेत्र में कुशल लॉजिस्टिक्स (एसपीईएल) के लिए क्षेत्रीय योजना को अधिसूचित किया गया है। इसके अतिरिक्त, 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने अपनी लॉजिस्टिक्स नीतियों को तैयार और अधिसूचित किया है, जिन्हें स्त्रश्चद्बद्बह्ल.द्द श1.द्बठ्ठ पर देखा जा सकता है। प्रसाद ने बताया कि विश्व बैंक के लॉजिस्टिक परफॉरमेंस इंडेक्स (एलपीआई) में भारत की रैंकिंग 2014 के 54वें स्थान से छह पायदान ऊपर चढ़कर 2023 में 38वें स्थान पर पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि परिचालन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, 14 मार्च 2023 को एक अंतर-मंत्रालयी सेवा सुधार समूह (एसआईजी) का गठन किया गया है। मंत्री ने कहा क लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के व्यावसायिक संघों को शामिल किया गया, ताकि मुद्दों को हल करने और दक्षता में सुधार के लिए एक मजबूत तंत्र बनाया जा सके।

वाल्मीकिनगर के घोटवा टोला में हस्तकरघा का स्टॉल मुख्यमंत्री को करेगा आकर्षित

पश्चिम चम्पारण(बगहा)। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के महिला संवाद का संभावित यात्रा की शुरुआत वाल्मीकि की तपों भूमि,लव कुश की जन्मस्थली वाल्मीकिनगर के घोटवा टोला से 15 दिसम्बर को होना है,जिसके लिए जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय के दिशा निर्देश पर जिला प्रशासन सहित प्रखंड के अधिकारी घोटवा टोला की सूरत को बदलने में दिन रात एक कर युद्ध स्तर पर कार्य को निष्पादन में लगे हैं। इसी क्रम में जीविका दीदियों के द्वारा थारू और आदिवासी जनजाति के महिलाओं द्वारा हाथ से निर्मित सिक्की मौनी,विभिन्न प्रकार के झाड़ू,साबुन,शहद सहित अन्य प्रकार के स्टॉल को लगाने की तैयारी जोरो पर है, जिसे लेकर जीविका के अधिकारियों के देख रेख में जीविका दीदियों द्वारा सिक्की मौनी,बांस,खजूर सहित कई प्रकार के जंगली झाड़ियों से झाड़ू का निर्माण,साबुन,और मधुमक्खी के शहद की पैकिंग की तैयारी की जा रही है। जानकारी देते हुए जीविका के प्रखंड परियोजना प्रबंधक रितेश कुमार मिश्रा ने बताया बिहार सरकार के द्वारा संचालित जीविका द्वारा गरीब महिला के उत्थान के लिए कार्य किया जा रहा है।इसी दौरान सूबे के मुख्यमंत्री के संभावित आगवन को लेकर जीविका दीदियों द्वारा निर्मित हस्तकरगा का स्टॉल लगाया जायेगा,जो कि एक आकर्षण का केंद्र होगा।गांव की जीविका महिलाओं द्वारा मुख्यमंत्री के आगमन पर हाथ से बने सिक्किम मउनी का उपहार महिलाओं द्वारा भेंट की जा सकती है।इस मौके पर जीवकोपार्जन विशेषज्ञ सचिंद्र कुमार,सामुदायिक समन्वयक नितेश कुमार,रवि कुमार सहित दर्जनों जीविका दीदियां मौजूद रहीं।

भारत पांच साल में बनेगा दुनिया का नंबर वन ऑटोमोबाइल उद्योगः नितिन गडकरी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि भारत पांच साल के भीतर अमेरिका और चीन के बाद दुनिया का नंबर वन ऑटोमोबाइल उद्योग बन सकता है। गडकरी ने नई दिल्ली में अमेजन संभव शिखर सम्मेलन 2024 को संबोधित करते हुए यह बात कही। गडकरी ने भारत के बढ़ते ऑटोमोबाइल उद्योग और इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) क्षेत्र पर प्रकाश डाला। मंत्री ने देश की खूबियों के बारे में विस्तार से उल्लेख कर कहा कि भारत में सबसे ज्यादा युवा और इंजीनियरिंग प्रतिभा है। उन्होंने कहा कि मेरी हमेशा से राय रही है कि नवाचार, उद्यमिता, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान योजना और सफल अभ्यास, जिसे हम ज्ञान कहते हैं।

दिनभर उतार-चढ़ाव के बाद सपाट स्तर पर बंद हुआ शेयर बाजार

एजेंसी

नयी दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार आज पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद सपाट स्तर पर बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत मामूली बढ़त के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद तेजड़ियों और मंदड़ियों के बीच एक-दूसरे पर हावी होने की कोशिशें शुरू हो गई, जिसकी वजह से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों की चाल में भी लगातार उतार-चढ़ाव होता रहा। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.006 प्रतिशत की सांकेतिक मजबूती के साथ बंद हुआ, जबकि निफ्टी ने 0.04 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज की कारोबार का अंत किया।आज के कारोबार के दौरान आईटी, मेटल, पीएसयू बैंक और रियल्टी सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। इसके साथ ही

कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, एफएमसीजी और टेक इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुए। दूसरी ओर पावर, मीडिया और टेलीकॉम सेक्टर के शेयरों में लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा। इसके साथ ही पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, ऑयल एंड गैस, ऑटोमोबाइल, कैपिटल गुड्स और हेल्थ केयर इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में आज खरीदारी का जोर बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.30 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.33 प्रतिशत की बढ़त के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज शेयर बाजार में स्मॉल और मिडकैप शेयरों में हुई खरीदारी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब 30 हजार करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 459.63 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 459.33 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 30 हजार करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ। दिनभर के कारोबार में बीएसई में 4,093 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,029 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,932 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 132 शेयर बिना किसी उतार-चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,511 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,230 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान और 1,281 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए।

बर्जर पेंट्स ने पेश किए पर्यावरण अनुकूल रूफ वाटरप्रूफिंग समाधान

एजेंसी

नयी दिल्ली।भारत में बदलते मौसम चक्र के मद्देनजर मजबूत छतों की बढ़ती जरूरत को देखते हुए बर्जर पेंट्स इंडिया लिमिटेड ने एक उन्नत रूफ वाटरप्रूफिंग समाधान पेश किया है।बर्जर ने एक विज्ञप्ति में बताया कि ये समाधान घर के मालिकों को लंबे समय तक सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं। घर की छत मौसम की मार से बचाव में पहली दीवार होती हैं और छतों को बारिश, नमी और परावैगनी किरणों का के समक्ष सुरक्षा के लिए उच्च गुणवत्ता वाली और मजबूत वाटरप्रूफिंग की जरूरत होती है। बर्जर पेंट्स इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकरी (सीईओ) अभिजीत रॉय ने आज कहा, बदलते मौसम और कठोर परिस्थितियों में छत की संरचना कमजोर हो जाती है। इस समस्या को हल करने के लिए हमने रूफ कूल एंड सील नामक

अगली पीढ़ी का विशेष उत्पाद तैयार किया है। यह न केवल कमरे के तापमान को नियंत्रित रखता है, बल्कि छतों में दरारें पड़ने से भी बचाता है।

शेयर बाजार में निसुस फाइनेंस की धांसू एंट्री, लिस्ट होते ही अपर सर्किट पर पहुंचे शेयर

एजेंसी

नई दिल्ली। निसुस फाइनेंस सर्विसेज के शेयरों ने आज घरेलू शेयर बाजार में लिस्टिंग के जरिए जोरदार एंट्री की। बाजार में लिस्ट होते ही ये शेयर खरीदारी के सपोर्ट से अपर सर्किट लेवल तक पहुंच गया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 180 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 225 रुपये के स्तर पर हुई। इस तरह आईपीओ निवेशकों को 25 प्रतिशत का लिस्टिंग गेन मिल गया।

स्टॉक मार्केट में लिस्ट होते ही खरीदारों ने इसे हाथों-हाथ लिया, जिससे थोड़ी ही देर में ये शेयर उछल कर 236.25 रुपये के अपर सर्किट लेवल तक पहुंच गया। इस तरह आईपीओ निवेशकों को पहले दिन ही इस शेयर से 31.25 प्रतिशत का मुनाफा हो गया। निसुस फाइनेंस सर्विसेज का 114.24 करोड़ रुपये का आईपीओ 4 से 6 दिसंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला था। ये आईपीओ ओवरऑल 192.29 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 93.84 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल

इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 451.21 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 139.78 गुना सब्सक्राइब हुआ था। हालांकि एम्पलाइज के लिए रिजर्व पोर्शन में सिर्फ 0.90 गुना सब्सक्रिप्शन ही मिल सका था। इस आईपीओ के तहत 101.62 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी किए गए हैं। इसके अलावा 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 7,00,800 शेयर ऑफर फॉर सेल विंडो के जरिए बेचे गए हैं। नए शेयरों के जरिए जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी गांधीनगर की आईएफसी गिफ्ट सिटी, दुबई के डीआईएफसी और मॉरीशस के एफएससी में फंड सेटअप बढ़ाने में करेगी। इसके अलावा अतिरिक्त लाइसेंस फैसिलिटी, मैनेजमेंट सर्विसेज और फंड मैनेजमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने में भी इन पैसों का इस्तेमाल किया जाएगा। निसुस फाइनेंस सर्विसेज 2013 से कॉर्पोरेट क्लाइंट्स को ट्रांजेक्शन एडवाइजरी सर्विस, फंड और ऐसेट मैनेजमेंट, प्राइवेट इक्विटी और वेंचर डेट तथा कैपिटल सॉल्यूशंस मुहैया कराती है। कंपनी का कारोबार ट्रांजेक्शन एडवाइजरी सर्विसेज ओर फंड एंड ऐसेट मैनेजमेंट सेगमेंट में बंटा हुआ है।

प्राइमरी मार्केट में पांच कंपनियों के आईपीओ की लॉन्चिंग, 13 दिसंबर तक लगाई जा सकेगी बोली

एजेंसी

नई दिल्ली। विशाल मेगा मार्ट और मोबिक्विक समेत समेत पांच कंपनियों के आईपीओ की लॉन्चिंग से प्राइमरी मार्केट में हलचल बनी हुई है। इनमें तीन कंपनियां मेनबोर्ड सेगमेंट की हैं, जबकि दो कंपनियां एसएमई सेगमेंट की हैं। इन सभी आईपीओ में 13 दिसंबर तक पैसा लगाया जा सकेगा। इन कंपनियों के शेयरों की लिस्टिंग 18 दिसंबर को होगी। आज विशाल मेगा मार्ट का 8,000 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए ओपन हुआ है। ये आईपीओ 13 दिसंबर को क्लोज होगा। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 74 से 78 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 190 शेयर का है। विशाल मेगा मार्ट के शेयर भी 18 दिसंबर को बीएसई और एनएसई पर लिस्ट होंगे। आज ही मोबिक्विक का 572 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। इश्यू में 13 दिसंबर तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 265 से 279 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 53 शेयर का है। कंपनी के शेयरों की 18 दिसंबर को बीएसई और एनएसई पर लिस्टिंग होगी। इसी तरह साई लाइफ साइंसेज का 3,042.62 करोड़ रुपये का आईपीओ आज ओपन हुआ है। इस आईपीओ में भी 13 दिसंबर तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ में बोली लगाने के लिए 522 से 549 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 27 शेयर का है। कंपनी के शेयर 18 दिसंबर को बीएसई और एनएसई पर लिस्ट होंगे। आज ही सुप्रीम फैसिलिटी मैनेजमेंट का 50 करोड़ रुपये का आईपीओ आज सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। इस आईपीओ में भी 13 दिसंबर तक बोली लगाई जा

सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 72 से 76 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,600 शेयर का है। आईपीओ की क्लोजिंग के बाद 16 दिसंबर को शेयरों का अलॉटमेंट किया जाएगा। कंपनी के शेयर 18 दिसंबर को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में टिकाव

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज टिकाव रहा, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा।वैश्विक स्तर पर सप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 0.41 प्रतिशत उतरकर 68.09 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.32 प्रतिशत की गिरावट के साथ 71.91 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

व्हाट्सएप ने छोटे कारोबारियों को प्रशिक्षित करने के लिए शुरू की भारत यात्रा

एजेंसी

नई दिल्ली। ..मैसेजिंग ऐप व्हाट्सएप ने छोटे कारोबारियों को प्रशिक्षित करने के लिए भारत यात्रा पहल की शुरुआत की है।

कंपनी ने बयान जारी कर कहा कि मोबाइल बस यात्रा छोटे कारोबारियों को व्हाट्सएप की क्षमताओं का पूरा लाभ उठाने, उनके डिजिटल कौशल और व्यवसाय विकास क्षमता को बढ़ाने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई है। दिल्ली-एनसीआर से शुरू होकर बस लक्ष्मी नगर, राजौरी गार्डन और नेहरू प्लेस, मालवीय नगर, अमर कॉलोनी और सफदरजंग एन्क्लेव जैसे क्षेत्र के कुछ सबसे लोकप्रिय और व्यस्त बाजारों का दौरा करेगी। यात्रा गुड़गांव और नोएडा के प्रमुख केंद्रों को भी कवर करेगी, जिसमें सफायर मॉल और आटा मार्केट शामिल हैं।

दिल्ली-एनसीआर में अपने दौरे के बाद व्हाट्सएप-ब्रांडेड बस पूरे

भारत की यात्रा करेगी, आगरा, लखनऊ, कानपुर, इंदौर, अहमदाबाद, सूरत, नासिक और मैसूर जैसे शहरों तक पहुंचेगी। इस पहल के माध्यम से, छोटे और मध्यम व्यवसायों (एसएमबी) को इंटरैक्टिव डेमो, व्यावहारिक व्यक्तिगत प्रशिक्षण से लाभ मिलेगा। व्हाट्सएप बिजनेस ऐप की प्रमुख विशेषताओं का लाभ उठाने के लिए विशेषज्ञ मार्गदर्शन मिलेगा ताकि वे अपनी व्हाट्सएप उपस्थिति स्थापित कर सकें, अपने ग्राहकों से बेहतर तरीके से जुड़ सकें, बिक्री पूरी कर सकें और अपना व्यवसाय और अपने संचालन को बढ़ा सकें। मेटा इन इंडिया के बिजनेस मैसेजिंग के निदेशक रवि गर्ग ने कहा, ÷छोटे व्यवसाय भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और सही डिजिटल टूल के साथ, वे देश के डिजिटल परिवर्तन को सुपरचार्ज करने की शक्ति रखते हैं। व्हाट्सएप भारत यात्रा इन व्यवसायों को अपने ग्राहकों से डिजिटल रूप से जुड़ने, बढ़ने और सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करके उनकी पूरी क्षमता को अनलॉक करने में मदद करने की हमारी प्रतिबद्धता है।

वित्त वर्ष 2024 में स्टेनलेस स्टील की खपत 11 प्रतिशत बढ़ी

एजेंसी

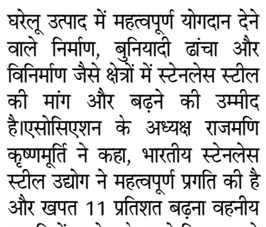

नयी दिल्ली। भारत में वित्त वर्ष 2023 की तुलना में स्टेनलेस स्टील की खपत वित्त वर्ष 2024 लगभग 11 प्रतिशत बढ़कर 44.6 लाख टन हो गई है। इंडियन स्टेनलेस स्टील डेवलपमेंट एसोसिएशन (आईएसएसडीए) के अनुसार वित्त वर्ष 2023 में यह 40.2 लाख टन थी। इसमें 'लॉन्ग' और 'फ्लैट' दोनों प्रकार के स्टेनलेस स्टील उत्पाद शामिल हैं। देश में स्टेनलेस स्टील की प्रति व्यक्ति खपत भी वित्तीय वर्ष 2024 में बढ़कर 3.1 किलोग्राम हो गई जबकि वित्तीय वर्ष 2019 में यह 2.25 किलोग्राम थी।संगठन के अनुसार समग्र वहनीयता व ज़ंग रोधी गुणों, स्थायित्व और मजबूती के कारण बुनियादी ढांचा, प्रसंस्करण उद्योग, रेलवे क्षेत्र जैसे क्षेत्रों में स्टेनलेस स्टील को प्राथमिकता दी जा रही है। 2047 तक 40 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था वाला देश बनने की भारत की महत्वाकांक्षा को देखते हुए, सकल

घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले निर्माण, बुनियादी ढांचा और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में स्टेनलेस स्टील की मांग और बढ़ने की उम्मीद है।एसोसिएशन के अध्यक्ष राजमणि कृष्णमूर्ति ने कहा, भारतीय स्टेनलेस स्टील उद्योग ने महत्वपूर्ण प्रगति की है और खपत 11 प्रतिशत बढ़ना वहनीय सामग्रियों पर देश के बढ़ते विश्वास को दर्शाता है। पिछले दो दशक में विभिन्न क्षेत्रों में स्टेनलेस स्टील की मांग में विविधता आई है, हालांकि देश में प्रति व्यक्ति खपत अब भी वैश्विक औसत यानी 6.5 किलोग्राम से कम है। भारत की स्थापित क्षमता 75 लाख टन है और देश राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय दोनों तरह के मानकों के अनुरूप विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि वित्तीय वर्ष 2047 तक 1.9-2.0 करोड़ टन तक पहुंचने का अनुमान है। ऑटोमोटिव, निर्माण, नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों, पर्यावरण हितैषी अर्थव्यवस्था (ग्रीन इकॉनोमी), समुद्री पर्यावरण के अनुकूल अर्थव्यवस्था (ब्लू इकॉनोमी), रक्षा व एयरोस्पेस जैसे उभरते क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास और औद्योगिक अनुप्रयोगों की वजह से यह वृद्धि होने का अनुमान है। इसके अलावा, मेक इन इंडिया, उत्पादन प्रोत्साहन (पीएलआई), अनुकूल व्यापार नीतियों और सतत विकास पर ध्यान केंद्रित करने जैसी सरकारी पहलों से और वृद्धि होने की उम्मीद है।

उन्होंने कहा कि हालांकि, उद्योग को विशेष रूप से चीन से लगातार हो रही निम्न गुणवत्ता स्टेनलेस स्टील की आपूर्ति के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे भारतीय निर्माताओं को नुकसान होता है। भारत अपनी परिचालन क्षमता में से केवल 60प्रतिशत का उपयोग कर पा रहा है। ऐसे में हम सरकार से समान अवसर सुनिश्चित करने, पूरी क्षमता का इस्तेमाल करने के लिए भारतीय निर्माताओं की मदद करने और वैश्विक स्टेनलेस स्टील परिदृश्य में भारत की स्थिति को और मजबूत बनाने का आग्रह करते हैं।

सर्राफा बाजार में जबरदस्त तेजी, सोना और चांदी की बढ़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज जोरदार तेजी नजर आ रही है। सोना आज 770 रुपये से लेकर 820 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हुआ है। इसी तरह चांदी ने भी आज 4,500 रुपये प्रति किलोग्राम तक की छलांग लगाई है। इस तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 78,750 रुपये से लेकर 78,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 72,220 रुपये से लेकर 72,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बना हुआ है। चांदी के भाव में भी तेजी आने के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में इसकी कीमत बढ़ कर 96,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई है।देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 78,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 72,220 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट

सोना 78,600 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 72,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 78,650 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 72,100 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 78,600 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 72,050 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 78,600 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 72,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 78,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 72,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 78,650 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 72,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 78,750 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 72,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

नवंबर के महीने में घरेलू शेयर बाजार की गिरावट का एसआईपी इनवेस्टमेंट पर असर नहीं

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में नवंबर के महीने में भी लगातार दबाव बना रहा, लेकिन म्युचुअल फंड्स में एसआईपी के जरिए होने वाले निवेश पर इस महीने कोई विशेष असर नहीं पड़ा। नवंबर के महीने में भी अक्टूबर के महीने के बराबर ही एसआईपी के जरिए निवेश किया गया। हालांकि, नवंबर के महीने में नए एसआईपी की संख्या अक्टूबर के महीने की तुलना में घट गई। नवंबर में नए एसआईपी की संख्या 49,46,408 रही, जबकि अक्टूबर के महीने में ये आंकड़ा 63,69,919 का था। अक्टूबर के महीने में एसआईपी के जरिए 25,323 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था?। नवंबर में निवेश का ये आंकड़ा 25,320 करोड़ रुपये रहा, जो अक्टूबर की तुलना में सिर्फ 3 करोड़ रुपये कम है। हालांकि, नवंबर के महीने में एसआईपी अकाउंट की संख्या 10.22 करोड़ के स्तर तक पहुंच गई, जो अभी तक का सर्वोच्च स्तर है। इस आंकड़े से इस बात का भी पता चलता है कि लॉन्ग टर्म इन्वेस्टमेंट के लिहाज से एसआईपी अभी भी इन्वेस्टर्स के लिए पहली पसंद बना हुआ है। मार्केट एक्सपर्ट्स का मानना है कि नवंबर के एसआईपी आंकड़े आ जाने के बाद ये स्पष्ट हो गया है कि अभी भी इन्वेस्टर्स का भरोसा इक्विटी और म्युचुअल फंड्स पर बना हुआ है। विशेष रूप से रिटेल इन्वेस्टर अभी भी एसआईपी के जरिए म्युचुअल फंड स्कीम में इन्वेस्ट कर रहे हैं।

नये साल में इक्विटी बाजार को मिलेगी और गति : कोटक

एजेंसी

मुंबई। स्टॉक ब्रोकिंग कंपनी कोटक सिक्योरिटीज लिमिटेड ने आज कहा कि नये साल 2025 में इक्विटी बाजार को और गति मिलेगी और कमोडिटी अपने ऐतिहासिक उच्चतम स्तर को पार कर जाएगा। कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीपाल शाह ने वर्ष 2025 के लिए मार्केट आउटलुक रिपोर्ट जारी कर कहा, ÷भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपनी स्थिति बनाए हुए है, जो इसे वैश्विक निवेशकों के लिए एक आकर्षक निवेश स्थान बनाता है। हम भारत की दीर्घकालिक विकास क्षमता पर पूरा भरोसा करते हैं, लेकिन इसके साथ ही हम निवेशकों को सतर्क आशावाद के साथ बाजार में दृष्टिकोण अपनाने की सलाह देते हैं। हमें उम्मीद है कि 2025 में इक्विटी बाजार को और गति मिलेगी और कमोडिटी अपने ऐतिहासिक उच्चतम स्तर को पार करेंगी। साथ ही, युवा निवेशकों का शेयर बाजार में शुरुआती निवेश के जरिए संपत्ति बनाने का बढ़ता रुझान बाजार की ग्रोथ में योगदान देगा। रिपोर्ट में इक्विटी मार्केट के बारे में कहा गया है कि मध्यम से दीर्घकालिक में व्यापक बाजार में हल्की वृद्धि की उम्मीद है। घरेलू बुनियादी स्थिति मजबूत बनी रहेगी, लेकिन सतर्क आशावाद की समय की आवश्यकता है। दीर्घकालिक निवेशकों को उच्च मूल्यांकन के बीच एसेट क्वालिटी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। वैश्विक अर्थव्यवस्थाएं स्थिर हो रही हैं क्योंकि मौद्रिक नीतियां नरमी की ओर बढ़ रही हैं, जिसमें अमेरिका, यूरोप और एशिया में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद है। घरेलू स्तर पर मुद्रास्फीति उच्च बनी हुई है, विशेष रूप से खाद्य कीमतें। हालांकि अगर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) अचानक गिरती है तो फरवरी की नीति में ब्याज दर में कटौती की संभावना बढ़ सकती है। वर्ष 2024 में अब तक जिन क्षेत्रों ने अच्छा प्रदर्शन किया है वे रियल्टी 31 प्रतिशत, फार्मा 30 प्रतिशत, और पावर 26 प्रतिशत हैं। वित्त वर्ष 2024-25 में बैंकों और कैपिटल गुड्स ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जबकि आईटी और उपभोक्ता कंपनियों के परिणाम उम्मीद से कम रहें हैं। इसी तरह रिपोर्ट में कमोडिटीज के आउटलुक में कहा गया है कि वर्ष 2024 कमोडिटीज के लिए असाधारण रहा है, जहां सोना 2,801.8 डॉलर प्रति औंस के ऐतिहासिक उच्चतम स्तर पर पहुंचा और चांदी ने 59 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की। कमोडिटी में ये तेजी केंद्रीय बैंकों की मजबूत मांग, भू-राजनीतिक तनाव और हरित तकनीकों में बढ़ते औद्योगिक अनुप्रयोगों से प्रेरित थी। वहीं, दूसरी ओर कच्चे तेल की कीमतों में उतार चढ़ाव देखने को मिला जिसका कारण चीन में कम होती मांग, फिर अचानक अमेरिका में विनिर्माण में तेजी प्रमुख कारण रहे। वर्ष 2025 में सोना और चांदी की अपनी मजबूती बनाए रखने की संभावना है लेकिन भू-राजनीतिक घटनाक्रम और आर्थिक नीतियां इस कमोडिटी की तेजी पर लगाम भी लगा सकती हैं। कच्चा तेल अगले साल भी वैश्विक चुनौतियों के कारण उतार-चढ़ाव का सामना करेगा लेकिन मध्य-पश्चिम और रूस-यूक्रेन संघर्ष के तनाव कभी-कभी क्रूड की कीमतों को समर्थन भी दे सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2024 में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा रूपए ने स्थिरता दिखाई है, जिसमें समय-समय पर भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के सक्रिय हस्तक्षेपों ने मदद की जबकि वैश्विक स्तर पर अमेरिकी डॉलर मजबूत हुआ है।

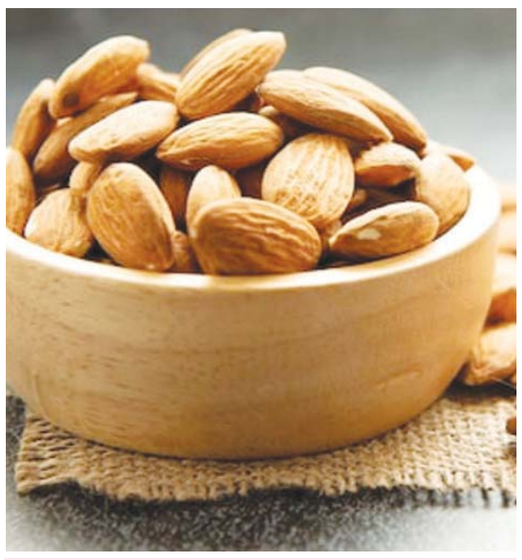

1 दिन में कितने बादाम खाने चाहिए? सुबह खाली पेट या रात किस समय खाना है अधिक फायदेमंद, जानें सेवन का सही तरीका

ड्राई फ्रूट्स में काजू के बाद बादाम का सेवन लोग खूब करते हैं. हालांकि, कुछ लोग एक ही दिन में बहुत अधिक बादाम खा जाते हैं. ऐसा करना हेल्दी नहीं है. बेहतर है बादाम को सही तरीके से खाने के बारे में जान लेना. दिन भर में कितने और किस तरह से बादाम खाना चाहिए, जानें यहां.

ड्राई फ्रूट्स में बादाम (द्बद्वशठ्ठस्रह्य) को काफी हेल्दी नट्स कहा जाता है. कई तरह के न्यूट्रिएंट्स और सेहत लाभ से भरा बादाम अक्सर स्वीट डिश, मिठाई, शेक, स्मूदी में इस्तेमाल होता है. इसे आप ऐसे ही खाएं, रोस्ट करके खाएं या फिर सुबह पानी में भिगोया हुआ खाएं, हर तरह से लाभ देता है. पानी में भिगोया हुआ बादाम बच्चों को खिलाने से दिमाग तेज होता है. हालांकि, कुछ लोग एक दिन में कई बादाम खा जाते हैं, जो सही नहीं है. साथ ही बादाम खाने का सही समय भी होता है. ऐसे में आप अधिक फायदा पाना चाहते हैं तो इसके खाने का सही तरीका जरूर जान लें.

बादाम में मौजूद पोषक तत्व

टीओआई में छपी एक खबर के अनुसार, प्रत्येक 28 ग्राम यानी लगभग 23 बादाम में कैलोरी 160, फाइबर 3.5 ग्राम, हेल्दी फैट्स 14 ग्राम, प्रोटीन 6 ग्राम, साथ ही कार्बोहाइड्रेट्स, मैग्नीशियम, कैल्शियम, आयरन, विटामिन ई आदि भी होते हैं. ये एटीऑक्सीडेंट्स से भी भरपूर होते हैं. खासकर इसके छिलके में एंटीऑक्सीडेंट्स ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इंफ्लेमेशन से बचाते हैं.

एक दिन में कितना बादाम खाना चाहिए?

दिन भर में आपको मुट्ठी भर बादाम खाना चाहिए. इससे एनर्जी बूस्ट होती है. एक मुट्ठी में कम से 7 से 8 बादाम आराम से आ सकते हैं. आप बादाम को दूध या फिर पानी में भिगोकर भी खाएं. ये भी बहुत फायदेमंद है. ऐसा खाना पसंद नहीं तो कच्चा भी बादाम खा सकते हैं. रोस्टेड बादाम खाना भी बेस्ट और हेल्दी तरीका है.

कब खाना चाहिए बादाम?

टीओआई के अनुसार, सुबह में बादाम खाना सबसे सही होता है. खासकर, खाली पेट खाना बेस्ट है. इससे दिन भर एनर्जी प्राप्त होती रहती है. यह एनर्जी का अच्छा सोर्स है, इसलिए वर्कआउट के पहले इसे खा सकते हैं. वर्कआउट के बाद बादाम को प्रोटीन जैसे ग्रीक योगर्ट के साथ पेयर करके खा सकते हैं. इससे मांसपेशियों की मरम्मत भी होगी. क्या आप जानते हैं कि रात के समय बादाम खाते हैं तो आपको अच्छी नींद आएगी. इसमें मौजूद मैग्नीशियम रिलैक्स महसूस कराता है और इन्सॉम्निया की परेशानी को दूर करता है.

बादाम खाने का सही तरीका?

आप बादाम को सेब या केले के साथ पेयर करके खा सकते हैं, क्योंकि ये एक फाइबर से भरपूर स्नैक्स होगा. यह शरीर में हेल्दी फैट्स के साथ नेचुरल शुगर को बैलेंस करता है. आप बादाम को दूध या फिर दही के साथ खा सकते हैं. इससे शरीर में कैल्शियम और प्रोटीन का इनटेक बढ़ेगा. बादाम को डार्क चॉकलेट के साथ पेयर करके खाने से हार्ट हेल्दी रहता है. ये एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर फूड होगा. आप खीर, सेवई, हलवा, ओटमील, पोहा, उपमा, पुलाव, स्मूदी, शेक आदि में मिलाकर भी सेवन कर सकते हैं. इससे आपको हेल्दी फैट्स और प्रोटीन भरपूर प्राप्त होगा. जिन्हें किडनी से संबंधित कोई समस्या है, वे इसका सेवन ना करें. हार्ट प्रॉब्लम, डायबिटीज, प्रेग्नेंसी, छोटे बच्चे, एथलीट्स आदि के लिए बादाम फायदेमंद स्नैक्स है.

बाबरी मस्जिद विध्वंस के 32 साल बाद निशाने पर कई अन्य स्थल

अयोध्या में बाबरी मस्जिद को ध्वस्त किये जाने के 32 साल, तथा 9 नवंबर, 2019 को, भारत के सर्वोच्च न्यायालय की पांच-न्यायाधीशों की पीठ द्वारा दिये गये अयोध्या फैसले के लगभग पांच साल बाद जिसमें राम मंदिर बनाने का फैसला सुनाया गया

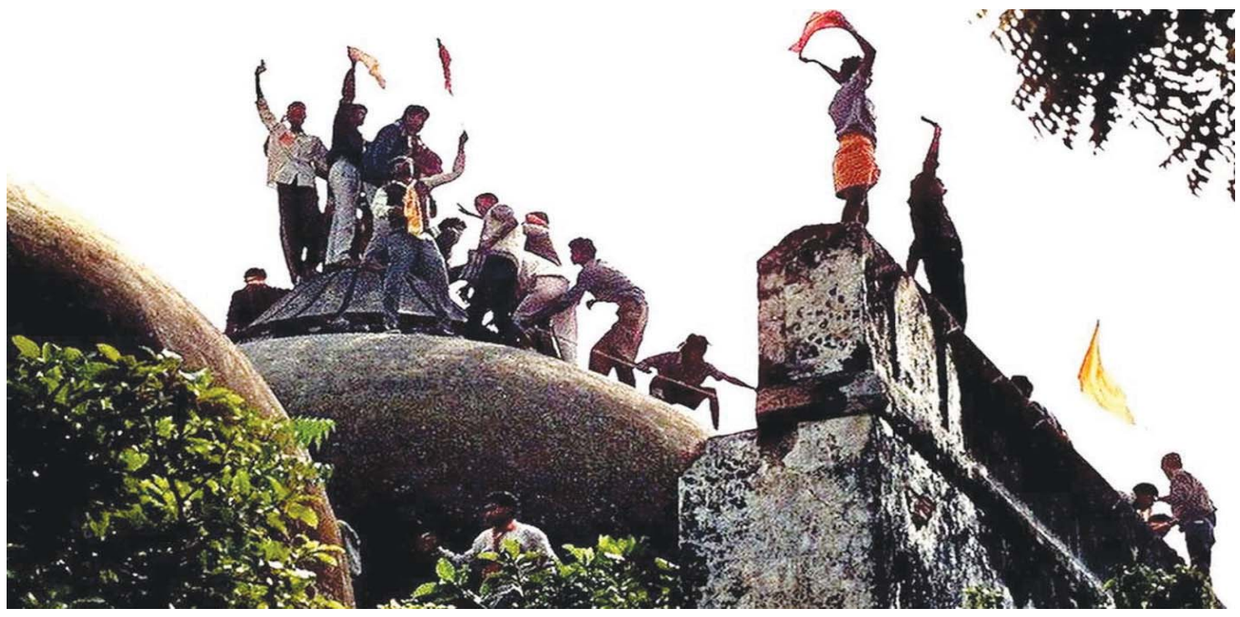

अयोध्या मामले में फैसले में कहा गया था, %कानून हमारे इतिहास और देश के भविष्य के बारे में बताता है। हम अपने इतिहास और देश के सामने आने वाली चुनौतियों से वाकिफ हैं, इसलिए आजादी अतीत के घावों को भरने का एक महत्वपूर्ण क्षण था। ऐतिहासिक गलतियों को लोगों द्वारा कानून को अपने हाथ में लेने से ठीक नहीं किया जा सकता।

अयोध्या में बाबरी मस्जिद को ध्वस्त किये जाने के 32 साल, तथा 9 नवंबर, 2019 को, भारत के सर्वोच्च न्यायालय की पांच-न्यायाधीशों की पीठ द्वारा दिये गये अयोध्या फैसले के लगभग पांच साल बाद जिसमें राम मंदिर बनाने का फैसला सुनाया गया,अनेक अन्य स्थलों को निशाना बनाया गया है। अयोध्या फैसले के तहत राम मंदिर बना और उसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 22 जनवरी, 2024 को कर भी दिया, परन्तु फैसले को आधे-अधूरे ढंग से लागू किया गया, जिसके कारण कई अन्य मस्जिदें और दरगाह नये लक्ष्य बन गये, जिससे देश भर में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक तनाव और वैमनस्य पैदा हो रहा है, जो अयोध्या के फैसले से बढ़ी उम्मीदों के विपरीत है।

2024 के भाजपा के घोषणापत्र में मंदिर के निर्माण को %लोगों का पांच-सदियों पुराना सपना% बताया गया था, जो अब सच हो गया है।

इसके बाद तो सांप्रदायिक तनाव पैदा होना और भड़कना बंद हो जाना चाहिए था, लेकिन भाजपा के वैचारिक मूल स्रोत आरएसएस और हजारों सिर वाले सांप्रदायिकतावादी अनियंत्रित हो गये, और काशी और मथुरा में मस्जिद और दरगाह को निशाना बनाया, जो उनकी पुरानी मांग थी। सोमनाथ मंदिर के निर्माण के समय अन्य मस्जिदों और दरगाहों को निशाना नहीं बनाने के लिए हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच समझौता हुआ था। अयोध्या फैसले ने भी पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम 1991 को बरकरार रखा जिसमें किसी और पूजा स्थल के चरित्र को नहीं बदलने का प्रावधान है,और जिसे धर्मनिरपेक्षता की पूर्ति घोषित किया, जो भारत के संविधान की एक बुनियादी विशेषता है।कई लक्ष्यों में, बहुप्रकाशित लक्ष्य हैं, टीले वाली मस्जिद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश; कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, कुतुब मीनार, दिल्ली; ज्ञानवापी मस्जिद, वाराणसी, उत्तर प्रदेश; कमाल मौला मस्जिद, भोजशाला परिसर, मध्य प्रदेश; शम्सी शाही मस्जिद, बदायूं, उत्तर प्रदेश; अटाला मस्जिद, जौनपुर, उत्तर प्रदेश; शाही ईदगाह मस्जिद, मथुरा, उत्तर प्रदेश; जामा मस्जिद, संभल, उत्तर प्रदेश; फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश में शेख सलीम चिश्ती की जामा मस्जिद और दरगाह; और अजमेर शरीफ दरगाह, राजस्थान। अन्य कम प्रकाशित लक्ष्य भी हैं।अयोध्या फैसले के पांच न्यायाधीश थे - जस्टिस रंजन गोगोई, एसए बोबडे, डॉ डी वाई चंद्रचूड़, अशोक भूषण और एस अब्दुल नजीर। कई पूर्व न्यायाधीशों ने जहां पर मस्जिद को ध्वस्त किया गया उस जगह पर मंदिर के निर्माण की अनुमति देने वाले इस फैसले की आलोचना की है। सुप्रीम कोर्ट के एक पूर्व न्यायाधीश जस्टिस आरएफ नरीमन ने कहा कि इस मामले में -न्याय का एक बड़ा उपहास यह हुआ कि धर्मनिरपेक्षता को उसका हक नहीं दिया गया।फिर भी, अयोध्या फैसले में पूजा स्थल अधिनियम को बरकरार रखना फैसले के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है, जहां तक सांप्रदायिक तनाव और वैमनस्य पर पूर्ण विराम लगाने का सवाल है। हालांकि, पीठ के एक न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़ ने 2022 के एस निर्णय में पूजा स्थल अधिनियम तथा भारत के संविधान के मूल उद्देश्य की अनदेखी करके एक गंभीर गलती की, जिनमें से किसी में भी सांप्रदायिक तनाव और वैमनस्य की परिकल्पना नहीं की गयी थी।काशी ज्ञानवापी मस्जिद का मामला 2022 में सुप्रीम कोर्ट की सीजेआई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली पीठ के समक्ष आया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि पूजा स्थल अधिनियम 1991 संरचना के धार्मिक चरित्र का पता लगाने पर रोक नहीं लगाता है, भले ही इसका उपयोग बदला न जा सके।इसने मस्जिदों और दरगाहों के खिलाफ मामलों की बाढ़ ला दी, जो अंतत~ सांप्रदायिक अशांति का कारण बन रहे हैं। अयोध्या फैसले में भारत की संसद के इरादों का भी उल्लेख किया गया है। इसमें केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा लोकसभा में दिये गये स्पष्टीकरण को उद्धृत किया गया है~ %हम इस विधेयक को प्रेम, शांति और सद्भाव की हमारी गौरवशाली परंपराओं को प्रदान करने और विकसित करने के उपाय के रूप में देखते हैं। ये परंपराएं एक सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं, जिस पर हर भारतीय को गर्व है। सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता अनादि काल से हमारी महान सभ्यता की विशेषता रही है।अयोध्या फैसले में पूजा स्थल अधिनियम का उद्देश्य नये विवाद पैदा नहीं करना और पुराने विवादों को नहीं उठाना है, जिन्हें लोग लंबे समय से भूल चुके हैं। फैसले में कहा गया है कि %1991 में संसद द्वारा पारित पूजा स्थल अधिनियम संविधान के मौलिक मूल्यों की रक्षा करता है और उन्हें सुरक्षित रखता है। प्रस्तावना विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था और पूजा की स्वतंत्रता की रक्षा करने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। यह मानवीय गरिमा और बंधुत्व पर जोर देती है। सभी धार्मिक विश्वासों की समानता के लिए सहिष्णुता, सम्मान और स्वीकृति बंधुत्व का एक मौलिक सिद्धांत है।पूजा स्थल अधिनियम भारतीय संविधान के तहत धर्मनिरपेक्षता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को लागू करने के लिए एक अपरिवर्तनीय दायित्व लागू करता है। इसलिए यह कानून भारतीय राजनीति की धर्मनिरपेक्ष विशेषताओं की रक्षा के लिए बनाया गया एक विधायी साधन है, जो संविधान की मूल विशेषताओं में से एक है। गैर-प्रतिगमन मौलिक संवैधानिक सिद्धांतों की एक आधारभूत विशेषता है, जिसका एक मुख्य घटक धर्मनिरपेक्षता है। इस प्रकार पूजा स्थल अधिनियम एक विधायी हस्तक्षेप है जो गैर-प्रतिगमन को हमारे धर्मनिरपेक्ष मूल्यों की एक आवश्यक विशेषता के रूप में संरक्षित करता है।अयोध्या फैसले ने %धर्मनिरपेक्षता को एक संवैधानिक मूल्य के रूप में% बरकरार रखा, एसआर बोम्मई बनाम भारत संघ मामले में सुप्रीम कोर्ट के 9 जजों की बेंच के फैसले का हवाला देते हुए। इसमें कहा गया है कि %पूजा स्थल अधिनियम आंतरिक रूप से एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के दायित्वों से संबंधित है। यह सभी धर्मों की समानता के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सबसे बढ़कर, पूजा स्थल अधिनियम एक गंभीर कर्तव्य की पुष्टि है जो राज्य पर सभी धर्मों की समानता को एक आवश्यक संवैधानिक मूल्य के रूप में संरक्षित और संरक्षित करने के लिए लगाया गया था, एक मानदंड जिसे संविधान की एक बुनियादी विशेषता होने का दर्जा प्राप्त है। पूजा स्थल अधिनियम के अधिनियमन के पीछे एक उद्देश्य निहित है।%

अयोध्या मामले में फैसले में कहा गया था, कानून हमारे इतिहास और देश के भविष्य के बारे में बताता है। हम अपने इतिहास और देश के सामने आने वाली चुनौतियों से वाकिफ हैं, इसलिए आजादी अतीत के घावों को भरने का एक महत्वपूर्ण क्षण था। ऐतिहासिक गलतियों को लोगों द्वारा कानून को अपने हाथ में लेने से ठीक नहीं किया जा सकता।

संपादकीय

किसानों को सड़क पर लाती सरकार

कृषि उत्पादों पर स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के अनुरूप सी-2 प्लस 50 प्रतिशत के फार्मूले के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य देने की मांग को लेकर दिल्ली प्रवेश कर रहे किसानों को हरियाणा स्थित शंभू बॉर्डर पर रोकने में पुलिस को चाहे सफलता मिल गयी हो लेकिन किसान नेता अगले कदम पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। उधर सड्डुप्रीम कोर्ट ने शंभू बॉर्डर खाली कराये जाने की एक जनहित याचिका को यह कहकर खारिज कर दिया कि इसी आशय की एक अर्ज़ी पहले से ही उसके समक्ष विचाराधीन है इसलिये नयी याचिका का औचित्य नहीं है। तत्काल सुनवाई की आवश्यकता से भी उसने इंकार कर दिया। इस सिलसिले में शीर्ष न्यायालय ने पहले ही शांतिपूर्ण प्रदर्शन को जनता का मौलिक अधिकार बतलाया था और प्रशासन को किसानों के साथ बातचीत कर समस्या का हल निकालने का सुझाव दिया था। बहरहाल, किसान नये सिरे से इस आंदोलन को आगे बढ़ायें। सरकार को चाहिये कि इस जायज मांग को तत्काल स्वीकार कर उन्हें संतुष्ट करे।अपने ऐलान के मुताबिक रविवार को जब हजारों की संख्या में किसानों ने अपनी ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के साथ बॉर्डर पार करने की कोशिश की तो वहां मौजूद बड़ी संख्या में पुलिस ने उन्हें रोक लेने में कामयाबी पाई। उसके पहले आंसू गैस के गोले छोड़े जिससे करीब आधा दर्जन किसान घायल हो गये। एक की स्थिति बहुत गम्भीर बताई गई है जिसे चंडीगढ़ स्थित पीजीआई में भर्ती कराया गया है। खनौरी बॉर्डर पर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का अनशन सोमवार को 14वें दिन में प्रवेश कर गया। स्वास्थ्य परीक्षण करने वाले चिकित्सकों के अनुसार उनकी सेहत लगातार खराब हो रही है। आंदोलनकारी किसानों के प्रति पहले की सी बेरुखी अपनाते हुए केन्द्र सरकार उनके साथ चालबाजियां कर रही है। शुक्रवार को आंदोलन के नेताओं से कहा गया कि वे बिना ट्रैक्टर-ट्रॉली के सरकार से मिलने आ सकते हैं परन्तु शनिवार को जब उन्होंने जाने की कोशिश की तो उन्हें यह कहकर रोका गया कि केवल 10 लोगों को ही जाने की मंजूरी है। रविवार को पुलिस और प्रशासन ने यह आरोप लगाकर उन्हें रोक दिया कि मिलने हेतु जाने वाले किसान अपना परिचय नहीं दे रहे हैं। इसी के चलते शंभू बॉर्डर पर अप्रिय स्थिति बन गयी। हालांकि किसानों ने स्वयं ही अपने कदम वापस खींच लिये और स्वीकार किया कि पुलिस ने उन्हें जाने नहीं दिया है। वे आपस में विचार कर अगला कदम तय करेंगे।केन्द्र सरकार के इस रवैये से साफ है कि वह पूर्ववत हठधर्मी बनी हुई है और वह किसानों के इस मुद्दे को लेकर कतई संजीदा नहीं है। उल्लेखनीय है कि 2020-21 में किसानों ने तीन कृषि कानूनों के खिलाफ एक साल 4 माह का आंदोलन किया था (9 अगस्त, 2020-11 दिसम्बर, 2021)। उस आंदोलन में 750 से ज्यादा किसान शहीद हुए थे। उस समय तो पुलिस ने उन्हें दिल्ली आने से रोकने के लिये बर्बरता की सारी हदें पार कर दी थीं। उत्तर भारत की कड़ाके की ठंड में उन पर पानी की बौछारें की गयीं, डंडे बरसाये गये, शरीर पर आंसू गैस के गोले फेंके गये, रबर बुलेट भी शरीर के ऊपरी हिस्सों में चलाई गयीं। इतना ही नहीं, सड़कों पर कीलें लगाई गयीं और पक्के किस्म के बैरिकेड तक लगा दिये गये थे। अभी इसी साल हुए लोकसभा चुनावों के पहले फरवरी में किसानों ने फिर से आंदोलन किया, तो सरकार व पुलिस ने अपनी जनविरोधी मानसिकता का एक और रूप दिखाते हुए हरियाणा व दिल्ली के बीच खाइयां तक खोद दी थीं।

एक तरफ केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार खुद को किसान हितैषी बतलाती है, तो दूसरी ओर वह किसानों की मांगों को पूरा करना तो दूर, उनसे बात करने के लिये तक तैयार नहीं है। किसानों द्वारा जिस प्रकार से कृषि कानूनों को वापस लेने के लिये मोदी को मजबूर किया गया, उससे लगता है कि अब सरकार ने तय कर लिया है कि वह आंदोलनकारियों से कोई संवाद नहीं करेगी। किसानों के साथ होने वाला उसका बर्ताव तो कम से कम यही दर्शाता है। कृषि कानूनों की वापसी का ऐलान करते हुए हालांकि श्री मोदी ने कहा था कि, वे किसानों से एक फ़ोन कॉल की दूरी पर हैं और वे जब भी चाहें उनसे मिल सकते हैं।

बगलबच्चा पूंजीवाद से माई-बाप पूंजीवाद तक

क्या क्रोनी कैपीटलिज्म यानी बगलबच्चा पूंजीवाद की संज्ञा पुरानी नहीं पड़ गयी है

इसी दौरान अपने बगलबच्चा पूंजीपति के बचाव के लिए, मोदी राज के अड़े रहने के सिवा और भी काफी कुछ हो रहा था, जो कम दिलचस्प नहीं था। बगलबच्चे की तरह, सत्ता का संरक्षण पा-पाकर ताकतवर हुए इजारेदार पूंजीपति के हिमायतियों का दायरा सिर्फ सत्ता में बैठी ताकतों तक ही सीमित नहीं होता है। उसकी थैलियों के मुंह सत्तापक्ष से बाहर भी संरक्षण हासिल कर लेते हैं या लिए रहते हैं।

क्या क्रोनी कैपीटलिज्म यानी बगलबच्चा पूंजीवाद की संज्ञा पुरानी नहीं पड़ गयी है? क्या विशेष रूप से भारत में हालात अब बगलबच्चा पूंजीवाद से आगे नहीं निकल गए हैं। आम तौर पर देश के राजनीतिक मंच पर और खासतौर पर संसद में पिछले कुछ समय से जो कुछ हो रहा है, उससे तो ऐसा ही लगता है। जहां तक संसद का सवाल है, अब यह करीब-करीब साफ ही हो गया है कि पूरा का पूरा शीतकालीन सत्र मोदी सरकार द्वारा अडानी के बचाव की भेंट चढ़ने जा रहा है।अमेरिका में अडानी की कंपनियों के खिलाफ प्रतिभूति बाजार नियामक तथा एफबीआई की जांच के बाद, भारत में अडानी ग्रुप की सौर बिजली की खरीद का रास्ता साफ करने के लिए, आंध्र प्रदेश समेत कई राज्यों के अधिकारियों को 2 हजार करोड़ रुपए से अधिक की रिश्वत दिए जाने के प्रकरण के अमेरिका से संबंधित मामले में आरोप तय कर मुकद्दमे की कार्रवाई शुरू किए जाने की खबर आने के बाद, संसद में विपक्ष द्वारा जोरदार तरीके से इस मुद्दे का उठाया जाना स्वाभाविक था। लेकिन, जब सरकार के और उसके आधीन नियामक एजेंसियों तथा विभिन्न जांच एजेंसियों के %अडानी जांच से परे है% की मुद्रा अपनाने से आगे बढ़कर, मोदी राज ने सदनाध्यक्षों के जरिए यह सुनिश्चित किया कि अडानी का नाम संसद में %उल्लेख से भी परे% रहना चाहिए, तभी यह तय हो गया था कि संसद के शीतकालीन सत्र में कम से कम सामान्य तरीके से काम-काज नहीं होने जा रहा है। और वही हुआ भी। शीतकालीन सत्र का आधे से ज्यादा हिस्सा, अडानी के मुद्दे पर बहस की विपक्ष की मांग और सत्तापक्ष की किसी भी कीमत पर ऐसी कोई चर्चा नहीं होने देने की जिद के बीच रस्साकशी में ही निकल गया।बहरहाल, इसी दौरान अपने बगलबच्चा पूंजीपति के बचाव के लिए, मोदी राज के अड़े रहने के सिवा और भी काफी कुछ हो रहा था, जो कम दिलचस्प नहीं था। बगलबच्चे की तरह, सत्ता का संरक्षण पा-पाकर ताकतवर हुए इजारेदार पूंजीपति के हिमायतियों का दायरा सिर्फ सत्ता में बैठी ताकतों तक ही सीमित नहीं होता है। उसकी थैलियों के मुंह सत्तापक्ष से बाहर भी संरक्षण हासिल कर लेते हैं या लिए रहते हैं। इसलिए, संसद में जब सत्तापक्ष पर अडानी प्रकरण पर बहस कराने का दबाव एक हद से ज्यादा बढ़ा, विपक्ष की कतारों में इस बगलबच्चा पूंजीवाद के संरक्षत्व को सामने आने के लिए उत्प्रेरित करना शुरू कर दिया गया। विपक्ष की कतारों में इसकी आवाजें उठनी शुरू हो गयीं कि अडानी का मुद्दा कोई सबसे जरूरी मुद्दा नहीं है। पहले शरद पवार ने गौतम अडानी से अपनी दोस्ती की सार्वजनिक स्वीकारोक्ति के जरिए, उसके लिए समर्थन को सामान्य बनाने की कोशिश की। उसके बाद, ममता बैनर्जी की तृणमूल कांग्रेस ने बाकायदा इसका ऐलान कर दिया कि संसद में उसकी प्राथमिकताएं कांग्रेस से भिन्न हैं। अडानी प्रकरण उसकी प्राथमिकता पर नहीं है। अंतत~ समाजवादी पार्टी ने भी अपनी ही प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने का राग अलापना शुरू कर दिया। इस तरह, लोकसभा चुनावों के बाद से जो नहीं हुआ था, हो गया और अडानी के ही मुद्दे पर विपक्ष की कतारों में दरारें दिखाई देने लगीं।

लेकिन, अडानी के बचाव के लिए इतना भी काफी नहीं था। इसकी एक सीधी सी वजह यह थी कि राज्यों के लिए सौर ऊर्जा की आपूर्ति के सौदे में भ्रष्टाचार का तत्व इस कदर आंखों में गड़ने वाला था कि विपक्ष की कतारों में क्रोनी पूंजीपति के सरपरस्तों की मौजूदगी के बावजूद और विपक्ष में इस मामले पर मतभेद उभर आने के बावजूद, इस मामले का दबना आसान नहीं था। इस पृष्ठभूमि में सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के अपनी बढ़ी हुई ताकत के साथ इस मुद्दे पर डटे रहने का नतीजा यह था कि विपक्ष में थोड़ी-बहुत किचकिच के बावजूद, आम तौर पर विपक्ष इस मुद्दे पर कमोबेश एकजुट ही नजर आता था और उसकी आवाज को अनसुना कर के संसद में तथा आम तौर पर राजनीतिक मंच पर सामान्य स्थिति बहाल नहीं की जा सकती थी।

अब क्रोनी पूंजीपति के बचाव की उसी दुहरी कार्यनीति का अगला और ज्यादा आक्रामक दांव शुरू किया गया। विपक्ष के स्तर पर, खासतौर पर हरियाणा और अब महाराष्ट्र की विपक्ष की चुनावी हार के बहाने से, कांग्रेस पर सीधे हमला बोल दिया गया कि वह विपक्ष का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने में असमर्थ साबित हो रही है। अब ममता बैनर्जी ने सीधे-सीधे विपक्षी कतारबंदी का नेतृत्व संभालने के लिए अपने तैयार होने का ऐलान कर दिया। चुनाव के धक्के से और अन्यान्य कारणों से भी, जिनमें बड़े धनपतियों से चुनावी चंदे हासिल करने में अपनी हिस्सेदारी भी शामिल है, कुछ अन्य विपक्षी पार्टियों ने भी ममता बैनर्जी की दावेदारी को उचित मानने की बातें करनी शुरू कर दीं। असली मकसद यही था कि लड़ाई के बीच में, इस लड़ाई में आगे-आगे चल रही कांग्रेस के, प्राय~ समूचे विपक्ष की ओर से बोलने के दावे को कमजोर किया जाए।

दूसरी ओर, सत्ताधारी भाजपा ने खुद सीधे कांग्रेस पर यह कहते हुए, सारे विधि-निषेधों को ताक पर रखते अंधाधुंध हमला छेड़ दिया कि अडानी पर हमला, अडानी पर हमला नहीं है, वास्तव में नरेंद्र मोदी के राज पर हमला है, भारत के विकास पर हमला है, आदि।

फ्रांसीसी समाचार पोर्टल, मीडियाअपार्ट की एक कथित रूप से खोजी रिपोर्ट के बहाने से और उसके निष्कर्षों पर, अपने ही दावे थोपते हुए, स्वतंत्र मीडिया संस्थान आर्गनाइज्ड क्राइम एंड करप्शन रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट (ओसीसीआरपी) की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करने से आगे बढ़कर, उसकी फंडिंग के बहाने उसे जॉर्ज सोरोस से लेकर, अमरीकी विदेश विभाग तक, भारत विरोधियों का हथियार% तो करार दिया ही गया, कांग्रेस को इस भारत-विरोधी षड्यंत्र का कर्ताधर्ता बना दिया गया। और यह सब किसलिए? गौतम अडानी को बचाने के लिए! इसके बहाने से सत्ताधारी पार्टी ने संसद के दोनों सदनों की कार्रवाई ठप्प करने की जिम्मेदारी खुद ही संभाल ली। इस सब के दूरगामी राजनीतिक नतीजों का तो अभी अनुमान ही लगाया जा सकता है। लेकिन, कांग्रेस के खिलाफ अपने हमले को सत्ताधारी पार्टी ने जिस स्तर पर पहुंचा दिया है, वहां से शेष शीतकालीन सत्र का इसी गतिरोध में निकल जाना तय लगता है।

इसके साथ ही यह गौरतलब है कि मोदी राज किस तरह अडानी को बचाने के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है? विपक्ष और उसमें भी खासतौर पर कांग्रेस पर उसका हमला करना तो फिर भी समझ में आ सकता है, लेकिन जिस तरह से इस हमले में अमरीकी शासन तथा राज्य को भी घसीट लिया गया है, वह उसकी बदहवासी को ही दिखाता है। बेशक, इसके लिए विपक्ष को ही नहीं, अमेरिका को भी गाली देकर, वे भारत में अपनी कतारों को यह समझाने में मदद मिलने की उम्मीद कर सकते हैं कि क्यों उनका अडानी को बचाना देश के लिए जरूरी है, वगैरह। लेकिन, उनकी अपनी कतारों से भी यह विडंबना पूरी तरह से छुपी तो नहीं रह सकती है कि %भारत के विरुद्ध विदेशी षड्यंत्र% का यह बहाना एक ऐसी सरकार बना रही है, जो सबसे ज्यादा अमेरिका के इशारों पर चलने वाली सरकार रही है। %विदेशी हाथ% के इंदिरा गांधी के नारे का इस्तेमाल करने की कोशिश अब एक ऐसी सरकार कर रही है, जो अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव तक में अपनी भूमिका तलाश करती आई है।

इस सबसे तो ऐसा ही लगता है कि बात क्रोनी कैपीटलिस्ट यानी बगलबच्चा पूंजीपति पर कृपा बनाए रखने, उसे मुसीबतों से बचाने से बहुत आगे निकल चुकी है। अब हम माई-बाप पूंजीवाद या ओनर कैपीटलिज्म के कारनामे देख रहे हैं। क्रोनी यानी बगलबच्चे को एक हद तक ही बचाया जा सकता है। बात उस हद से आगे चली जाए, तो उसे डूबने के लिए छोड़ा भी जा सकता है। लेकिन, माई-बाप पूंजीपति तो माई-बाप पूंजीपति है, उसे बचाने के लिए तो किसी भी हद तक जाना होगा, कुछ भी करना होगा। अब अडानी और मोदी निजाम का ठीक ऐसा ही रिश्ता है। मोदी निजाम को अडानी को बचाने के लिए खुद डूबना भी पड़ा तो, खुद डूबकर भी बचाने की कोशिश करेगा। यह दूसरी बात है कि इसमें पूरे शक की गुंजाइश है कि अडानी, मोदी निजाम के लिए ऐसी ही कुर्बानी देने के लिए तैयार होगा।

हिन्दू धर्म में बहुत महत्व रखता है खरमास

खरमास हिन्दू धर्म और ज्योतिष में बहुत महत्व रखता है, क्योंकि किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत करने से पहले शुभ समय या मुहूर्त जरूर देखा जाता हैं। साथ ही सूर्य के चाल भी देखते हैं, क्योंकि सूर्य जब धनु और मीन राशि में आते हैं तब खरमास लग जाता है। अतः शुभ कार्यों को करने की मनाही है। खरमास से संबंधित 20 खास नियम, जिनका पालन करना है आवश्यक

- खरमास 16 दिसंबर 2022 से 14 जनवरी 2022 तक जारी रहेगा। अत: इस समय में सगाई, शादी, वधु प्रवेश, गृह प्रवेश, घर निर्माण, नया व्यापार का आरंभ तथा किसी भी तरह का कोई भी मांगलिक कार्य ना करें।
- खरमास में पूरे महीने में सूर्योदय से पहले उठकर स्नानादि करके प्रतिदिन चढ़ते सूरज को अर्घ्य अर्पित करें, यह सेहत, समृद्धि के लिए लाभदायी रहेगा और ऐसा करने से शुभ फल भी मिलेगा।
- इस महीने भगवान श्री कृष्ण के प्रसन्न करने के लिए गौशाला जाकर गौमाता को गुड़, हरा चना खिलाएं और उनका पूजन करें।
- यदि गौशाला जाना प्रतिदिन संभव ना हो तो घर में गाय की मूर्ति या तस्वीर लगाकर उसका पूजन करें।
- खरमास के महीने में आप जितने असहाय और गरीबों की मदद करेंगे उतना लाभ मिलेगा, क्योंकि खरमास ही एक ऐसा महीना है जिसमें दान और पुण्य करने का सबसे अधिक फल मिलता है।
- प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर श्री विष्णु का केसर मिले दूध से अभिषेक करें और कम से कम 11 बार विष्णु मंत्र- 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय नमः' का तुलसी की माला से जाप करें।
- खरमास को मलमास भी कहा जाता है। इस माह आने वाली सभी एकादशियों का व्रत-उपवास करके भगवान श्री विष्णु का पूजन करें और उन्हें तुलसी के पत्तों के साथ खीर का भोग लगाएं।
- हिन्दू धर्म में इस महीने को शुभ नहीं माना जाता है। अतः हिन्दू धर्म के विशिष्ट व्यक्तिगत संस्कार भी निषेध हैं, जैसे नामकरण, यज्ञोपवीत, शुभ विवाह और कोई भी धार्मिक संस्कार नहीं करें।
- जिनकी कुंडली में सूर्य कमजोर स्थिति में हो उन्हें सूर्यदेव का पूजन, अर्घ्य, उपासना आदि इस माह अवश्य करना चाहिए।
- इस माहपर्यंत श्री विष्णु का पूजन करके तीर्थस्थान पर जाकर स्नान-दान करने का भी विशेष महत्व है।
- इस महीने नई वस्तुएं, नया घर, प्लॉट, घर अथवा कार या इलेक्ट्रॉनिक सामान की खरीदारी नहीं करनी चाहिए।
- नौकरी अथवा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए खरमास की नवमी तिथि को छोटी कन्याओं को भोजन करवाएं, यह पुण्य फलदायी कार्य होगा।
- इस माह में बुरे अथवा कुविचारों को त्यागें, बुरी आदतें और नशे की लत हो तो छोड़ दें, दुराचार आदि का भी त्याग करके धार्मिक कार्यों में मन लगाएं।
- इस महीने में प्रतिदिन सूर्यदेव की उपासना करके आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।
- इस माह सायंकाल के समय सूर्यदेव की आराधना करने से जहां जीवनपर्यंत भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है, वहीं अन्न, जल आदि किसी भी वस्तु की जीवन में कमी नहीं रहती।
- यश-कीर्ति की चाह रखने वालों को, उत्तम स्वास्थ्य, शिक्षा, संतान और करियर में सफलता के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल में उग रहे लाल सूर्यदेव को अरघ्य दें।
- इस महीने अपने इष्टदेव की पूजा-अर्चना और सेवा करने तथा दान-पुण्य देने से पुण्य का संचय होता है।
- खरमास में पीपल वृक्ष का पूजन करना शुभ फलदायी माना जाता है, क्योंकि पीपल में भगवान श्री विष्णु का वास माना जाता है।

ज्ञान का अद्भुत भंडार है श्रीमद्भगवद्गीता

- श्रीमद्भगवद्गीता एक दिव्य ग्रंथ है। गीता मरना सिखाती है, जीवन को तो धन्य बनाती ही है। यह हमें पलायन से पुरुषार्थ की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है।
- श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दुओं के पवित्रतम ग्रंथों में से एक है।
- गीता जयंती मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को मनाई जाती है।
- गीता केवल धर्म ग्रंथ ही नहीं यह एक अनुपम जीवन ग्रंथ है। जीवन उत्थान के लिए इसका स्वाध्याय हर व्यक्ति को करना चाहिए।
- श्रीमद्भगवद्गीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है।
- श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्याय हैं और महाभारत का युद्ध भी 18 दिन ही चला था।
- अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था।
- गीता में कर्तव्य को ही धर्म कहा है। भगवान कहते हैं कि अपने कर्तव्य को पूरा करने में कभी भी लाभ-हानि का विचार नहीं करना चाहिए।
- गीता के 700 श्लोकों में हर उस समस्या का समाधान है, जो हर इंसान के सामने कभी न कभी आती हैं।
- गीता एकमात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसकी जयंती मनाई जाती है।

भगवान ने अर्जुन को निमित्त बनाकर, गीता के ज्ञान द्वारा विश्व के मानव को पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी है।

गीता कहती है कि जीवन रोने के लिए नहीं, भाग जाने के लिए नहीं है, हंसने और खेलने के लिए हैं। यह हमें संकटों से, हिम्मत से लड़ने की प्रेरणा देती है। गीता मानव मात्र को जीवन में प्रतिक्षण आने वाले छोटे-बड़े संग्रामों के सामने हिम्मत से खड़े रहने की शक्ति देती है। श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान का अद्भुत भंडार है। हम हर काम में तुरंत नतीजा चाहते हैं लेकिन भगवान ने कहा है कि धैर्य के बिना अज्ञान, दुख, मोह, क्रोध, काम और लोभ से निवृत्ति नहीं मिलेगी। आइए जानें खास बातें.

खरमास में करें सूर्य देव की उपासना

क्यों खरमास में मंगल कार्यों (शादी-विवाह, मुंडन, जनेऊ संस्कार, नूतन गृह प्रवेश इत्यादि) को करना उत्तम नहीं बताया गया है। गुरु का ध्यान सूर्य देव पर रहता है। खरमास में धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, किंतु मंगल शहनाई नहीं बजती। खरमास 15 जनवरी की रात तक रहेगा। काशी पंचांग के अनुसार सूर्य जब गुरु की राशि धनु या मीन में विराजमान रहते हैं, तो उस घड़ी को खरमास माना जाता है और

में जनेऊ संस्कार, मुंडन संस्कार, नव गृह प्रवेश, विवाह आदि नहीं करना चाहिए। इसे शुभ नहीं माना गया है, वहीं विवाह आदि शुभ संस्कारों में गुरु एवं शुक्र की उपस्थिति आवश्यक बताई गई है। ये सुख और समृद्धि के कारक माने गए हैं। खरमास में धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, किंतु मंगल शहनाई नहीं बजती। इस माह में सभी राशि वालों को सूर्य देव की उपासना अवश्य करनी चाहिए।

गुरु का ध्यान सूर्य देव पर

इसका एक धार्मिक पक्ष यह भी माना जाता है कि सूर्य देव जब बृहस्पति के घर में प्रवेश करते हैं, तो देव गुरु का ध्यान एवं संपूर्ण समर्पण उन पर ही केंद्रित हो जाता है। इससे मांगलिक कार्यों पर उनका प्रभाव सूक्ष्म ही रह जाता है जिससे कि इस दौरान शुभ कार्यों का विशेष लाभ नहीं होता इसलिए भी खरमास में मंगल कार्यों को करना उत्तम नहीं बताया गया है।

क्या होता है मासिक कार्तिगाई दीपम

इस दिन भगवान शिव और कार्तिकेय की पूजा करने से जीवन में नकारात्मकता शक्ति का नाश होकर सकारात्मक ऊर्जा और प्रकाश का संचार होने लगता है। भगवान कार्तिकेय की कृपा से परिवार में सबकुछ कुशल मंगल रहता है। कहते हैं कि यह पर्व ब्रह्मा और विष्णु की उस प्रतियोगिता से जुड़ा है जिसमें वे दोनों शिवजी को अपनी श्रेष्ठता का परिचय देने के लिए एक ज्योति स्तंभ के अंतिम छोर को देखने के लिए जाते हैं। कार्तिगाई दीपम पर भगवान शिव के इसी ज्योति स्वरूप का पूजन किया जाता है।

- इस दिन भगवान शिव के दिव्य ज्योति स्वरूप की पूजा होती है। इस दिन पंक्तिबद्धि तरह से दीपक जलाते हैं।
- प्रातः काल उठने के बाद स्नानादि से निवृत होकर व्रत संकल्प लें। इसके बाद भगवान शिवजी की पूजा-उपासना और आरती करें।
- यदि आप दिनभर निराहार उपवास करने में सक्षम नहीं हैं तो फलाहार कर सकते हैं।
- संध्याकाल में शुभ मुहूर्त में दीप प्रज्वलित करके भगवान शिव का आह्वान करें और पुनः उनकी पूजा और अरती करें।
- अगले दिन प्रातः भगवान की पूजा-अरती करने के बाद स्वयं भोजन ग्रहण करके व्रत का पारणा करें।

हिंदी पंचांग के अनुसार हर माह की त्रयोदशी को दक्षिण भारत में कार्तिगाई दीपम का पर्व मनाया जाता है। मार्गशीर्ष माह में इसका खासा महत्व रहता है। इस दिन सूर्यास्त के पश्चात दीप जलाकर भगवान शिव और उनके पुत्र कार्तिकेय की पूजा की जाती है। इस दिन का नाम कर्तिका नक्षत्र से लिया गया है, क्योंकि इस दिन कृतिका नक्षत्र प्रबल रहता है।

शनिदेव को समर्पित रत्न है नीलम

ज्योतिष मान्यताओं के अनुसार नीलम रत्न व्यक्ति को रंक से राजा बना सकता है। यह रत्न शनिदेव को समर्पित होता है। इस रत्न को हर कोई धारण नहीं कर सकता है। जहां ये रत्न रंक से राजा बना देता है वहीं अशुभ होने पर ये रत्न राजा को भी रंक बना सकता है। ज्योतिष गणनाओं के अनुसार नीलम रत्न को धारण करने से पहले कुंडली का विचार करना जरूरी होता है।

नीलम रत्न के फायदे

- जिन लोगों के लिए नीलम शुभ होता है उन्हें इसका तुरंत फायदा दिखने लगता है।
- स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।
- धन- लाभ होने लगता है।
- नौकरी और व्यापार में तरक्की होने लगती है।
- शनि की वक्री चाल से इन राशियों को हो रहा है फायदा, जानें क्या आप भी हैं इस लिस्ट में शामिल

नीलम रत्न के अशुभ होने पर इन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है

- नीलम हर किसी को शुभ फल नहीं देता है। जिन लोगों के लिए ये शुभ नहीं है, उन्हें स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।
- धन- हानि हो सकती है।
- कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती है।

ऐसे करें पहचान नीलम आपके लिए शुभ है या नहीं

नीलम रत्न को धारण करने से पहले उसको तकीया के नीचे रखकर सोएं। अगर आपको रात में कोई भी बुरा स्वप्न नहीं आता है और अच्छी गहरी नींद आती है तो इसका मतलब है ये रत्न आपके लिए शुभ है। अगर आपको अच्छी और गहरी नींद नहीं आती है तो इस रत्न को धारण न करें। रत्न धारण करने के बाद अशुभ घटना होने पर इस रत्न को तुरंत उतार दें।

बंद किस्मत खोल सकती हैं मिट्टी ये तीन चीजें

प्राचीन काल से ही मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल होता आ रहा है। हालांकि वर्तमान समय में मिट्टी के बर्तनों की जगह प्लास्टिक या अन्य धातु से बने बर्तनों ने ले ली है। लेकिन आज भी सजावट के लिए ज्यादातर लोग मिट्टी से बनी चीजों का प्रयोग करते हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मिट्टी के बर्तन व्यक्ति की बंद किस्मत को जगा सकते हैं। विद्वानों के अनुसार, घर पर मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल शुभ माना जाता है। कहते हैं कि ऐसा करने से नकारात्मकता दूर होती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। जानिए वास्तु में किन तीन मिट्टी की चीजों को घर पर रखना शुभ माना जाता है।

मिट्टी का घड़ा

वास्तु के अनुसार, मिट्टी का घड़ा रखने से सुख-समृद्धि घर आती है। मिट्टी का घड़ा सदैव उत्तर दिशा की ओर रखना चाहिए। इसके साथ ही घड़े को कभी खाली नहीं छोड़ना चाहिए। मान्यता है कि घर पर मिट्टी का घड़ा रखने से सुख-समृद्धि का वास होता है। आपको बता दें कि आज भी आयुर्वेदाचार्य मिट्टी के घड़े का पानी सेहतमंद बताते हैं।

मिट्टी का प्रतिमाएं

वास्तु शास्त्र के मुताबिक, पूजा स्थल पर मिट्टी से बनीं देवी-देवताओं की प्रतिमाएं रखना शुभ हता है। इसलिए घर के मंदिर में हमेशा मिट्टी से बनी देवी-देवताओं की मूर्ति रखनी चाहिए। इन प्रतिमाओं को हमेशा घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व दिशा) या दक्षिण-पश्चिम दिशा में ही रखना चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

मिट्टी का दीपक

वर्तमान समय में पूजा स्थल पर मिट्टी के दीपक का बहुत कम लोग इस्तेमाल करते हैं। मिट्टी के दीपक की जगह धातु से बने दीपक का इस्तेमाल होता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मिट्टी से बने दीपक को घर पर जलाना शुभ होता है। कहते हैं कि ऐसा करने से घर पर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

विंटर में रहें ड्राई आई से एलर्ट

सर्दी का मौसम हर लिहाज से अच्छा माना जाता है, फिर चाहे वह स्वास्थ्य के लिहाज से हो या फिर फैशन के लिहाज से। जहां आप बिना डरे हर तरह का खाना खाने से खुद को रोक नहीं पाते, वहीं फैशन करने में भी यह मौसम आड़े नहीं आता, लेकिन कुछ ऐसी समस्याएं हैं, जो इस मौसम में परेशान कर सकती हैं और वह है आंखो में सूखेपन की समस्या यानी ड्राई आई की प्रॉब्लम। जी हां, ड्राई आई का मतलब वैसी आंख से है, जब आंख में स्थित आंसू ग्रंथियां पर्याप्त आंसू का निर्माण नहीं कर पाती। यह समस्या सर्दी के मौसम में ज्यादा होती है। यह बीमारी कनेक्टिव टिशू के डिसआर्डर होने से होती है। यह समस्या अधिक होने की स्थिति में आंख की सतह को नुकसान पहुंचा सकती है और जिसके परिणामस्वरूप अंधेपन की समस्या भी हो सकती है। इस समस्या से ग्रसित व्यक्ति में कई तरह के लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

लक्षण

आंखों में सूखेपन जैसा महसूस होना, आंखों में खुजली एवं जलन का एहसास, हर वक्त आंखों को मलते रहना, ऐसा महसूस होना कि जैसे की आंखों में कंकड़ घुस गया हो, आंखों से बिना कारण पानी का निकलते रहना, बिना कारण आंखों का थक जाना या सूजन के फलस्वरूप सिकुड़कर छोटा हो जाना।

कारण

मौसम के अलावा आंखों के ड्राई होने के और भी कई कारण हो सकते हैं। विटामिन सी की कमी के कारण, महिलाओं में मेनोपॉज के बाद, कुछ दवाओं जैसे सल्फा ग्रुप इत्यादि के एलर्जी रीएक्शन के कारण, एलर्जी की समस्या से ग्रसित होने पर कुछ बीमारी जैसे की थॉयरायड जैसी समस्या होने पर, लंबे समय तक बिना पलक झपकाएं कंप्यूटर पर काम करते रहने से अधिक देर तक टीवी देखने से व उच्च स्तर के प्रदूषण के कारण।

समाधान

ड्राई आई की बढ़ती समस्याओं को देखते हुए उपचार के तौर पर अभी तक केवल आंखों में चिकनाई उत्पन्न करने वाला ड्राप बना है, लेकिन इस दिशा में और भी कुछ नए संभावित विकल्प के तौर पर उभर कर सामने आएं हैं। अब साइकलो स्पोरिन ड्राप जो कि रोगी के इमेन्यू सिस्टम के साथ काम करते हैं। रोगियों में कनेक्टिव-टिशू डिसआर्डर होने पर उनको वायरायड पैबौलॉजी करनी चाहिए। यह 40- 50 प्रतिशत मामलों में मददगार हो रहा है। यह आंखों में चिकनाई लाने वाली आई ड्राप्स की आवश्यकता को कम करता है। दूसरा विकल्प पंकटल प्लग का है। यह काफी छोटी प्लग होती है, जो आंसू के श्राव को बंद कर देती है। यह मुलायम सिमीकन की बनी होती है तथा इसे आसानी से लगाया जा सकता है। यह आंसूओं को रोकने में मदद करती है, जिससे की आंखों में नमी बरकरार रहें। इसके अलावा इस समस्या से ग्रसित लोगों को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए। आंखों को डायरेक्ट हवा के संपर्क में न आने दें। इससे बचने के लिए चश्मे का इस्तेमाल करें। कंप्यूटर पर काम करने के दौरान बीच-बीच में पलक झपकाना नहीं भूलें। यदि कॉन्टेक्ट लेंस का इस्तेमाल कर रहे हैं तो एक बार अपनी आंखों के डॉक्टर के पास जाएं। हेयर ड्रायर, कार हिटर, एसी ब्लोअर और पंखे से आंख को दूर रखें। धूप में जाने से पहले आंखों को कवर करना न भूलें। सर्दी के मौसम में कमरे को गर्म रखने वाले उपकरणों से आंखों को बचाएं। इसके लिए हीटर के पास एक मग पानी रख दें, ताकि रूम में नमी बनी रहें। कुछ लोग विशेष प्रकार के डिजायन किए गए ग्लास का उपयोग करते है। यह आंखों के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है। आंखों में जलन या खुजली महसूस होने पर इसे रगड़ने के बजाए आंखों पर ठंडे पानी से छींटे मारे।

■ डॉ. प्रतीप व्यास

सुबह-सुबह करें ये 4 काम नहीं बढ़ेगा बेली फैट

आप वजन कम करने की सोच रहे हैं तो सुबह कुछ बातों का ध्यान रखें। खास कर अगर आप बेली फैट कम करने की सोच रहे हैं तो आपको सुबह-सुबह हेल्दी खाना खाने के साथ एक्सरसाइज पर भी ध्यान देना होगा। सर्दियों की तुलना में गर्मियों में वजन कम करना अधिक आसान है, क्योंकि इस मौसम में अधिक व्यायाम किया जा सकता है। इसके अलावा आप इस मौसम में पानी और फल जैसे तरबूज और खरबूज लेते हैं, जो वजन कम करने में मदद करते हैं। यहां हम आपको बता रहे हैं, ये टिप्स जिनका आपको सुबह के समय ध्यान रखना चाहिए:

1. सुबह एक्सरसाइज करने से कैलोरी बर्न करने में बहुत मदद मिलती है। इसलिए सुबह उठकर व्यायाम जरूर करना चाहिए।

2. सुबह-सुबह उठकर पानी पीने से वजन कम करने में मदद तो मिलती है साथ ही हेल्दी भी रहते हैं।

3. ब्रेकफास्ट में प्रोसेस फूड का इस्तेमाल न करें। इसके अलावा प्रीजर्वेटिव और शुगर से संबंधित चीजें भी ब्रेकफास्ट में नहीं लेनी चाहिए।

4. किसी भी स्थिति में सुबह का ब्रेकफास्ट नहीं छोड़ना चाहिए। एक्सपर्ट की मानें तो इससे आपके शरीर का फैट बर्निंग प्रोसेस कम हो जाता है।

प्याज का सूप

सामग्री

- 4 प्याज
- बटर: 2 चम्मच
- 1 गाजर
- पानी: 1 लीटर
- अजवायन: 2 चम्मच
- 2 लहसुन
- 2 आलू
- वेजिटेबल (अपनी पसंद के अनुसार): 1 कप
- नमक: स्वाद के अनुसार
- शक्कर: स्वाद के अनुसार
- काली मिर्च: स्वाद के अनुसार

विधि

प्याज, लहसुन, आलू और गाजर को छोटे- छोटे टुकड़ों में काट लें। इसके बाद मध्यम आंच पर पैन में बटर गर्म कर लें। जब बटर मेल्ट हो जाए तो उसमें प्याज और लहसुन के टुकड़े डाल दें। हल्का ब्राउन होने तक भूनें। इसके बाद मीडियम फलेम पर पानी गर्म करें। इसके बाद उसमें अजवायन और बाकी की सब्जियां डाल दें। साथ में शक्कर, नमक और काली मिर्च डालकर अच्छे से चलाएं। इसके बाद इसे 2 से 3 मिनट तक अच्छे से मिलने दें। जब यह उबलने लगे तो इसमें प्याज और लहसुन का पहले से तैयार किया हुआ मिक्सचर डाल दें। अब पैन में आलू और गाजर के टुकड़े डालें। इसके बाद मध्यम आंच पर 15 मिनट तक इसे पकाएं। जब यह पक जाए तो इसकी प्यूरी तैयार कर लें। अब दूसरे पैन में इस प्यूरी को डालकर 5 मिनट तक चलाएं। अब गर्मागर्म सर्व करें।

नूरी गोभी

सामग्री

■ गोभी: 1 किलो ■ नमक: स्वादानुसार ■ तेल: 150 मिली ■ तेजपत्ता: 6 ■ हरी इलायची: 6 ■ विनिगर: 2 चम्मच ■ जावित्री पाउडर: 1/ 2 चम्मच ■ नीबू का रस 2 चम्मच ■ अदरक-लहसुन पेस्ट: 2 चम्मच ■ कटा हुआ प्याज: 4 ■ कटा हुआ टमाटर: 3 ■ हल्दी पाउडर: 1 चम्मच ■ लाल मिर्च पाउडर: स्वादानुसार ■ पानी आवश्यकतानुसार ■ गरम मसाला पाउडर: 2 चम्मच ■ हरी मिर्च: 5 ■ कटी हुई धनिया पत्ती: 4 चम्मच ■ कटा हुआ लहसुन: 4 चम्मच ■ भुना हुआ काजू 150 ग्राम

विधि

गोभी को धोकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। एक कढ़ाई में तेल गर्म करें और उसमें कटा हुआ लहसुन और प्याज डालकर सुनहरा होने तक भूनें। अदरक और लहसुन का पेस्ट और गोभी कढ़ाई में डालें और कढ़ाई को ढक दें। लगभग 10 मिनट बाद कढ़ाई में विनिगर, नीबू का रस और सभी पाउडर मसाला डाल दें। कुछ देर तक धीमी आंच पर पकाएं। भुने हुए काजू और धनिया पत्ती से सजा कर सर्व करें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। शुभांक-3-8-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। शुभांक-5-6-7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-6-7-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। सच्चाई का सहारा लें कार्यसिद्धि होगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। समय आपके पक्ष का बना रहेगा। शुभांक-3-7-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-2-6-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शुभांक-3-7-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। शुभांक-4-8-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। शुभांक-3-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। शुभांक-4-6-7

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार मिलेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। शुभांक-3-6-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): किसी से कहा सुनी न हो यही ध्यान रहे। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती हैं। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। शुभांक-4-6-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। सब्र का फल मीठा होता है अत:धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। कर्म प्रधान विचार धारा बनाये रखें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। मनोबल ऊंचा रखें काम में लगे रहें लाभ होगा। विपरीत परीस्थितीयों में भी हानि नहीं होगी। शुभांक-5-7-8

काकुरो पहेली - 2674

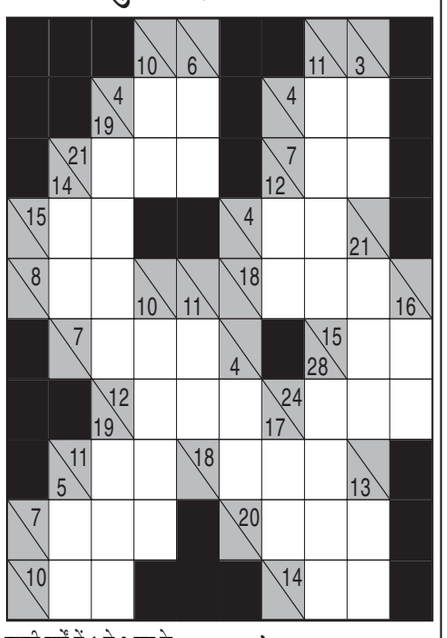

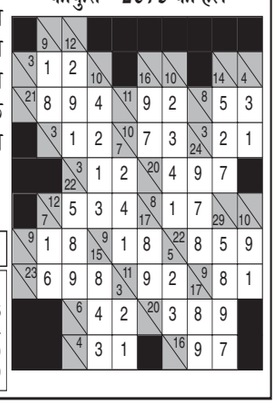

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

5+6+7+8+9=35
4+6+7+8+9=34
5+7+8+9=29
6+7+8+9=30

काकुरो - 2673 का हल

हंसी के फूव्वारें

तुम्हारे घर में किसका शासन चलता है ?

अपनी जगह सभी शासन करते हैं.

वह कैसे ?

मेरी पत्नी बच्चों पर शासन करती है, बच्चे नौकरों को डांटते रहते हैं और मैं कुत्ते-बिल्लयों को झिड़कता रहता हूँ.

□ □ □

मोहन तुम आजकल स्कूल में कैसे चल रहे हो ?

मोहन बोला- वाह पापाजी, मैं कभी आपसे आपके ऑफिस के बारे में बात करता हूँ ?

□ □ □

थका हुआ पति: आज शाम का घूमना तो रद्द करो.

पत्नी: आप तो सवेरे से ही कह रहे थे मैं तो तभी से मेकअप कर रही थी अब पूरा हुआ तो आप मना करने लगे.

□ □ □

दस साल के एक लड़के का दांत निकालने के बाद डॉक्टर ने उसके बाप से कहा-लाओ पांच रुपये.

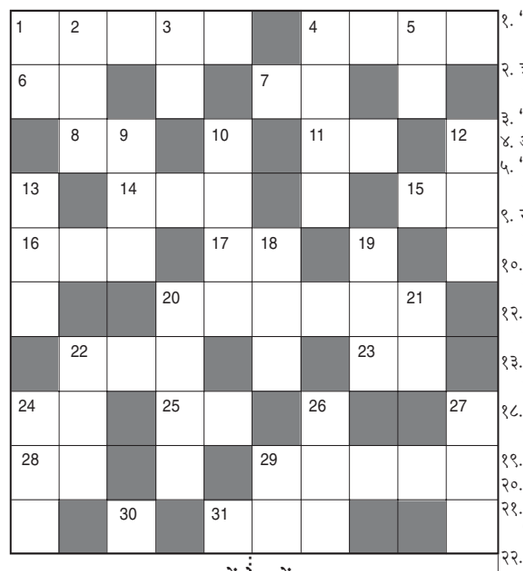

पांच रुपये ? मगर आपने तो पहले कहा था कि आप दांत उखाड़ने का एक रुपया लेते हैं.

ठीक है, मगर आपके लड़के की चिल्लाहट सुनकर दांत उखड़वाने के लिए आये हुए मेरे चार रोगी भी तो चले गये.

फिल्म वर्ग पहेली- 2674

बायें से दायें:-

१. अमिताभ, जया की 'ये जुल्फ कैसी है' गीत वाली फिल्म-२,१,२
४. 'सीमायें बुलाये तुझे' गीत वाली जे.पी.दत्ता की युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी एक मल्टीस्टारर फिल्म-२,१,१
६. फिल्म 'साया' में नायिका कौन थी-२
७. 'झमका चाँदी दा' गीत वाली मनोज, अरशद, तब्बू, शीबा की फिल्म-२
८. अभिषेक, अंतरा माली की 'बेरंग जिंदगी' गीत वाली फिल्म-२
११. फिल्म 'जीवनमृत्यु' में नायिका थी-२
१४. 'तुम तो परदेसी हो' गीत वाली फराजखान, रानी मुखर्जी की फिल्म-३
१५. अमिताभ, अजय, अक्षय, ऐश्वर्या की 'दिल डूबा' गीत वाली फिल्म-२
१६. 'आज मदहोश हुआ जाये' गीत वाली शशिकपूर, राखी की फिल्म-३
१७. संजय कपूर, रवीना, अदिति की 'हंसता है रूलता' गीत वाली फिल्म-२
२०. 'सनन सनन साय साय हो' गीत वाली गोविंदा, रमैया की फिल्म-४,२
२२. सनी देओल, अमीषा पटेल की 'घर आजा परदेसी' गीत वाली फिल्म-३
२३. 'तू कल चला' गीत वाली संजयदत्त, कुमार गौरव, पूनम ढिल्लों की फिल्म-२
२४. जैकी, सुनील शेट्टी, डिनो, करिश्मा की 'ऐ सुबह तू' गीत वाली फिल्म-२
२५. 'हुस्ने जाना इधर आ' गीत वाली राजेंद्रकुमार, वैजयंती की फिल्म-२
२८. देवआनंद, गीता बाली की 'चांदनी रातें प्यार की' गीत वाली फिल्म-२
२९. 'जिनके पास हाथी घोड़ा' गीत वाली राजकुमार, लीना की फिल्म-२,१,२
३०. जीतेंद्र, जयाप्रदा की 'आईने के सौ टुकड़े' गीत वाली फिल्म-१
३१. 'लड़की जो आए बाजार में' गीत वाली जैकी श्रॉफ, मनीषा की फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. 'नदिया किनारे आआ' गीत वाली संजय दत्त, आफताब, नंदिता की फिल्म-२
२. ऋषिकपूर, माधुरी दीक्षित की 'जाने वो कैसा चोर था' गीत वाली फिल्म-३
३. 'आजकल पाँव जमीं पर' गीत वाली फिल्म-२
४. अक्षय, करीना कपूर, प्रियंका की फिल्म-४
५. 'दिल दिया है तुझे' गीत वाली अतीन भल्ला, संदली सिन्हा की फिल्म-२
९. राहुल बोस, करीना कपूर की 'जाने क्यूं हमको' गीत वाली फिल्म-३
१०. राजकपूर, परवीन की 'आपसा कोई हसीन' गीत वाली फिल्म-२,२
१२. 'तोता मैना की कहानी' गीत वाली शशिकपूर, शबाना की फिल्म-३
१३. मिलिंद सोमण, किरण झवेर की 'जीना है तेरी' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'सुलगे हुए हैं' गीत वाली जिमी, इरफान, ऋषिता, नम्रता की फिल्म-३
१९. फिल्म 'अवतार' में राजेश की नायिका ?-३
२०. 'नहीं ये हो नहीं सकता' गीत वाली फिल्म-४
२१. अमिताभ, जैकी, कैटरीना, मधु, सीमा की 'आई सी यू बेबी' गीत वाली फिल्म-२
२२. 'रंग और नूर की बारात' गीत वाली सुनीलदत्त, मीना कुमारी की फिल्म-३
२४. नसीर, फारूख शेख, स्मिता की फिल्म-३
२६. 'बोल गोरी बोल' गीत वाली सुनीलदत्त, नूतन की फिल्म-३
२७. शाहरूख, माधुरी की 'तू सामने जब आता है' गीत वाली फिल्म-३
२९. 'हम प्यार करने वाले' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2673

सूडोकु -2674

		4			9			
	2			8	4			
8						3		
							9	4
	3						7	
5	6							
		7						9
			2	5			8	
			6			2		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2673 का हल

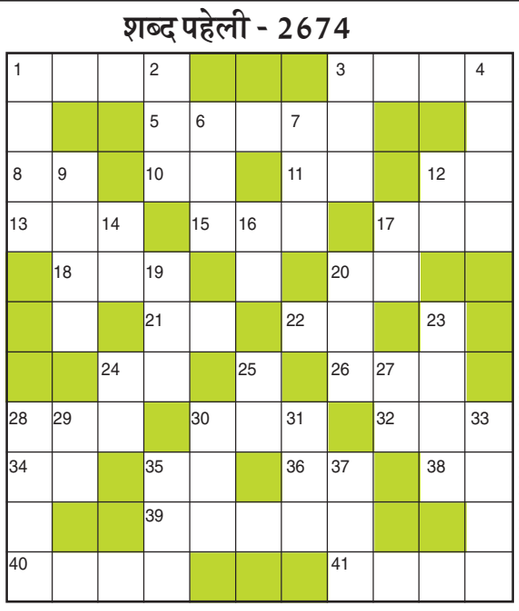

5	9	1	2	8	4	3	6	7
6	4	2	3	5	7	9	1	8
8	3	7	9	6	1	4	2	5
4	7	5	8	2	6	1	9	3
3	6	9	7	1	5	8	4	2
1	2	8	4	3	9	7	5	6
7	5	6	1	9	8	2	3	4
9	8	3	5	4	2	6	7	1
2	1	4	6	7	3	5	8	9

शब्द पहेली - 2674

बाएँ से दाएँ

1.पक्षियों का शोर-4
3.मुठभेड़,भिड़ंत-4
5.क्रोधित होवा-5
8.लाश,पार्थिव देह-2
10.नवीन-2
11.सरिता-2
12.संजय दत्त, मंदाकिनी अभिनीत फिल्म-2
13.दोजख,नर्क-3
15.नमकीन लवण-3
17.बेकार-3
18.आंचल-3
20.फायदा,लाभ-2
21.चिट्ठी,पत्र-2
22.जी,चित-2
24.संपूर्ण-2
26.कुचलना,दबाना-3
28.दाड़म,एक फल-3
30.सांभर जैसा खाद्य पदार्थ-3
32.खिचड़ी,पुलाव-3
34.मां,आई-2
35.भाग्य (अंग्रेजी-2)
36.सौतन-2
38.लीन-2
39.चमकीला-5
40.नसीब,किस्मत-4
41.चुनौती-4

ऊपर से नीचे

1.दलाली-4
2.स्वदेश,जन्मभूमि-3
3.दौंडी पीटना-3
4.बेमिसाल-4
6.इसमें तलवार रखते हैं-3
7.मापदंड,आदर्श-3
9.इच्छित वस्तु-4
12.जीरक,कणिका-2
14.थोड़ा,जरा-2
16.आनंद-2
17.क्रोधित,रुष्ट-2
19.अदा-3
20.पति की बहन-3
23.मन को हरने वाला-4
24.निष्कर्ष-2
25.उम्मीद-2
27.वोट,अभिमत-2
28.धरोहर,थाती-4
29.रिश्ता-2
30.नकद राशि,रोकड़-3
31.संधिपत्र,मसविदा-3
33.रीति अनुसार-4
35.अदृढ,तर्कहीन-3
37.द्रव पदार्थ-3

शब्द पहेली -2673 का हल

पंजाब के किसानों का ऐलान 14 को करेंगे दिल्ली कूच

एजेंसी

चंडीगढ़। पंजाब के किसानों ने अब 14 दिसंबर को शंभू बॉर्डर से दिल्ली की तरफ कूच करने का ऐलान किया है। शंभू बार्डर पर हुई किसान संगठनों की बैठक में के बाद किसान नेता सरवण सिंह पंधेर ने यह जानकारी दी। इस बीच आज ही शंभू व खनौरी बार्डर को खोलने के लिए हाईकोर्ट में दायर की गई याचिका पर सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने इस केस की सुनवाई करने से इनकार कर दिया। यह मामला पहले से ही सुप्रीम कोर्ट में लंबित होने के कारण हाईकोर्ट ने इस पर सुनवाई नहीं की। कोर्ट ने याचिकाकर्ता से कहा है कि वह सुप्रीम कोर्ट जाकर अपना पक्ष रखें। इसके बाद याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका वापस ले ली। इस दौरान पंजाब, हरियाणा और केंद्र सरकार के वकील मौजूद रहे। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने भी कल सोमवार को बॉर्डर खोलने की याचिका खारिज कर दी थी। किसान नेता सरवन सिंह पंधेर और अभिमन्यु कोहाड़ ने बताया कि डल्लेवाल की तबीयत ज्यादा खराब हो गई है। उनका मरणव्रत 15वें दिन में दाखिल हो गया है। उन्हें स्टेज पर आने में भी दिक्कत आ रही है। किडनी और लिवर पर असर पड़ रहा है। डॉक्टरों ने मेडिकल बुलेटिन जारी करते हुए कहा है कि उनका ब्लड प्रेशर 124/95, शुगर 93, पल्स 87 है। वहीं, वजन 11 किलो कम हो चुका है।

उप्र के हाथरस में कंटनेर और मैजिक वाहन में जबरदस्त टक्कर, सात की मौत

हाथरस। उत्तर प्रदेश के हाथरस जनपद में दोपहर मथुरा-बरेली राजमार्ग पर एक कंटनेर और मैजिक वाहन में जबरदस्त भिड़ंत हो गई। हादसे में एक ढाई साल के बच्चा समेत सात लोगों की जान चली गई और कई घायल हो गए हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दुर्घटना में मारे गए लोगों के प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने मृतकों के परिवार को दो-दो लाख रुपये और घायलों को पचास-पचास हजार रुपये का आर्थिक सहयोग देने का अधिकारियों को निर्देश दिया है। जिलाधिकारी राहुल पांडे ने मार्ग दुर्घटना में सात लोगों की मौत की पुष्टि करते हुए बताया कि मरने वालों में तीन महिलाएं, एक ढाई साल का बच्चा और तीन पुरुष हैं। छह लोगों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि एक बच्चे ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। इस हादसे में 13 लोग घायल हैं, जिनमें छह लोगों की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें हायर सेंटर रेफर किया गया है। जिलाधिकारी ने बताया कि कोतवाली चंदपा के गांव कुम्हरई निवासी 20 लोग और उनके रिश्तेदार मैजिक वाहन में सवार होकर मंगलवार दोपहर एटा के गांव नगला इमलिया निवासी 60 वर्षीय कैंसर पीड़ित बुजुर्ग देखने के लिए जा रहे थे।

राइजिंग राजस्थान 2024 - राज्य के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर राज्य सरकार दे रही विशेष जोर : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

जयपुर। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लक्ष्य भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना है। उनके इस संकल्प को साकार करने तथा भारत की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन की बनाने के लिए केन्द्र सरकार कार्य कर रही है। गडकरी जेईसीसी में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के तहत आयोजित 'इन्फ्रास्ट्रक्चर-एन इम्पोर्टेन्ट लिंक इन द सप्लाई चेन' सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी भी देश के विकास के लिए पानी, ऊर्जा, परिवहन और संचार मूलभूत आवश्यकताएं हैं। इन चारों क्षेत्रों को विकसित करने से देश-प्रदेश की प्रगति सुनिश्चित होगी। इस अवसर पर गडकरी ने राजस्थान को कई सौगातें देते हुए 30 हजार करोड़ रुपये लागत की 800 किमी. लम्बी 9 परियोजनाओं की घोषणा की। इन परियोजनाओं में 6500 करोड़ की लागत से उत्तरी जयपुर रिंग रोड, 6800 करोड़ की लागत से कोटपूतली से आगरा ग्रीनफील्ड हाइवे, 12 हजार करोड़ की लागत से जयपुर-किशनगढ़-जोधपुर से अमृतसर ग्रीनफील्ड हाइवे निर्माण, 538 करोड़ की लागत से पाली में रायपुर से जस्साखेड़ा तक एलीवेटेड रोड, 1400 करोड़ की लागत से नागौर से नेत्रा तक सड़क निर्माण, 500 करोड़ से सीकर-लक्ष्मणगढ़-फतेहपुर में बाइपास, 1400 करोड़ की लागत से झुन्झुनूं-चिड़ावा-सिंघाना-पचेरी सड़क निर्माण, 600 करोड़ की लागत से सिंघाना-खेतड़ी-जसरापुर-नगलीसलेदी-भाटीवाड़ सड़क निर्माण, 400 करोड़ की लागत से कुंडल-झाड़ैद खण्ड के भू-स्खलन क्षेत्र में सुधार कार्य शामिल हैं।

मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ बोले, राइजिंग राजस्थान के माध्यम से 35 से अधिक देश जुड़े हैं

जयपुर । राजस्थान की भजनलाल सरकार में कैबिनेट मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बातचीत की। इस दौरान एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीन बार चुनी हुई सरकार देश में है। उसके साथ-साथ राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। दोनों सरकारों की ताकत के साथ हमें बड़े लक्ष्य लेकर काम करना है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे लिए बड़ा लक्ष्य होना चाहिए कि राजस्थान की दशा और दिशा जो रही है पिछली सरकार में जो स्थगित हो गई थी, उसको तेज गति से आगे बढ़ाना है। राजस्थान के नौजवानों के लिए एक ऐसा भविष्य हम तैयार करें कि हर हाथ के पास काम हो, हर घर में समृद्धि आए और उसके साथ साथ राजस्थान आगे बढ़े। उन्होंने कहा कि राजस्थान की कहानी, राजस्थान की क्षमता, राज्य के युवाओं की, यहां के किसानों की, यहां के एग्रो प्रोडक्ट्स की, यहां के टूरिज्म की, यहां के हर तरह के व्यापार की कहानी दुनिया के कोने-कोने में पहुंचनी जरूरी है।

साइबर अपराध और जलवायु परिवर्तन मानवाधिकारों के लिए नए खतरेः राष्ट्रपति

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने आज कहा कि साइबर अपराध और जलवायु परिवर्तन मानवाधिकारों के लिए नए खतरे हैं। उन्होंने कहा कि ये चुनौतियां एक सुरक्षित, संरक्षित और न्यायसंगत डिजिटल वातावरण को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित करती हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों और सम्मान की रक्षा करता है। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब हमारे दैनिक जीवन में प्रवेश कर चुका है, कई समस्याओं का समाधान कर रहा है और कई नई समस्याएं भी पैदा कर रहा है। हालांकि, एआई के साथ अपराधी एक गैर-मानव लेकिन बुद्धिमान एजेंट हो सकता है। राष्ट्रपति आज नई दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा आयोजित मानवाधिकार दिवस समारोह को संबोधित कर रही थीं। इस

अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि भारत की 5 हजार वर्षों से अधिक की सभ्यतागत विरासत के साथ सहानुभूति, करुणा और सामंजस्यपूर्ण समुदाय के भीतर व्यक्तियों के परस्पर जुड़ाव के मूल्यों को लंबे समय तक कायम रखा है। जलवायु परिवर्तन हमें वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों के बारे में सोच की समीक्षा करने के लिए मजबूर करता है। एक अलग जगह और एक अलग युग के प्रदूषक दूसरे स्थान और दूसरे काल के लोगों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। इस संदर्भ में ग्लोबल साउथ की आवाज़ के रूप में भारत ने जलवायु कार्रवाई में सही ढंग से नेतृत्व संभाला है। उन्होंने कहा कि ऊर्जा संरक्षण (संशोधन) विधेयक, ग्रीन क्रेडिट पहल और पर्यावरण के लिए जीवन शैली, या लाइफ जैसी सरकारी पहल भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और हरित ग्रह के निर्माण के लिए भारत की प्रतिबद्धता का स्पष्ट प्रदर्शन हैं। उन्होंने कहा कि इन मूल्यों के आधार पर एनएचआरसी और एसएचआरसी जैसी संस्थाएं नागरिक समाज, मानवाधिकार रक्षकों, विशेष प्रतिवेदकों और विशेष निगरानीकर्ताओं के साथ मिलकर सभी के लिए मानवाधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए काम कर रही हैं। उन्होंने मानवाधिकार उल्लंघनों को खिलाफ जागरूकता बढ़ाने और हाशिए पर पड़े लोगों के अधिकारों को बनाए रखने के लिए नीतिगत बदलावों की सिफारिश करने में एनएचआरसी द्वारा निभाई गई सक्रिय भूमिका की सराहना की।

बापू आसाराम को इलाज के लिए 17 दिन के लिए फिर मिला पैरोल

एजेंसी

जोधपुर। अपने आश्रम की एक नाबालिग छात्रा से यौन शोषण के आरोप में आजीवन कारावास की सजा काट रहे संत बापू आसाराम को एक बार फिर से इलाज के लिए पैरोल मिल गई है।

इस बार हाई कोर्ट ने आसाराम को 17 दिन की पैरोल दी है। अब आसाराम एक बार फिर पुणे के माधोबाग में इलाज करवाएंगे। आसाराम की तीस दिन की पैरोल पूरी होने के बाद 17 दिन की पैरोल की अवधि बढ़ाई गई है।

आसाराम की पैरोल अवधि बढ़ाने के लिए आसाराम की ओर से आवेदन किया गया था। हाई कोर्ट के जस्टिस दिनेश मेहता और विनित माथुर की बैंच ने पुणे के माधोबाग में इलाज के लिए आशाराम की 17 दिन की पैरोल अवधि बढ़ा दी है। आसाराम अब 15 दिसंबर से 17 दिन की पैरोल पर रहेंगे। आसाराम की ओर से अधिवक्ता आरएस सलूजा और अधिवक्ता यशपाल सिंह ने पैरवी की थी।

तीसरी बार पैरोल मिली

उल्लेखनीय है कि आसाराम को तीसरी बार पैरोल मिली है। इससे पहले 7 नवंबर को तीस दिन की पैरोल जोधपुर के निजी आयुर्वेदिक अस्पताल में इलाज के लिए मिली थी।

उससे पहले 7 दिन की पैरोल अगस्त में मिली थी। आसाराम पिछले एक माह से पाली रोड स्थित एक निजी आयुर्वेदिक अस्पताल में अपना इलाज करवा रहे हैं। इलाज की अवधि से पहले उनकी ओर से उनके वकील ने अवधि और बढ़ाने के लिए आवेदन किया था जिसकी सुनवाई के दौरान आसाराम को फिर से राहत मिली।

हिंदुओं के साथ हम हैं, यहसंदेश दुनिया को मिलना चाहिएः सुनील आंबेकर

एजेंसी

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि बांग्लादेश के पीड़ित हिंदू समाज के साथ हम खड़े हैं, यह संदेश वहां की सरकार के साथ-साथ पूरी दुनिया को मिलना चाहिए।

बांग्लादेश मे हिंदू समाज के साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ महाराष्ट्र के सभी बड़े शहरों में सकल हिंदू समाज कि ओर से विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया था। इसी के तहत नागपुर के वेरायटी चौराहे पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करते हुए आंबेकर ने कहा कि बांग्लादेश में हो रहे अत्याचारों की फोटो और वीडियो देख कर ऐसा मुगल काल का गुमान होता है। आंबेकर ने कहा कि बांग्लादेश के दृष्य देख कर हम सभी दुखी हैं लेकिन हमें गुस्सा आना चाहिए। बतौर आंबेकर हमारे अपनों पर जुल्म होता है तो हम क्रोधित होते हैं। नतीजतन हमें बांगलादेशी हिंदू पर हो रहे अत्याचार देख कर क्रोध आना चाहिए। आंबेकर ने बताया कि हमारे देश के कुछ नेता कहते हैं कि सब भूल जाओ। लेकिन समय समय पर होने वाली हिंसाचार कि घटनाए,

आतंकी हमले, बम विस्फोट, हिंदुओं का नरसंहार हमें कुछ भूलने नहीं देता। बांग्लादेश को हम अपना दोस्त मानकर मित्रवत व्यवहार कर रहे थे। लेकिन वहां पनप रही कट्टरपंथी शक्तियों ने अपना असली चेहरा दिखाते हुए हिंदुओं पर अत्याचार शुरू कर दिए। इन शक्तियों का एजेंडा पूरे सनातन हिंदू धर्म को नष्ट करना है। आंबेकर ने कहा कि बांगलादेश के हिंदू अकेले नहीं हैं, भारतीय समाज उनके साथ खड़ा है। भारतीय विदेश मंत्री बांग्लादेश के साथ चर्चा कर रहे हैं। यदि कोई समाधान नहीं निकला तो हमें अन्य रास्ते अपनाने पड़ेंगे। हमें बांग्लादेश में अशांती फैलाने वाली विश्व की शक्तियों को चेताना पड़ेगा कि वह अपनी दखलअंदाजी बंद करें। बतौर आंबेकर बांग्लादेश हिंदुओं ने तय किया है कि वह जुल्मों से डर कर भागेंगे नहीं, बल्की उसका सामना करेंगे।

कोलकाता एयरपोर्ट पर फंसी नारी शक्ति पुरस्कार विजेता डॉक्टर, एयरलाइन पर दुर्व्यवहार का आरोप

एजेंसी

कोलकाता। 'नारी शक्ति पुरस्कार' से सम्मानित डॉ. भारती कश्यप ने कोलकाता एयरपोर्ट पर एक एयरलाइन के कर्मचारियों पर दुर्व्यवहार का आरोप लगाया है। डॉ. कश्यप के अनुसार, खराब मौसम के कारण उनकी बागडोगरा जाने वाली फ्लाइट रद्द हो गई थी, जिसके बाद एयरलाइन कर्मचारियों ने उन्हें और अन्य यात्रियों को घंटों इंतजार कराया। डॉ. कश्यप, जो रांची की एक नेत्र रोग विशेषज्ञ हैं, झारखंड की राजधानी रांची से कोलकाता होते हुए बागडोगरा की यात्रा कर रही थीं। उन्होंने बताया कि कोलकाता एयरपोर्ट पर सुबह 10:45 बजे पहुंचे, जहां हमारी फ्लाइट एक घंटे की देरी से आई। इसके बाद पता चला कि बागडोगरा की फ्लाइट रद्द कर दी गई है। डॉ. कश्यप ने आरोप लगाया कि एयरलाइन ने उन्हें शाम की फ्लाइट में भी जगह नहीं दी और यात्रियों को कई घंटों तक बिना किसी सुविधा के इंतजार कराया। उन्होंने कहा कि हमें दोपहर 12:45 बजे की फ्लाइट से बागडोगरा जाना था, जिसे रद्द कर दिया गया। लंबे इंतजार के बाद करीब चार बजे जाकर खाना दिया गया। 57 वर्षीय डॉक्टर ने बताया कि एयरलाइन ने उन्हें डॉरमेट्री में रुकने

का प्रस्ताव दिया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि मैं अकेले यात्रा कर रही हूं, ऐसे में दूसरों के साथ डॉरमेट्री में कैसे रुक सकती हूं ? डॉ. कश्यप ने यह भी बताया कि उनके भाई, जो मुंबई से उसी एयरलाइन की फ्लाइट से बागडोगरा जा रहे थे, वहां आसानी से पहुंच गए। उन्होंने कहा कि हमें खराब मौसम के कारण फ्लाइट रद्द होने की जानकारी दी गई, लेकिन मेरे भाई की फ्लाइट बागडोगरा में उतर गई। एयरलाइन का जवाबएयरलाइन के कर्मचारियों ने बताया कि सुबह 7:40 बजे कोलकाता से बागडोगरा के लिए रवाना हुई फ्लाइट को खराब मौसम के कारण डायवर्ट करना पड़ा। वहीं, दोपहर 12:45 बजे की फ्लाइट रद्द कर दी गई।एक कर्मचारी ने कहा कि हम फंसे हुए यात्रियों की हर संभव मदद कर रहे हैं। हालांकि, त्योहारी सीजन के कारण होटल के सभी कमरे पहले से बुक हैं, इसलिए हम रात के लिए तुरंत व्यवस्था नहीं कर सके।बाद में डॉक्टर को एक होटल में कमरा दिया गया, जबकि अन्य यात्रियों को एयरपोर्ट डॉरमेट्री में ठहराया गया। डॉ. कश्यप ने कहा कि मैं एयरपोर्ट पर छह घंटे तक फंसी रही। होटल में चाय और रात का खाना देने से भी इनकार कर दिया गया, जब तक एयरलाइन से आदेश नहीं मिलता।

भाजपा संगठन के विस्तार को निष्ठापूर्वक संगठनात्मक चुनाव में अपनाये रखना है : तावड़े

एजेंसी

गाजियाबाद। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री और उत्तर प्रदेश चुनाव पर्यवेक्षक विनोद तावड़े ने यहां कहा कि भाजपा संगठन के विस्तार और वैचारिक मजबूती के आधार को निष्ठापूर्वक संगठनात्मक चुनाव में अपनाये रखना है, जिससे भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना किया जा सके। उन्होंने कहा कि संगठन के विस्तार में पार्टी की विचारधारा के अनुरूप कार्यकर्ताओं को प्रेरित करके आगे लाना चाहिये।केन्द्रीय पर्यवेक्षक तावड़े भाजपा पश्चिम क्षेत्र संगठन पर्व-2024 की एचएलएम कॉलेज के सभागार में आयोजित जिला महानगर चुनाव अधिकारियों की कार्यशाला में बतौर मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधन दे रहे थे। उन्होंने कहा, संगठन चुनाव के दौरान कार्यकर्ता की निष्ठा और उसकी प्रतिबद्धता सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। हम

आज सत्ता में हैं और आगे भी सत्ता में रहें, इसलिए संगठन के विस्तार में पार्टी की विचारधारा के अनुरूप कार्यकर्ताओं को प्रेरित करके आगे लाना चाहिये। उन्होंने कहा, हमारा प्रयास रहे कि भाजपा का दर्शन, सिद्धांत एवं वैचारिक अधिष्ठान का आग्रह लोगों तक पहुंचे। भाजपा के संविधान के अनुसार नियमों के तहत आम सहमति से चुनावों में युवा वर्ग को संगठन विस्तार में अहम भूमिका में लाया जाये। उन्होंने कहा कि समाज के सभी वर्गों के साथ-साथ महिलाओं को भी प्रतिनिधित्व देने का पूरा प्रयास करना है। संगठन विस्तार के साथ-साथ क्षेत्र की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों का विश्लेषण करते हुए नेतृत्व को सामने लेकर आना है। उत्तर प्रदेश के सह चुनाव अधिकारी अनिल चौधरी ने पश्चिम उत्तर प्रदेश के संगठनात्मक कार्य की सराहना की। उन्होंने क्षेत्रीय अध्यक्ष सतेन्द्र सिसोदिया एवं समस्त जिला महानगर अध्यक्ष द्वारा बूथ गठन से लेकर सदस्यता अभियान के सफल आयोजन के लिए पीठ थपथपाई। क्षेत्रीय अध्यक्ष सिसोदिया ने कहा कि संगठन पर्व के पहले चरण में पार्टी ने जिलों में कार्यशालाएं की इसके बाद मण्डल स्तर पर कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

कार्यशालाओं के सफल संचालन के उपरांत बूथों पर संगठनात्मक बैठकें करके हम संगठन चुनाव को गति के साथ आगे बढ़ाने का काम किया। आज की इस कार्यशाला से संबद्ध होकर संगठन के चुनावों की धुरी मण्डल चुनाव पर केंद्रित है।

बांग्लादेश में हिंदुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग, सिविल सोसाइटी ने जताई चिंता

एजेंसी

कोलकाता। बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों को लेकर कोलकाता स्थित एक सिविल सोसाइटी संगठन ने गहरी चिंता जताई है। 'देश बचाओ गणमंच' ने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपील की। संगठन ने बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली सरकार पर अल्पसंख्यकों की सुरक्षा में विफल रहने का आरोप लगाया। बयान में कहा गया कि बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार मानवता पर हमला हैं। संगठन ने अपने प्रेस बयान में कहा कि आतंकियों द्वारा अल्पसंख्यकों पर हमले और उनकी पूजा स्थलों को नुकसान पहुंचाना चिंताजनक है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की प्रतिक्रिया का समर्थन करते हुए मंच ने कहा कि मुख्यमंत्री की प्रशासनिक क्षमता पर उन्हें भरोसा है और राज्य में किसी भी प्रकार की अशांति को कुचलने की क्षमता प्रशासन के पास है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बांग्लादेश के कुछ नेताओं के कथित उकसाने वाले बयानों पर कड़ी प्रतिक्रिया दी थी, जिनमें कहा गया था कि बांग्लादेश कुछ ही दिनों में पश्चिम बंगाल पर कब्जा कर सकता है। मुख्यमंत्री ने इन बयानों को बेतुका करार देते हुए विधानसभा में कहा था कि जब आप हमारी जमीन पर कब्जा करने आएंगे, तो यह न सोचें कि हम हाथ में लॉलीपॉप लिए होंगे। बनर्जी ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों को अस्वीकार्य बताते हुए अंतरिम सरकार की आलोचना की थी।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार से झारखंड में उबाल

एजेंसी

रांची। झारखंड की राजधानी रांची में सर्व सनातन समाज के नेतृत्व में विभिन्न सामाजिक संगठनों के हजारों लोगों ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे अत्याचार और उनके मानवाधिकार हनन के खिलाफ मोरहाबादी मैदान से फिरायालाल होते हुए राज्यपाल भवन तक आक्रोश मार्च निकाला। इसके बाद मार्च राजभवन में समक्ष धरना में तब्दील हो गया। कार्यक्रम का संचालन विजय कुमार ने किया। आक्रोश सभा को संबोधित करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता सोमा उरांव ने कहा कि आज हम सब बांग्लादेश के अल्पसंख्यक हिंदुओं को समर्थन देने के लिए एकजुट हुए हैं। साथ ही आज मांग करते हैं कि जेहादियों पर कड़ी करवाई हो। उन्होंने कहा कि आज जो स्थिति बांग्लादेश में है यदि हिन्दू समाज नहीं जागा तो झारखंड में

भी वह स्थिति बहुत जल्द होगी। विश्व हिंदू परिषद के प्रान्त मंत्री मिथलेश्वर मिश्र ने कहा कि बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार को देखकर वेदना होती है। इससे हम सभी आक्रोशित हैं। हिन्दू समाज बसुधैव कुटुम्बकम में विश्वास करने वाला संप्रदाय है। हम सभी अहिंसा के पुजारी हैं लेकिन जब हमे उकसाया जाता है तो हम इसका विरोध करते हैं।

सामाजिक कार्यकर्ता बिनोद गाडयान ने कहा कि दुनियाभर के देशों ने बांग्लादेश में हो रहे हिंदुओं पर अत्याचार का विरोध किया है। उन्होंने पूरी दुनिया से मांग करते हुए कहा कि बांग्लादेश में हो रहे मानवाधिकार हनन के खिलाफ पूरी दुनिया आवाज उठाये। राजेन्द्र कृष्ण ने कहा कि बांग्लादेश के अस्तित्व भारत के कारण है लेकिन वहां हिंदुओं पर अत्याचार हो रहा है। यह बेहद अफसोसजनक है। विश्व मानवाधिकार आयोग से आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार को जल्द से जल्द समाप्त किया जाए। इस्कॉन के सदस्य प्रकाश ने हिंदुओं को जागने का आह्वान किया और बांग्लादेश में हो रहे क्रूरता के खिलाफ एकजुट होने पर बल दिया। विद्यार्थी परिषद के संगठन मंत्री याज्ञवल्कय शुक्ल ने कहा कि बांग्लादेश के उदय में लाखों भारतीयों ने अपनी शहादत दी थी। आज उनके साथ अत्याचार हो रहा है। आज बांग्लादेश में एक विचार पनप गया है कि जिसकी आबादी ज्यादा होगी वह कम आबादी वाले समाज के लोगों को जिंदा रहने नहीं देंगे। भारत एक संवेदनशील देश है। दुनिया में जहां कहीं भी लोगों के साथ अत्याचार होता है भारत अत्याचार के खिलाफ उनके साथ खड़ा होता है।

दूसरी ओर, सर्व सनातन समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हस्तक्षेप और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की गई। प्रतिनिधिमंडल में भूतेशानन्द, सरदार बिक्रम सिंह, पवन लामा, बिनोद जैन, स्वामी परिपूर्णानंद, बिनोद जालान, राकेश लाल, पवन मंत्री, शेखर चौधरी, रवि मुंडा,बिनोद गाडयान, प्रशुन रायपत, सुनीता गुप्ता सहित अन्य शामिल थे।

छत्तीसगढ़ डीएमएफ घोटाला : रानू साहू और माया वारियर की न्यायिक रिमांड सत्रह दिसंबर तक बढ़ी

एजेंसी

रायपुर। छत्तीसगढ़ के चर्चित जिला खनिज न्यास निधि (डीएमएफ) घोटाला मामले में निलंबित आईएएस रानू साहू और माया वारियर को कोर्ट में पेश किया गया। दोनों आरोपितों को ईडी के विशेष कोर्ट में पेश किया गया। ईडी के अधिवक्ता सौरभ पांडे ने बताया कि रानू साहू और माया की न्यायिक रिमांड सत्रह दिसंबर तक बढ़ गई है।

उल्लेखनीय है कि रानू साहू जून 2021 से जून 2022 तक कोरबा में कलेक्टर थीं । इसके बाद फरवरी 2023 तक वह रायगढ़ की भी कलेक्टर रहीं। इस दौरान माया वारियर भी कोरबा में पदस्थ थीं। कलेक्टर रानू साहू से करीबी संबंध होने के कारण कोयला घोटाले को लेकर माया वारियर के दफ्तर और घर में ईडी ने छापा मारा था। डीएमएफ की बड़ी राशि आदिवासी विकास विभाग को प्रदान की गई थी,

जिसमें घोटाले का आरोप है। इसका प्रमाण मिलने के बाद ईडी ने माया वारियर को भी गिरफ्तार किया। प्रवर्तन निदेशालय की रिपोर्ट के आधार पर आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने धारा 120 बी 420 के तहत केस दर्ज किया है। इस केस में यह तथ्य निकल कर सामने आया है कि डिस्ट्रिक्ट माइनिंग फंड कोरबा के फंड से अलग-अलग टेंडर आवंटन में बड़े पैमाने पर आर्थिक अनियमित की गई है। टेंडर भरने वालों को अवैध लाभ पहुंचाया गया है। जांच रिपोर्ट में यह पाया गया है कि टेंडर की राशि का 40 प्रतिशत सरकारी अफसर को कमीशन के रूप में इसके लिए दिया गया है। प्राइवेट कंपनियों के टेंडर पर 15 से 20 फीसदी अलग-अलग कमीशन सरकारी अधिकारियों ने लिया है। ईडी ने अपनी जांच रिपोर्ट में पाया था कि आईएएस अधिकारी रानू साहू और कुछ अन्य अधिकारियों ने अपने-अपने पद का गलत इस्तेमाल किया था।

गीता जयंती पर भोपाल में बनेगा गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड, 5000 से अधिक पुरोहित करेंगे कर्म योग का सस्वर पाठ

एजेंसी

भोपाल। भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के आशीर्वाद से धन्य भूमि मध्य प्रदेश में गीता जयंती के पावन पर्व के अवसर पर गीता पाठ का गिनीज विश्व रिकॉर्ड बनाए जाने का अनूठा पावन प्रयास किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव अंतर्गत बुधवार, 11 दिसंबर को भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में सुबह 10 बजे राज्य स्तरीय कार्यक्रम में पहली बार पांच हजार से अधिक आचार्यों द्वारा गीता के तृतीय अध्याय कर्म योग का सस्वर पाठ कर विश्व रिकॉर्ड में दर्ज कराने की दावेदारी जताएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोशल मीडिया के माध्यम से कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी लीलाओं और आदर्शों के माध्यम से समूचे समाज को प्रेरणा दी है। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन और पवित्र धर्मग्रंथ गीता की शिक्षा से प्रदेशवासियों के जीवन को आलोकित करने और सनातन संस्कृति से जोड़ने के लिए यह प्रयास किया जा रहा है। जनसम्पर्क अधिकारी अनुराग उइके ने बताया कि राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान श्रीमदभागवत पुराण और गौ एवं गोपाल चित्र प्रदर्शनी का संयोजन किया जाएगा। साथ ही साधो बैंड मुंबई के द्वारा भक्तिमय गीतों की सुरमई प्रस्तुति दी जाएगी। विशेष रूप से मध्य प्रदेश में आ रहे पर्यटकों और आगंतुकों को गीता की महिमा से अवगत कराने के लिए प्रदेश के होटलों में श्रीमद्भगवद्गीता, वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस की एक-एक प्रति रखने की पहल भी की जाएगी। उल्लेखनीय है कि मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के अगले दिन गीता जयंती का पर्व मनाया जाता है। इस तिथि पर मोक्षदा एकादशी व्रत भी किया जाता है। पंचांग के अनुसार 11 दिसंबर को गीता जयंती है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा पांच हजार वर्ष पहले कौरव-पांडवों के युद्ध के बीच अर्जुन को कर्मवाद की शिक्षा प्रदान करने से धर्मग्रंथ गीता की रचना हुई।

शहरी क्षेत्र में निवेश में हुई 16 गुना वृद्धिः मनोहर लाल

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्री मनोहर लाल ने आज कहा कि शहरी क्षेत्र में निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस क्षेत्र में निवेश में 16 गुना वृद्धि हुई है। यह साल 2004 से 2014 के बीच लगभग 1,78,053 करोड़ रुपये था, जो बढ़कर 2014 से अबतक 28,52,527 करोड़ हो गया है। यह वृद्धि 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। नई दिल्ली में आयोजित प्रेसवार्ता में मनोहर लाल ने बताया कि शहरीकरण की बढ़ती दर ने शहरी विकास को भारत की विकास रणनीति का आधार

बना दिया है। पिछले छह महीनों में शहरी विकास योजनाओं का विस्तार किया गया है और उन्हें अधिक गति और दक्षता के साथ लागू किया गया है। मनोहर लाल ने घोषणा की कि स्मार्ट सिटीज मिशन के सफल समापन के बाद तेजी से बढ़ते शहरीकरण के दबावों को प्रबंधित करने के लिए एक नई शहर योजना की अवधारणा बनाई गई है। इस मिशन के तहत 100 शहरों को स्मार्ट बनाया जा रहा जिसमें 8,076 परियोजनाएं चल रही हैं, जिस पर 164,706 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। इसके तहत 91 प्रतिशत काम पूरा हो गया है। उन्होंने बताया कि शहरी विकास को बढ़ावा देने के लिए बजटीय सहायता, कार्यबल प्रशिक्षण और उन्नत तकनीक प्रदान करके राज्य सरकारों के साथ साझेदारी में काम करने के लिए केंद्र सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि पीएम स्वनिधि योजना के तहत वितरित ऋणों की कुल राशि 13,422 करोड़ रुपये है। स्वच्छ भारत मिशन का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि 9 जून 2024 से सरकार ने 1,123 करोड़ रुपये से अधिक धनराशि जारी की हैं। 9 जून से पिछले छह महीनों में, अहमदाबाद और हैदराबाद में दो प्रमुख डंपसाइटों को पूरी तरह से ठीक किया गया है, जिससे लगभग 2.5 लाख मीट्रिक टन विरासत कचरे का सफलतापूर्वक समाधान किया गया है।

सबसे खास सर्दियों का अहसास

हर साल एक नया अहसास है ठंड का मौसम। इस बार ठंड में सर्दी-जुकाम से डरने की जगह इनसे लड़ने के लिए खुद को और अपने परिवार को तैयार कीजिए। ठंड के लिए ऐसे ऊनी कपड़ों का चुनाव कीजिए, जो आपके परिवार को पर्याप्त गर्माहट दे और साथ ही स्टाइलिश लुक भी। कैसे चुनें ऊनी कपड़ों और उनकी देखभाल के दौरान किन बातों को ध्यान में रखें -

सर्दी के मौसम में बदरंग और बोरिंग दिखने के दिन अब लद गए। जाड़े का मौसम भी अब स्टाइलिश हो गया है। ठंड से बचने के लिए अब जरूरी नहीं कि खुद को बोरिंग और गहरे रंग के कपड़ों के हवाले कर दिया जाए। ठंड से खुद को और अपने परिवार को बचाते हुए अब आप स्टाइलिश भी दिख सकती हैं, पर इसके लिए जरूरी है कि अपने कपड़ों का चुनाव आप सोच-समझकर करें और साथ ही गर्मी के कपड़ों और ठंड के कपड़ों के बीच अच्छा तालमेल भी बिठाएं।

लेयरिंग का है मौसम

वो दिन गए जब ठंड के मौसम में अपने कपड़ों की परत को छुपाने की कोशिश करते थे। अब एक साथ दो-तीन कपड़े पहनने और उन्हें दिखाने का ट्रेंड आ गया है। अपने ठंड के कपड़ों को निकालें और तरह-तरह के कॉम्बिनेशन में उन्हें पहनें। जरूरी नहीं है कि ठंड का मौसम आते ही आप अपने गर्मी वाले कपड़ों को अलविदा कह दें। उन्हें भी ठंड के मौसम में अपने गर्म कपड़ों के बीच जगह दें। ठंड के मौसम में फैशनेबल दिखने का मूलमंत्र यही है। अपने जैकेट, कार्डिगन और पुलोवर को अपने कॉटन के शर्ट या ड्रेस के साथ पहनें। एक्सपेरिमेंट करने से नहीं घबराएं। एक्सपेरिमेंट करेंगी, तभी कपड़ों की कई परत के साथ भी औरों से अलग दिखेंगी।

सोच-समझकर चुनें रंग

ठंड के मौसम में हमेशा गहरे और आकर्षक रंग चुनें। पेस्टल रंग के कपड़े ठंड के मौसम को नीरस बना देंगे। ठंड के कपड़े खरीदते वक्त ऐसे रंग चुनें जो इस बदरंग मौसम में रंग भरें। ऐसे स्वेटर या ऊनी कपड़े न चुनें, जिसके पैटर्न में एक साथ ढेर सारे रंग हों। साधारण पैटर्न और एकाध रंग वाले ऊनी कपड़े चुनें। ऑरेंज, गोल्डन ब्राउन, ऑफ व्हाइट या फिर पीले रंग वाले ऊनी कपड़े पहनने से बचें।

एक्सेसरीज भी बदलें

अपनी एक्सेसरीज में बदलाव लाकर आप अपने लुक को बेहद आसानी से बदल सकती हैं। अगर ठंड बहुत ज्यादा है तो पशमीना शॉल को अपने वॉर्डरोब में शामिल करें। साथ ही आप स्टाइलिश मफलर और फर वाले स्टोल से भी स्टाइल स्टेटमेंट बना सकती हैं। हैट्स और ऊनी टोपी भी ठंड के मौसम में आपको स्टाइलिश लुक देंगे और ठंड से भी बचाएंगे।

फ्लोरल प्रिंट्र से बनाएं दूरी

फ्लोरल प्रिंट के कपड़े गर्मी के मौसम में ही ज्यादा अच्छे लगते हैं। अगर आपको ये प्रिंट बहुत ही ज्यादो पसंद हैं और आप ठंड में भी इन्हें पहनना चाहती हैं तो ठंड के मौसम में थोड़े गहरे प्रिंट वाले कपड़े अपने लिए चुनें। ठंड के मौसम के आपके वॉर्डरोब में ये गहरे फ्लोरल पिंट्र वाले कपड़े आसानी से घुल-मिल जाएंगे। अगर आप फ्लोरल प्रिंट्र वाले कपड़े पहन ही रही हैं तो पूरी बाजू वाले कपड़े चुनें। इससे फ्लोरल प्रिंट का असर कुछ कम हो जाएगा।

बूट्स से बनें फैशनेबल

गर्मियों के फुटवियर को कुछ माह आराम दें और जूते और बूट्स को अपने वॉर्डरोब में शामिल करें। अपनी गर्मी के मौसम के कपड़े को ठंड वाला लुक देने के लिए इससे बेहतर तरीका कुछ और नहीं। जींस और कार्डिगन के साथ बूट्स पहनें और ठंड से बचने के साथ-साथ इस मौसम के अनुकूल लुक भी पाएं।

बच्चों जैसे मुलायम, उनके कपड़े

ठंड से मासूम बच्चों को बचाकर रखना आसान काम नहीं है। बच्चों के लिए ठंड का मौसम सेहत भरा रहे, इसके लिए जरूरी है कि इस सर्द मौसम में भी वो पूरी तरह से गर्म रहें। बच्चों के लिए ठंड के कपड़ों का चुनाव करते वक्त इसलिए हमेशा फैशन और ट्रेंड की जगह उनके आराम और कपड़ों की गर्माहट का ध्यान रखें। बच्चों के लिए हमेशा मुलायम और आरामदायक ऊनी कपड़े चुनें। कपड़े का फैब्रिक ऐसा हो जो उनकी मुलायम त्वचा को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचाए। बच्चों के ऊनी कपड़े हमेशा थोड़े हल्के रंग के चुनें ताकि आपको आसानी से पता चल सके कि वो कब गंदे हो गए हैं और उन्हें साफ करने की जरूरत है। बच्चे को कभी भी एक साथ ढेर सारे कपड़े न पहनाएं। बहुत ज्यादा कपड़े पहनाने पर उन्हें सांस लेने में दिक्कत हो सकती है। बच्चे के लिए ढीली फिटिंग वाले और ढेर सारे बटन वाले ऊनी कपड़े चुनें ताकि इन कपड़ों को पहनाते और उतारते वक्त आपको और आपके बच्चे दोनों को परेशानी न हो। बच्चे के लिए पूरी बाजू वाले ऊनी कपड़े चुनें ताकि उनके हाथ भी गर्म रहें। अगर ठंड बहुत ज्यादा हो तो बच्चे के कान में रुई के फाहे डाल दें और ऊनी टोपी या स्कार्फ पहनाएं ताकि बच्चे का सिर भी गर्म रहे। कभी भी बच्चे को सबसे पहले ऊनी कपड़ा न पहनाएं। पहले नीचे कोई सूती कपड़ा पहनाएं और उसके ऊपर से उसे ऊनी कपड़ा पहनाएं। बच्चे की त्वचा में किसी तरह की एलर्जी न हो, इसलिए ठंड के मौसम में उसके पूरे शरीर में हर दिन विंटर क्रीम लगाएं। ठंड बहुत ज्यादा हो, तब भी सोते वक्त बच्चे को ढेर सारे कपड़े न पहनाएं और न ही उनके ऊपर ढेर सारे कंबल डालें। बच्चे के पैरों को गर्म रखने के लिए उनके लिए ऐसे पाजामे खरीदें, जिनके साथ जुराबें जुड़ी हुई रहती हैं। बच्चे के हाथ भी जल्दी ठंडे हो जाते हैं, इसलिए उनके हाथों को गर्म रखने के लिए उन्हें ग्लव्स पहनाना न भूलें।

खिल उठेंगे आपके ऊनी कपड़े

- ऊनी कपड़ों की ओर बैक्टीरिया और धूल-मिट्टी जल्दी आकर्षित होते हैं, इसलिए अपने जैकेट और कोट को नियमित अंतराल पर ब्रश से साफ करें। इससे आपके सर्दियों के कपड़े न सिर्फ साफ रहेंगे, बल्कि किसी तरह की स्किन एलर्जी और रैशेज होने की आशंका भी नहीं रहेगी।
- ठंड के कपड़ों को बीच-बीच में धूप में सुखाएं। पर ध्यान रहे कि सूरज की तेज रोशनी आपके ऊनी कपड़ों पर सीधी न पड़े। ऐसा करने से आपके ऊनी कपड़े बदरंग हो जाएंगे। वहीं धूप में ऊनी कपड़ों को सुखाने से उसकी नमी गायब हो जाएगी और साथ ही सभी कीटाणु भी मर जाएंगे। ऊनी कपड़े को धूप में सुखाने से वो न सिर्फ आपको ज्यादा गर्माहट देंगे, बल्कि उन्हें पहनने पर भी आपको ज्यादा अच्छा महसूस होगा।
- अपने भारी-भरकम स्वेटर को वॉर्डरोब में लटकाकर नहीं रखें। भारी स्वेटर को लटकाकर रखने से स्वेटर की फिटिंग बिगड़ जाती है। साथ ही हैंगर से स्वेटर को लटकाकर रखने से कंधे वाले हिस्से के जल्दी फटने की आशंका बढ़ जाती है।
- ऊनी कपड़े बेहद नाजुक होते हैं। लंबी उम्र देने के लिए ऊनी कपड़ों को धोने के लिए हमेशा माइल्ड साबुन या डिटर्जेंट और गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें। माइल्ड साबुन और डिटर्जेंट के इस्तेमाल से आपके ऊनी कपडमें की चमक और उनका वास्तविक लुक बरकरार रहेगा। गुनगुना पानी आपके ऊनी कपड़ों में छिपे कीटाणुओं को मारेगा और उसकी स्वच्छता को बरकरार रखेगा।
- स्वेटर और कार्डिगन में अकसर रोंए हो जाते हैं। ये रोंए स्वेटर और किसी अन्य वस्तु के बीच रगड़ खाने से होते हैं। ये रोंए आपके नए और स्टाइलिश स्वेटर को भी पुराना और गंदा लुक दे सकते हैं। इन रुओं को हटाने के लिए छोटे रेजर का इस्तेमाल करें और अपने स्वेटर को फिर से नया लुक दें।
- अपने स्वेटर पर लगे दाग-धब्बों को हटाने के लिए कभी भी उन पर ब्लीच का इस्तेमाल न करें। ब्लीच के इस्तेमाल से आपका स्वेटर बदरंग हो जाएगा। कभी भी ऐसे डिटर्जेंट में स्वेटर न धोएं, जिसमें ब्लीच हो।
- एक ही स्वेटर को तीन दिन से ज्यादा लगातार न पहनें। ऐसा करने से स्वेटर का शेप बिगड़ जाता है। साथ ही आपका स्वेटर जल्दी खराब और पुराना भी हो जाएगा।

ठंड में बच्चा न हो पस्त

अचानक मौसम परिवर्तन का असर सभी पर होता और इससे छोटे बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। सर्दी, जुकाम और गले में इंफेक्शन के अलावा छोटे बच्चों को ये परेशानियां सबसे ज्यादा होती हैं -

रोटा वायरल डायरिया - इसमें बच्चे को दस्त, उल्टी और बुखार एक साथ होता है। बच्चे के शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है और बुखार के कारण वह सुस्त और चिड़चिड़ा हो जाता है। बच्चा कभी-कभी बहुत कमजोर भी हो जाता है।

एलर्जी और अस्थमा - इस मौसम में बच्चों को सांस संबंधी परेशानी भी होती है। बंद नाक और गले में जकड़न के साथ नाक और आंख से पानी भी गिरता रहता है। तेज हवा और प्रदूषण से सांस लेने में दिक्कत आने लगती है।

आंखों में इंफेक्शन - इस मौसम में आंखों में भी इंफेक्शन होने लगता है। आंखों की पलकें रात में चिपक जाती हैं और सुबह बच्चे को आंख खोलने में परेशानी होती है।

त्वचा में लाल दाने - सर्दी में त्वचा में रैशेज और दाने की समस्या प्राय- छोटे बच्चों में हो जाती है। इसका कारण एलर्जी और हार्मोन में बदलाव के साथ ठंडी हवा भी है।

निमोनिया - यह ठंड के मौसम में बच्चों को होने वाली सबसे आम समस्या है। इसमें बच्चे को तेज बुखार होता है और साथ ही उसका सिर बहुत गर्म रहता है। कभी-कभी बच्चे के लंग्स में भी दिक्कत हो जाती हैं।

क्या है कारण

ठंड में प्रतिरोधक क्षमता का कम होना - सर्दी के मौसम में बच्चों के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता सामान्य दिनों से कम हो जाती है। इसलिए किसी भी प्रकार का मौसम परिवर्तन का असर तुरंत बच्चे पर पड़ता है।

बड़ों की लापरवाही - अक्सर बड़े बच्चों को ठंड के मौसम में आलस के कारण हाथ धोए बिना ही गोद में उठा लेते हैं। ठंडे हाथ भी उन्हें लगाते हैं। कीटाणु का ध्यान नहीं रखते। इस वजह से उन्हें इंफेक्शन का खतरा बढ़ता है।

किसी भी चीज को मुंह में लेना - अक्सर बच्चे कलम के कैप या नीचे गिरी हुई चीजों को मुंह में लेते हैं जिससे उन्हें पेट में दर्द या दस्त की समस्या हो जाती है।

नैपी के गीलेपन का ध्यान न रखना - आम मौसम की अपेक्षा ठंड में बच्चे ज्यादा पेशाब करते हैं। अगर नैपी के गीलेपन का ध्यान न रखा जाए तो बच्चों को न केवल ठंड लग जाती है बल्कि उनके शरीर के आंतरिक हिस्से में सूजन और इंफेक्शन भी हो सकता है।

कमरे के तापमान का ध्यान न रखना - ठंड में बच्चे को अधिक गर्म कमरे में ना रखें। कमरे का तापमान सामान्य होना चाहिए। अधिक गर्म वातावरण से अगर बच्चा सामान्य तापमान में जाता है तो उसे तुरंत सर्दी असर करती है।

कैसे करें बचाव

सफाई का रखें ध्यान - धूल, धुएं और गंदगी से छोटे बच्चों को दूर रखें। इससे उन्हे सांस की समस्या के साथ दस्त भी हो सकती है। घर की सफाई का पूरा ध्यान रखें।

नहलाना कम करें - रोज नहलाने के बजाय हर दूसरे दिन छोटे बच्चों को गर्म पानी में सॉफ्ट एंटीबैक्टीरियल लिक्विड डालकर उसमें नर्म तौलिया भिगोकर उनका शरीर साफ कर दें।

गर्म कपड़े पहनाएं - जैसे ही मौसम बदले, बच्चे को गर्म कपड़े पहनाना शुरू कर दें। हल्की ठंड को नजर अंदाज ना करें और बच्चे को हमेशा मोजे पहना कर रखें।

मालिश के लिए गर्म तेल का प्रयोग करें - यूं तो मालिश बहुत जरूरी नहीं है, लेकिन यदि आप मालिश कर रही हैं तो इसके लिए गर्म तेल का प्रयोग करें।

संभव हो तो थोड़ी देर धूप में रखे - अगर आपके घर में धूप आती हो तो बच्चे को गर्म कपड़े पहना कर थोड़ी देर के लिए धूप में रखें। उसे ताजी हवा और विटामिन डी दोनों मिलेंगे।

ठंडी चीजें खाने को न दें - अगर आपका बच्चा 7 माह से अधिक का है और वह खाना खाता है, तो उसे ठंडी चीजें न खिलाएं और साथ ही उसे बासी खाना या ठंडा खाना भी न दें।

बेहतर क्वालिटी के स्वेटर पहनाएं - स्वेटर हमेशा अच्छी क्वालिटी का पहनाएं, क्योंकि वूलन से कभी-कभी त्वचा में एलर्जी हो जाती है।

बुजुर्ग और बच्चे ठंड के मौसम में सबसे ज्यादा परेशान होते हैं। बुजुर्ग तो अपनी तकलीफ बता सकते हैं, पर बहुत छोटे बच्चे तो वो भी नहीं कर सकते। अगर आप ठंड की शुरुआत से ही सावधानी बरतें तो आपका बच्चा सर्दियों में भी मुस्कुराता रहेगा। छोटे बच्चों की ठंड में कैसे देखभाल करें, बता रहे हैं शिशु एवं बालरोग विशेषज्ञ

वेडिंग लुक तालमेल है जरूरी

इन दिनों ज्यादातर वुड बी कपल अपनी शादी के मौके पर कॉम्प्लिमेंट्री लुक अपना रहे हैं। कॉम्प्लिमेंट्री वेडिंग लुक दूल्हे दुलहन के बीच की जबर्दस्त केमिस्ट्री को दर्शाता है। इस लुक को क्रिएट करने के कई तरीके हैं जिन्हें वुडबी कपल्स अपनी पसंद के हिसाब से अपना सकते हैं।

बहुत बुरी कुक हूं। लेकिन तुम्हारी कुकिंग का जवाब नहीं है। तुम ओवर इमोशनल हो और मैं प्रैक्टिकल। एक लाइन में कहूं तो हम दोनों एक दूसरे को बैलेंस करते हैं। हम परफेक्ट लाइफ पार्टनर हैं क्योंकि हमारा आपसी तालमेल बेजोड है। मैं चाहती हूं कि यही तालमेल हमारे वेडिंग डे पर हमारे लुक में भी नजर आए। यह तर्क सामने रखकर अंशिका ने अपने मंगेतर अंश को कॉम्प्लिमेंट्री वेडिंग डे लुक क्रिएट करने के लिए राजी कर ही लिया। अंशिका और अंश की तरह इन दिनों ज्यादातर वुड बी कपल अपनी शादी के मौके पर कॉम्प्लिमेंट्री लुक अपना रहे हैं। कॉम्प्लिमेंट्री वेडिंग लुक दूल्हे दुलहन के बीच की जबर्दस्त केमिस्ट्री को दर्शाता है। इस लुक को क्रिएट करने के कई तरीके हैं जिन्हें वुडबी कपल्स अपनी पसंद के हिसाब से अपना सकते हैं।

कलर केमिस्ट्री

जो कपल्स जटिल की जगह सहज अभिव्यक्ति को तरजीह देते हैं, उन्हें रंगों पर आधारित कॉम्प्लिमेंट्री लुक चुनना चाहिए। इस तरह की मैचिंग में कलर व्हील की मदद ली जा सकती है। व्हील में एक-दूसरे के सामने आने वाले रंग एक दूसरे को कॉम्प्लिमेंट करते हैं। जैसे, ऑलिव-मरून, रस्ट-मिडनाइट ब्ल्यू और वायलेट-ऑरेंज आदि। इन रंगों के बीच जबर्दस्त कंट्रास्ट फैक्टर होता है जिसके चलते इनका कॉम्बिनेशन बेहद वाइब्रेंट लगता है। ऐसे में दूल्हा-दुलहन इन कॉम्प्लिमेंट्री कलर्स के परिधान पहन सकते हैं।

काल आधारित

इन दिनों किसी विशेष काल पर आधारित वेडिंग वेयर पहनने का चलन जोरों पर है। वुडबी कपल्स मुगल काल, विक्टोरियन काल या विंटेज काल पर आधारित परिधान पहन सकते हैं। जैसे विंटेज काल में प्रचलित रंग और एंब्रॉयडरी दुलहन के लहंगे और दूल्हे के कुर्ते में नजर आए। लेकिन इस तरह की मैचिंग करते समय कपल्स को ध्यान रखना चाहिए कि वह किसी काल के दो या तीन फीचर्स को ही अपने परिधानों के माध्यम से अभिव्यक्त करें। बहुत ज्यादा फीचर्स की अभिव्यक्ति उन्हें वेडिंग कपल्स की जगह किसी ऐतिहासिक नाटक का पात्र बना देगी।

वर्क या प्रिंट आधारित

परिधानों पर किए गए वर्क या प्रिंट में तालमेल बैठाना भी ब्राइड और ग्रूम के लुक में कोऑर्डिनेशन का एक बेहतरीन तरीका है। आप विभिन्न तरीकों से एंब्रॉयडरी या प्रिंट के आधार पर यह तालमेल बैठा सकते हैं। जैसे, दुलहन के दुपट्टे और दूल्हे के स्टोल की एंब्रॉयडरी एक जैसी रख सकते हैं। इसी तरह दुलहन के लहंगे के पैनल का प्रिंट दूल्हे की पगडी के प्रिंट में भी नजर आ सकता है। या दूल्हे और दुल्हन के परिधानों के बॉर्डर में एक कॉमन प्रिंट हो सकता है।

एक्सेसरीज आधारित

कॉम्प्लिमेंट्री एक्सेसरीज पहनना भी ब्राइड और ग्रूम के लुक में सामंजस्य बैठाने का एक खास तरीका है। आप चाहें तो कॉम्प्लिमेंट्री एन्गेजमेंट रिंग्स, ब्राइडल वॉच-ग्रूम कफलिंग या ब्राइडल ईयररिंग्स-ग्रूम कफलिंग्स जैसे कॉम्बिनेशन कैरी कर सकती हैं। ब्राइड और ग्रूम की ज्यूलरी में कॉम्प्लिमेंट्री कलर स्टोन का इस्तेमाल भी अच्छा लगेगा।

विशेष टिप्स

- ब्राइड और ग्रूम को अपनी पसंद के हिसाब से कॉम्प्लिमेंट्री वेडिंग लुक तय करना चाहिए।
- आप कॉम्प्लिमेंट्री लुक क्रिएट करने के दो तरीकों को कंबाइन भी कर सकते हैं। जैसे कॉम्प्लिमेंट्री कलर्स और एंब्रॉयडरी वाले परिधान ट्राई कर सकते हैं। इसी तरह किसी एक काल पर आधारित परिधानों के साथ आप कॉम्प्लिमेंट्री ज्यूलरी भी पहन सकते हैं।

चेंगदू के मिडफील्डर मुटेलिप को टखने में लगी चोट

एजेंसी

बीजिंग। चीनी सुपर लीग (सीएसएल) क्लब चेंगदू रोंगचेंग ने घोषणा की कि उसके मिडफील्डर मुटेलिप इमिनकारी को अंडर-21 मैच खेलते समय टखने में चोट लग गई है। चेंगदू क्लब ने एक बयान में कहा कि खेल के दौरान विपक्षी खिलाड़ी द्वारा टैकल किए जाने के बाद 20 वर्षीय खिलाड़ी के दाहिने टखने में लिगामेंट की चोट लग गई। चेंगदू की टीम ने कहा कि मुटेलिप को दो से तीन सप्ताह तक मैदान से बाहर रहना होगा। नवंबर की शुरुआत में 2024 सीएसएल अभियान समाप्त होने के बाद से, मुटेलिप पिछले एक महीने से चेंगदू अंडर-21 टीम के साथ खेल रहे थे।

चैंपियंस लीग 2024-25: विनीसियस जूनियर के गोल से रियल मैड्रिड ने अटलांटा को हराया

बर्गामो (मिलान)। रियल मैड्रिड ने मंगलवार देर रात किलियन एमबाप्पे, विनीसियस जूनियर और जूड बेलिंगहैम के गोलों की बदौलत अटलांटा पर चैंपियंस लीग में 3-2 से जीत हासिल की, जिससे प्रतियोगिता में उनकी लगातार दो मैचों से चली आ रही हार का सिलसिला भी टूट गया। रियल ने सीरी ए की लीडर टीम को इस सीजन के नए चैंपियंस लीग में पहली हार दी, जब एमबाप्पे ने 10वें मिनट में बॉक्स के अंदर से गोल करके टीम को बढ़त दिलाई हालांकि इसके बाद चोट के कारण उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। मध्यांतर से ठीक पहले चार्ल्स डी केटेलेयर ने पेनाल्टी के जरिए गोल कर अटलांटा को बराबरी दिला दी, लेकिन 56वें ??मिनट में विनिसियस जूनियर ने रिबाउंड पर गोल करके मेहमान टीम को फिर से आगे कर दिया। तीन मिनट बाद बेलिंगहैम ने जवाबी हमला करके अपनी बढ़त को बढ़ाया लेकिन 65वें मिनट में एडेमोला लुकमैन ने गोल करके अंतर को कम किया, जिसके बाद रियल के गोलकीपर थिबॉट कोर्टोइस ने अपना जादू दिखाते हुए लगातार गोल बचाकर टीम को 3-2 से जीत दिला दी। दो मैच शेष रहते, रियल 36 टीमों की तालिका में नौ अंकों के साथ 18वें स्थान पर है, जो शीर्ष आठ स्थानों से तीन अंक पीछे है, जिससे अंतिम 16 में सीधे प्रवेश सुनिश्चित होता है। अटलांटा 11 अंकों के साथ नौवें स्थान पर है।

वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 श्रृंखला के लिए बांग्लादेश की टीम घोषित, लिटन दास को टीम की कमान

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज और बांग्लादेश के बीच 3 मैचों की टी-20 सीरीज खेली जानी है। श्रृंखला के लिए बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने टीम का ऐलान कर दिया है। बोर्ड ने बांग्लादेश क्रिकेट टीम की कमान लिटन दास को सौंपी है। 3 टी20 मैच की श्रृंखला का आगाज 15 दिसंबर से होगा। वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 मैच के लिए नियमित कप्तान नजमुल हुसैन शंटो को आराम दिया गया है। वो चोट की वजह से इस श्रृंखला से दूर हुए हैं। ऐसे में बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने विकेटकीपल बल्लेबाज लीटन दास पर भरोसा जताया है और उन्हें टीम का कप्तान नियुक्त किया है। फिलहाल बांग्लादेश की टीम मेजबान वेस्टइंडीज के खिलाफ एकदिनी मैच की श्रृंखला खेल रही है। तीन मैचों की टी20 श्रृंखला 15 से 19 दिसंबर के बीच खेली जाएगी।

टी20 श्रृंखला के लिए बांग्लादेश की टीम:

लिटन कुमार दास (कप्तान), सौम्या सरकार, तंजीद हसन तमीम, परवेज हुसैन एमोन, अफीफ हुसैन, मेहदी हसन मिराज, जेकर अली अनिक, शमीम हुसैन पटवारी, शेख महेदी हसन, रिशाद हुसैन, नसुम अहमद, तस्कीन अहमद, तंजीम हसन साकिब, हसन महमूद, रिपन मोंडोल।

आईसीसी ने आचार संहिता उल्लंघन के लिए अल्जारी जोसेफ पर लगाया जुर्माना

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज अल्ज़ारी जोसेफ पर सेंट किट्स एंड नेविस में बांग्लादेश के खिलाफ पहले वनडे मैच के दौरान आचार संहिता के लेवल 1 का उल्लंघन करने को लेकर जुर्माना लगा है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने जोसेफ पर उनके मैच फीस का 25 प्रतिशत जुर्माना लगाया है। जोसेफ को खिलाड़ियों और खिलाड़ी सहायता कर्मियों के लिए आईसीसी आचार संहिता के अनुच्छेद 2.3 का उल्लंघन करते हुए पाया गया, जो श्रव्य अश्लीलता के उपयोग से संबंधित है। इसके अलावा, जोसेफ के अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक अवगुण अंक जोड़ा गया है, जिसके लिए 24 महीने की अवधि में यह पहला अपराध था।यह मामला तब का है जब खेल से पहले उन्होंने चौथे अंपायर के साथ बातचीत में आपत्तिजनक और अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया। अंपायर ने जोसेफ को स्पाइक्स के साथ पिच पर कदम रखने से परहेज करने के लिए कहा था। जोसेफ ने अपराध स्वीकार कर लिया और एमिरेट्स आईसीसी एलीट पैनल ऑफ मैच रेफरी के जेफ क्रो द्वारा प्रस्तावित मंजूरी को स्वीकार कर लिया, इसलिए औपचारिक सुनवाई की कोई आवश्यकता नहीं थी।

आईसीसी महिला एकदिनी बल्लेबाजी रैंकिंग में फिर नंबर एक पर पहुंचीं लौरा वोल्वार्ड्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट ने इस सप्ताह की आईसीसी महिला वनडे खिलाड़ी रैंकिंग में दुनिया में नंबर एक बल्लेबाज के रूप में अपना दर्जा फिर से हासिल कर लिया है। यह तब हुआ जब इंग्लैंड के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका की आईसीसी महिला चैंपियनशिप श्रृंखला 1-1 से बराबरी पर है और निर्णायक मुकाबला बुधवार को ब्लोमफोंटेन में होना है। वोल्वार्ड्ट ने किम्बर्ले में अपनी टीम के सफल श्रृंखला के उद्घाटन मैच में 59* रन बनाए, जहां उन्होंने इंग्लैंड को छह विकेट से हराया। उन्होंने दूसरे एकदिवसीय मैच में अपने स्कोर में 35 रन जोड़े, जहां इंग्लैंड ने डरबन में छह विकेट की जीत के साथ श्रृंखला में बराबरी करते हुए वापसी कीवोल्वार्ड्ट के नंबर एक पर पहुंचने से नेट साइवर-ब्रंट की शीर्ष स्थान पर छह महीने की पकड़ समाप्त हो गई। इंग्लैंड की ये ऑलराउंडर 732 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर खिसक गई है, जो श्रीलंका के कप्तान चमारी अटापट्टू (दूसरे स्थान पर हैं) से एक अंक कम है। यही नहीं,

वोल्वार्ड्ट की साथी हमवतन खिलाड़ी क्लो ट्रायॉन आठ स्थान आगे बढ़कर 544 अंकों के साथ ऑस्ट्रेलिया की एशले गार्डनर के साथ संयुक्त रूप से 17वें स्थान पर पहुंच गई है। जबकि एलिसे पेरी शतक बनाने के बाद दो स्थान ऊपर चौथे (714 अंक) पर पहुंची हैं। साढ़े तीन साल में यह पेरी का सर्वोच्च स्थान है।ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी फोएबे लिचफील्ड और ताहलिया मैक्ग्राथ ने भी बल्लेबाजों की सूची में प्रगति की है, वे 13 स्थान ऊपर चढ़कर क्रमशः 25वें और पांच से 32वें स्थान पर पहुंच गए हैं। जबकि जॉर्जिया वोल ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की प्रभावशाली शुरुआत के बाद बल्लेबाजों की रैंकिंग में 84वें स्थान पर प्रवेश किया। गेंदबाजों की सूची में मेगन स्कट दो पायदान ऊपर 715 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गई, जबकि सोफी एक्लेस्टोन 767 रेटिंग अंकों के साथ पहले स्थान पर बरकरार हैं। दक्षिण अफ्रीका की मारिज़ैन कप्प नौवें (655 अंक) से छठे स्थान पर आ गईं और उन्होंने ऑलराउंडरों की सूची में शीर्ष पर अपना स्थान बरकरार रखा है। इंग्लैंड के चार्ली डीन 605 अंकों के साथ एक पायदान ऊपर नौवें और ऑलराउंडरों की सूची में 10वें स्थान पर पहुंच गये हैं।

भारत के खिलाफ पहले दो वनडे मैचों में ऑस्ट्रेलिया की किम गर्थ की किफायती गेंदबाजी ने उन्हें पहली बार शीर्ष 20 गेंदबाजों में जगह दिलाई है। वह 532 अंकों के साथ सात स्थान की छलांग लगाकर 16वें स्थान पर पहुंच गई, जबकि उनकी टीम की साथी एनाबेल सदरलैंड गेंदबाजों की सूची में 23 स्थान ऊपर चढ़कर 24वें (468 अंक) पर पहुंच गईं और ऑलराउंडरों में पांच स्थान ऊपर चढ़कर 12वें स्थान पर पहुंच गई। वह दक्षिण अफ्रीका की नादिन डी क्लार्क से सिर्फ एक स्थान आगे रहीं, जो सात पायदान ऊपर 13वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

एफआईवीबी ने की वॉलीबॉल नेशंस लीग 2025 के लिए मेजबान शहर और पूल की घोषणा

एजेंसी

जिनेवा। विश्व वॉलीबॉल नियामक संस्था एफआईवीबी ने 2025 वॉलीबॉल नेशंस लीग (वीएनएल) के विवरण की घोषणा की, जिसमें मेजबान शहर, पूल, कार्यक्रम और टिकट शामिल हैं। महिलाओं की प्रतियोगिता 4-8 जून, 2025 तक तीन शहरों - कनाडा के ओटावा, ब्राजील के रियो डी जेनेरियो और चीन की राजधानी बीजिंग में होगी, जबकि पहले सप्ताह की पुरुषों की प्रतियोगिता 11-15 जून तक कनाडा के क्यूबेक शहर, रियो डी जेनेरियो और चीन के शीआन में आयोजित की जाएगी। महिलाओं की प्रारंभिक प्रतियोगिता 9-13 जुलाई को नीदरलैंड के एपेलडॉर्न, संयुक्त राज्य अमेरिका के अर्लिंग्टन और जापान के कैंटो में आयोजित की जाएगी, जबकि पुरुषों की टीमें अपने अंतिम प्रारंभिक मैचों में 15-20 जुलाई को पोलैंड के ग्दांस्क, स्लोवेनिया के ल्युब्लजाना और कैंटो में प्रतिस्पर्धा करेंगी। 2025 वीएनएल में भाग लेने वाली टीमों की संख्या 16 से बढ़ाकर 18 कर दी गई है, क्योंकि चीन और यूक्रेन को पुरुषों की सूची में जोड़ा गया है, जबकि चेक गणराज्य

और बेल्जियम को महिलाओं की सूची में रखा गया है।इसका मतलब है कि प्रारंभिक चरण में तीन सप्ताह में प्रत्येक लिंग के लिए कुल 108 मैच खेले जाएंगे, और प्रत्येक टीम 12 मैच खेलेगी। महिलाओं की प्रतियोगिता के लिए फाइनल 23-27 जुलाई और पुरुषों के लिए 30 जुलाई से 3 अगस्त तक होगा।

बीबीएल: मेलबर्न स्टार्स के कप्तान बने मार्कस स्टोइनिस

एजेंसी

मेलबर्न। मार्कस स्टोइनिस को आगामी बिग बैश लीग (बीबीएल) सत्र के लिए मेलबर्न स्टार्स का नया कप्तान नियुक्त किया गया है, जो लंबे समय से कप्तान रहे ग्लेन मैक्सवेल की जगह लेंगे जिन्होंने पिछली गर्मियों के अंत में कप्तानी छोड़ दी थी। 35 वर्षीय स्टोइनिस ने पिछले सीजन में मैक्सवेल की अनुपस्थिति में एक बार पहले भी स्टार्स का नेतृत्व किया था, जब मैक्सवेल अपने टूटे हुए पैर के कारण पूरे 2022-23 बीबीएल सीजन से चूक गए थे। स्टोइनिस, मैक्सवेल के बाद स्टार्स के लिए 100 बीबीएल मैच खेलने वाले दूसरे खिलाड़ी हैं और पिछले सीजन के अंत में उन्होंने तीन साल के अनुबंध विस्तार पर हस्ताक्षर किए थे, जिसका मतलब है कि वह 2026-27 के अंत तक क्लब में बने रहेंगे। स्टोइनिस ने कहा कि उन्हें यह भूमिका निभाकर सम्मानित महसूस हो रहा है। स्टोइनिस ने क्रिकेट.कॉम.एयू के हवाले से कहा, पिछले साल मैक्सी की अनुपस्थिति में मुझे टीम की कप्तानी करने का थोड़ा अनुभव था और मुझे यह अवसर बहुत पसंद आया, इसलिए पूर्णकालिक भूमिका मिलना मेरे लिए

बहुत सम्मान की बात है। पिछले 10 सालों से हर साल गर्मियों में स्टार्स मेरे जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं और मुझे सच में विश्वास है कि मैदान के अंदर और बाहर हमने जो समूह बनाया है, वह क्लब को लंबे समय से प्रतीक्षित सफलता दिला सकता है।स्टार्स के महाप्रबंधक ब्लेयर क्राउच ने पिछले पांच सत्रों में कप्तान के रूप में मैक्सवेल के योगदान को स्वीकार किया। क्राउच ने कहा, सबसे पहले, मैं पिछले पांच सत्रों में टीम का नेतृत्व करने के लिए ग्लेन मैक्सवेल के प्रयासों के लिए उनका आभार व्यक्त करना चाहता हूं और वह क्लब में सभी के लिए एक बेहतरीन संसाधन बने रहेंगे। मार्कस ने पिछले साल अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया और लंबे समय से टीम के वरिष्ठ सदस्य हैं। यह बहुत बढ़िया है कि कोई ऐसा व्यक्ति जो हमारे शुरू से ही स्टार्स में रहा है, वह बीबीएल14 में हमारे क्लब का नेतृत्व कर रहा है।

आईएसएल: जीत की लय हासिल करने उतरेंगे चेन्नइयन और हैदराबाद

एजेंसी

चेन्नई। चेन्नइयन एफसी अपने घरेलू मैदान जवाहरलाल नेहरू इंडोर स्टेडियम में खेले जाने वाले इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 मुकाबले में हैदराबाद एफसी का सामना करने के लिए तैयार है। अपने पिछले तीन मुकाबले हारने वाली इन दोनों टीमों को जीत की पटरी पर आने के लिए तत्काल लय पकड़ने की आवश्यकता है। चेन्नइयन एफसी 11 मैचों में तीन जीत, तीन ड्रा और पांच हार से 12 अंक लेकर तालिका नौवें स्थान पर है। वहीं, हैदराबाद एफसी ने 10 मैचों में दो जीत, एक ड्रा और सात हार से सात अंक लेकर तालिका में 12वें स्थान पर है। चेन्नइयन ने इस सीजन में 11 मैचों में 16 गोल किए हैं, लेकिन वो अपने पिछले तीन मैचों में गोल नहीं कर पाई हैं।कॉयल चेन्नइयन के लिए 50 आईएसएल मैच पूरे करने वाले पहले कोच बनेंगे। कॉयल ने 49 मैचों में 19 जीते और नौ ड्रा खेले हैं। लीग में उनकी जीत दर 38.8फीसदी है।वहीं, हैदराबाद एफसी (11) ने

आईएसएल 2024-25 के पहले चरण में अन्य टीमों की तुलना में अधिक गोल खाए हैं। हैदराबाद अपने पिछले छह मैचों में से चार में गोल नहीं कर पाई है। चेन्नइयन एफसी के स्कॉटिश हेड कोच ओवेन कॉयल ने कहा कि वह हैदराबाद एफसी की टीम का सम्मान करेंगे।उन्होंने कहा, हैदराबाद एफसी के पास कुछ बहुत अच्छे विदेशी खिलाड़ी और कुछ प्रतिभाशाली भारतीय हैं। हम उनका बहुत सम्मान करते हैं। लेकिन हम पहले मिनट से ही सकारात्मक खेलकर जीतने की कोशिश करेंगे। हैदराबाद एफसी के सहायक कोच शमील चेम्बकथ को अपनी टीम के फिर से फॉर्म में आने की उम्मीद है और उन्होंने कहा कि वह सुधारों पर काम कर रहे हैं।

गुजरात जाएंट्स को बड़े अंतर से हराकर अंक तालिका में छठे स्थान पर पहुंचे जयपुर पिंक पैंथर्स

एजेंसी

पुणे। रेड मशीन अर्जुन देसवाल (13) और उनके साझीदार नीरज नरवाल (8) के साथ-साथ डिफेंडर अंकुश (5) के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत जयपुर पिंक पैंथर्स ने बालेवाड़ी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के बैडमिंटन हॉल में खेले गए प्रो कबड्डी लीग के 11वें सीजन के 103वें मैच में गुजरात जाएंट्स को 42-29 के अंतर से हराकर अंक तालिका में छठा स्थान हासिल कर लिया है।

18 मैचों में नौवी जीत हासिल करने वाली जयपुर ने अपने रेडरों की बदौलत शानदार शुरुआत करते हुए पांच मिनट में 8-3 की लीड बना ली थी। गुजरात के लिए मुश्किल का क्षण था क्योंकि वे आलआउट की कगार पर थे। अंतिम खिलाड़ी के तौर पर हिमांशु रेड पर गए और दो अंक

लेकर लौटे लेकिन अगले ही पल आलआउट लेकर जयपुर ने 13-5 की लीड ले ली। इसके साथ जयपुर ने दो मैचों के बाद जीत की पटरी पर लौटी जबकि गुमान (9) और राकेश (9) के अच्छे परफार्मेंस के बावजूद गुजरात हार के मजबूर हुई। इसका कारण यह रहा कि जयपुर के डिफेंस ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए 8 के मुकाबले 13 अंक हासिल किए और दो बार आलआउट भी लिया।

आलइन के बाद जयपुर ने तीन के मुकाबले चार अंक हासिल किए और 17-8 की लीड के साथ पाला बदला। ब्रेक के बाद जयपुर ने 15 रेड प्वाइंट्स और चार टैकल प्वाइंट्स की बदौलत 22-11 की लीड बना ली थी। अब तक अर्जुन तथा नीरज ने गुजरात को भरपूर परेशान किया और उसके डिफेंस को नेस्तनाबूत कर दिया। अर्जुन की बदौलत जयपुर दूसरी बार आलआउट लेने की तैयारी में था और फिर इसे अंजाम देते हुए 25-13 की लीड ले ली। इसके बाद हालांकि गुजरात ने दो के मुकाबले तीन अंक लेकर वापसी की कोशिश शुरू की। बहरहाल, जयपुर ने 27-16 के स्कोर पर पाला बदला। हाफटाइम के बाद रेजा ने काफी अंदर आए गुमान को डैश कर फासला 12 का कर दिया लेकिन राकेश ने डू ओर डाई रेड पर पहली बार अर्जुन को बाहर किया। जयपुर के डिफेंस ने हालांकि अगली रेड पर राकेश को लपक हिसाब बराबर किया। 25 मिनट के बाद जयपुर 31-18 से आगे थे। अर्जुन रिवाइव चुके थे लेकिन आते ही फिर लपक लिए गए।

बीजिंग गुओआन के मुख्य कोच नियुक्त हुए क्विके सेटियन

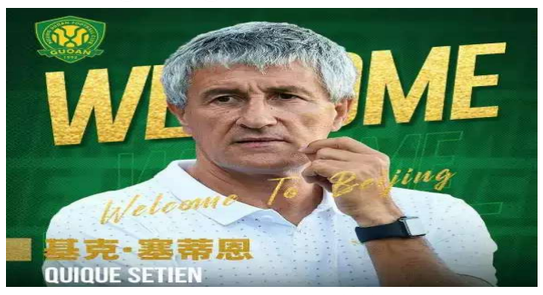

एजेंसी

बीजिंग। स्पेन के क्विक सेटियन को बीजिंग गुआन का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है, चीनी सुपर लीग (सीएसएल) क्लब ने इसकी घोषणा की। 1958 में जन्मे सेटियन ने अपने खिलाड़ी करियर की शुरुआत घरेलू टीम रेसिंग डी सैंटेंडर से की और रिटायरमेंट के बाद रियल बेटिस और बार्सिलोना सहित कई टीमों को कोचिंग दी। बीजिंग गुआन ने एक बयान में कहा, कोच सेटियन के पास प्रचुर अनुभव है और वह युवा खिलाड़ियों को तैयार करने में अच्छे हैं। हमें विश्वास है कि वह नई ऊर्जा लाएंगे और टीम को नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे। नवंबर में समाप्त हुए 2024 सीएसएल में बीजिंग गुआन 16 जीत, 8 ड्रॉ और 6 हार के साथ चौथे स्थान पर रहा।

महिला हाकी : अयोध्या मंडल को पराजित कर लखनऊ ने जीता खिताब

एजेंसी

लखनऊ। गुरू गोविन्द सिंह स्पोर्ट्स कालेज में चल रहे पं0दीनदयाल उपाध्याय सीनियर महिला हाकी प्रतियोगिता का समापन हो गया। फाइनल मैच लखनऊ मण्डल बनाम अयोध्या मण्डल के मध्य खेला गया, जिसमें लखनऊ मण्डल ने अयोध्या मण्डल को 3-0 से पराजित कर खिताब अपने नाम कर लिया। लखनऊ मण्डल की टीम की ओर से मैच के 21वें मिनट में रूबी ने पेनाल्टी कार्नर को गोल में तब्दील कर अपनी टीम का खाता 1-0 से खोल दिया, जिसके बाद दोनों ही टीमें गोल के लिए संघर्ष करती नजर आयी, जिसका परिणाम मैच के 47वें मिनट में लखनऊ मण्डल की टीम की ओर खुशी राठौर ने फील्डगोल कर अपनी टीम का स्कोर 2-0 कर दिया। मैच के आखिरी मिनट में लखनऊ मण्डल की टीम की ओर से पीताम्बरी ने एक शानदार फील्डगोल कर अपनी टीम का स्कोर 3-0 कर

अपनी टीम को अजेय बढ़त दिला दी। यही स्कोर अन्त तक कायम रहा। मैच से पूर्व मुख्य अतिथि के रूप में पवन सिंह चौहान, सदस्य, विधान परिषद ने पं0दीन दयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण किया, जिसके उपरान्त फाइनल मैच की टीमों से परिचय प्राप्त कर मैच का शुभारम्भ किया गया। मैच उपरान्त विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को क्रमशः 1000-00 प्रति खिलाड़ी एवं 800-00 प्रति खिलाड़ी का चेक वितरित किया गया। इस अवसर पर सैयद अली-पूर्व ओलम्पियन, रजिया जैदी- एशियन गेम्स स्वर्ण पदक विजेता, वीरेन्द्र सिंह, राकेश कुमा टंडन, देवेन्द्र ध्यान चन्द्र-अन्तराष्ट्रीय खिलाड़ी आदि उपस्थित थे।

झारखंड को मिली एकतरफा जीत, तमिलनाडु हारा

एजेंसी

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित नारायणपुर जिले के रामकृष्ण मिशन आश्रम के मैदान में शुरु 29 वां राष्ट्रीय महिला फुटबॉल प्रतियोगिता में झारखंड ने तमिलनाडु को 3-0 से हरा कर एकतरफा जीत हासिल की।

प्रतियोगिता का पहला दिन काफी रोमांच भरा रहा। हांगकांग,तुर्की,भूटान,बंगलादेश समेत अन्य विदेशी धरती में जलवा दिखाने वाली झारखंड की अमिषा बाक्सला ने नक्सल प्रभावित नारायणपुर के खेल मैदान में हैट्रिक गोल दाग कर तमिलनाडु की टीम को धूल चटा दिया। अमीषा की हैट्रिक गोल की से झारखंड को एकतरफा जीत हासिल हुआ। स्पर्धा का पहला उद्घाटन मैच झारखंडऔर तमिलनाडु के बीच खेला गया। गौरतलब है कि रामकृष्ण मिशन आश्रम में 29 वां राष्ट्रीय महिला फुटबॉल प्रतियोगिता चल रहा हैं। झारखंड की अमीषा बाक्सला को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

भारतीय फुटबॉल महासंघ के उप-महासचिव एम सत्यनारायण जी

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में 18 रेफरी, दो मैच कमिश्नर और दो रेफरी असेसर भी मौजूद हैं।

बीबीएल 14: मेलबर्न रेनेगेड्स में शामिल हुए मार्कस हैरिस, जेवियर क्रोन

एजेंसी

मेलबर्न। मेलबर्न रेनेगेड्स ने बिग बैश लीग (बीबीएल) 14 से पहले विक्टोरियन स्टार मार्कस हैरिस और जेवियर क्रोन के साथ करार किया है।हैरिस, अंतरराष्ट्रीय अनुभव वाले एक अनुभवी सलामी बल्लेबाज हैं, जो बीबीएल 8 चैंपियनशिप जीतने वाली टीम का हिस्सा रह चुके हैं।

हैरिस ने इस घरेलू सत्र की शानदार शुरुआत की है। विक्टोरिया के लिए अभियान की शुरुआत करते हुए, उन्होंने वन-डे कप के पहले मैच में अर्धशतक बनाया और इसके बाद शेफील्ड शील्ड में एक शतक और एक और अर्धशतक लगाया। हैरिस ने क्लब की ओर से जारी एक बयान में कहा, रेनेगेड्स के साथ वापस आना बहुत अच्छा है। व्हाइटी (कैमरन व्हाइट) के आने और क्लब द्वारा बनाई गई टीम के साथ यह रोमांचक है। मैं उस स्थिति में वापस जाने के लिए उत्सुक हूं, जहां मैंने अपना अधिकांश बीबीएल खेला है। विक्टोरिया के लिए दमदार प्रदर्शन करने के बाद, एक होनहार तेज गेंदबाज क्रोन बिग बैश के मैदान में वापस आ गए हैं। उनका यह ग्रीष्मकाल शानदार रहा है, जिसमें उन्होंने शील्ड स्तर पर 15 विकेट लिए हैं और साथ ही सीज़न के अपने पहले रेड बॉल गेम में एक महत्वपूर्ण अर्धशतक भी लगाया है।क्रोन ने कहा, मैं रेनेगेड्स के साथ यह अवसर पाकर उत्साहित हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस साल खेलने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ। इस सीज़न में शामिल होने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूँ। मेलबर्न रेनेगेड्स के महाप्रबंधक जेम्स रोसेनगार्डन ने इन खिलाड़ियों का स्वागत किया और उनके संभावित प्रभाव पर प्रकाश डाला। रोसेनगार्डन ने कहा, मार्कस एक विश्व स्तरीय बल्लेबाज है जो अपने साथ ढेर सारा अनुभव और शांतचित्तता लेकर आता है। जेवियर एक उभरती हुई प्रतिभा है जो बल्ले और गेंद दोनों से ही असली अंतर पैदा करने की क्षमता रखता है और हम उसे बिग बैश के माहौल में कामयाब होते हुए देखने के लिए उत्साहित हैं।

हैरिस और क्रोन दोनों ने अगस्त में डार्विन में हुए टॉप एंड टी20 टूर्नामेंट में रेनेगेड्स के लिए प्रमुखता से प्रदर्शन किया था। रेनेगेड्स 16 दिसंबर को अपने अभियान की शुरुआत करेगा, जिसमें दोनों से टीम की सफलता की तलाश में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।

बेंगलुरू बुल्स को 15 अंक से हराकर बंगाल वारियर्स ने प्लेआफ की संभावना बरकरार रखी

एजेंसी

पुणे। बंगाल वारियर्स ने बालेवाड़ी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के बैडमिंटन हॉल में खेले गए प्रो कबड्डी लीग के 11वें सीजन के 104वें मैच में बेंगलुरू बुल्स को 44-29 के अंतर से हराकर प्लेआफ की दौड़ में खुद को बरकरार रखा है। दूसरी ओर, बुल्स के लिए इस सीजन का एक लिहाज से समापन हो गया है। बंगाल ने 17 मैचों में चौथी जीत के साथ एक स्थान की छलांग लगाई है। इस जीत में एस. विश्वास (14), प्रणय (9) और डिफेंस में नितेश (7) और फजल (7) का योगदान रहा। बंगाल ने अपने डिफेंस के दम पर यह मैच जीता। उसने डिफेंस में 8 के मुकाबले 18 अंक लिए। दूसरी ओर, परदीप नरवाल (14) के शानदार प्रदर्शन के बावजूद बुल्स बड़ी हार को मजबूर हुए। बहरहाल, चोटिल मनिंदर के बगैर मैट पर उतरी बंगाल ने पहली ही रेड पर परदीप को लपक लिया लेकिन विश्वास को लपक नितिन ने उन्हें रिवाइव करा लिया। तीन मिनट बाद बंगाल 4-1 से आगे थे। इसके बाद परदीप ने डुबकी पर सुपर रेड के साथ स्कोर बराबर कर दिया। बंगाल सुपर टैकल सिचुएशन में थे लेकिन विश्वास ने मल्टी प्वाइंटर के साथ यह स्थिति टाल दी।बंगाल ने तीन मिनट बाकी रहते 8-5 की लीड ले ली थी। इसके बाद बुल्स ने 1 के मुकाबले दो अंक लेकर 10 मिनट की समाप्ति तक स्कोर 7-9 कर दिया।

ब्रेक के बाद नीतेश ने अपने तीसरे शिकार के साथ स्कोर 10-7 कर दिया। फिर चार के डिफेंस में डू ओर डाई रेड पर मल्टी प्वाइंटर के साथ विश्वास ने बुल्स को आलाउट की ओर धकेल दिया।इसके बाद फजल ने परदीप का शिकार किया और फिर बंगाल ने आलआउट लेते हुए 16-8 की लीड ले ली। सुशील ने इस बीच परदीप को रिवाइव करा लिया और बुल्स ने 2 के मुकाबले तीन अंक लेकर वापसी की राह पकड़ी। बंगाल हालांकि अपनी पकड़ी ढीली नहीं होने दे रहे थे। 20 मिनट के बाद भी बंगाल को 22-12 की लीड मिली हुई थी।परदीप ने हाफटाइम के बाद एक और डुबकी पर दो अंक लेकर स्कोर 14-23 कर दिया। इसके बाद भी बुल्स ने दो अंक लिए लेकिन इतने ही अंक लुटा भी दिए। इसके बाद फजल ने परदीप का शिकार किया तो नितेश ने सुशील को आउट कर हाई-5 पूरा किया। फिर प्रणय ने डू ओर डाई रेड पर सौरव का शिकार कर बुल्स के लिए सुपर टैकल आन कर दिया।परदीप अगली रेड पर एक अंक लेकर लौटे लेकिन प्रणय ने मल्टी प्वाइंटर के साथ बुल्स को आलआउट की ओर धकेल दिया। नितेश ने परदीप को एंकल होल्ड किया और फिर बंगाल ने आलआउट लेकर 33-19 की लीड ले ली। आलइन के बाद परदीप ने सुपर-10 पूरा किया। इसके तुरंत बाद फजल ने भी हाई-5 पूरा किया। बंगाल अब 35-20 से आगे थे।

परदीप ने इसके बाद दो रेड में दो अंक लिए तो विश्वास ने एक ही रेड में दो अंक लेकर सुपर-10 पूरा किया। बुल्स का डिफेंस लगातार गलतियां कर रहा था और यही कारण था कि 34 मिनट बाद बंगाल 38-23 से आगे थे। इसके बाद भी बंगाल ने बुल्स को वापसी का कोई मौका नहीं दिया और एक बड़ी जीत के साथ खुश नजर आई।

शादी के बाद कॉकलेट पार्टी में छाई नई दुल्हनिया

शोभिता धुलिपाला

बैकलेस-डीप नेक गाउन में नागार्जुन की बहू ने दिखाया बोल्ड लुक

बी-टाउन के गलियारों में इस वक्स जिस कपल की तस्वीरें छाईं हैं वो हैं नागा चैतन्य और शोभिता धुलिपाला। सुपरस्टार नागार्जुन के बेटे नागा चैतन्य ने एक्ट्रेस शोभिता संग दूसरी शादी रचाई। कपल ने 4 दिसंबर को तेलगू रीति रिवाज से सात फेरे लिए। कपल की शादी की तस्वीरें खूब वायरल हुई थी।

वहीं अब शादी के बाद हुई की कॉकटेल पार्टी से शोभिता का लुक सामने आया है जो इंटरनेट पर तेजी से वायरल हो रहा है। कॉकटेल पार्टी के लिए नई दुल्हनिया ने बेहद ही बोल्ड लुक चुना। शोभिता ने बैकलेस गाउन कैरी किया। हसीना की ये ड्रेस डीपनेक भी थी जिस वजह से उनके क्लीवेज साफ नजर आ रहे थे।

इस लुक को उन्होंने मैचिंग क्लच से कंप्लीट किया। नागार्जुन की बहू ने लॉन्ग नेकपीस और ईयररिंग्स पेयर किए थे। शोभिता ने अपने हाथों के लिए कोई भी एक्सेसरी नहीं पहनी थी। उनकी मेहंदी ने उनके लुक में नई दुल्हन की झलक भर दी। जहां तक उनके ग्लैमर की बात करें तो शोभिता ने न्यूड मेकअप लुक और खूबसूरत हेयरस्टाइल चुना।

बता दें कि शोभिता और नागा ने कुछ टाइम डेट करने के बाद शादी कर ली। उनकी शादी की तस्वीरें खूब वायरल हो रही हैं। उनकी शादी में करीबी रिश्तेदार और फैमिली वाले शामिल हुए।दुल्हन के जोड़े में शोभिता बहुत गॉर्जियस लगीं। उन्होंने ट्रेडिशन अटायर और जूलरी पहनी थी।

'अगर मैं झूठ बोलूं तो..', अनुपमा एक्ट्रेस रुपाली गांगुली ने सौतेली बेटी के आरोपों पर दिया करारा जवाब

अनुपमा एक्ट्रेस रुपाली गांगुली पिछले काफी समय चर्चा में हैं। एक तरफ जहां टीवी के नंबर 1 शो अनुपमा को एक के बाद एक एक्टर अलविदा कह रहा है वहीं रुपाली गांगुली (Rupali Ganguly) ने भी सौतेली बेटी ईशा वर्मा के साथ चल रहे विवाद पर फाइनली चुप्पी तोड़ी है। एक्ट्रेस ने बेटी के सभी आरोपों पर अब पलटवार किया है।

टेलीविजन की टॉप एक्ट्रेस की लिस्ट में नाम दर्ज करवा चुकीं अभिनेत्री रुपाली गांगुली पिछले काफी समय से अपनी प्रोफेशनल लाइफ के साथ-साथ अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी सुर्खियां बटोर रही हैं। वनराज (सुधांशु पांडे) से लेकर काव्या (मदालसा शर्मा) और अनुज कपाड़िया उर्फ गौरव खन्ना जैसे बड़े-बड़े स्टार्स स्टार प्लस के शो 'अनुपमा' को अलविदा कह चुके हैं। सभी के शो से जाने का ठीकरा रुपाली गांगुली पर फूटा।

वहीं दूसरी तरफ अनुपमा एक्ट्रेस अपनी सौतेली बेटी के साथ चल रहे विवाद को लेकर भी चर्चा में हैं। दरअसल, कुछ महीने पहले अश्विन वर्मा (Rupali Ganguly Husband) की बेटी ईशा ने रुपाली और अपने पिता पर उनकी मेंटल कंडीशन का मजाक उड़ाने के साथ ही कई आरोप लगाए थे, जिसके बाद एक्ट्रेस ने अपनी सौतेली संतान पर 50 करोड़ का मानहानि का केस किया था। अब बेटी ईशा के सभी आरोपों पर %अनुपमा% (Anupamaa) एक्ट्रेस ने चुप्पी तोड़ दी है और सभी बातों का जवाब दिया है।

कोई पीठ पीछे बोलता है तो बुरा लगता है- रुपाली गांगुली

हाल ही में एक अवॉर्ड फंक्शन में शामिल हुईं रुपाली गांगुली से जब ये सवाल पूछा गया कि जिस तरह से लगातार कंट्रोवर्सी हो रही है, उससे क्या आप इफेक्ट होती हैं। जिसका जवाब देते हुए उन्होंने इंस्टेंट बॉलीवुड से कहा,

रुपाली पर मां के गहने चुराने का लगाया था आरोप

आपको बता दें कि ईशा वर्मा ने %अनुपमा% एक्ट्रेस पर अपनी मां के गहने चुराने का आरोप लगाया था। उनका ये भी कहना था कि एक्ट्रेस ने शादीशुदा मर्द के साथ अफेयर किया।

Baaghi 4 से कटा श्रद्धा कपूर-दिशा पाटनी का पत्ता! Tiger Shorff की फिल्म में हुई इस एक्ट्रेस की एंट्री

जिस दिन से टाइगर श्रॉफ (Tiger Shroff) की अपकमिंग फिल्म बागी 4 (Baaghi 4) की घोषणा हुई है, उसके बाद से सोशल मीडिया पर इसको लेकर जबरदस्त हाइप नजर आ रहा है। अभिनेता संजय दत्त की फिल्म में एंट्री से इस हाइफ को और अधिक रफ्तार मिल गई है।

टाइगर श्रॉफ और संजय दत्त के बाद ये चर्चा तेज हो गई है कि बागी 4 में इस बार कौन सी एक्ट्रेस नजर आने वाली है। क्योंकि पिछली 3 पार्ट्स में श्रद्धा कपूर और दिशा पाटनी ने दर्शकों का दिल जीता है। इस बीच बागी 4 की लीड एक्ट्रेस को लेकर बड़ी खबर सामने आ गई है। आइए जानते हैं कि वो अभिनेत्री कौन है।

बागी 4 में दिखेगी ये एक्ट्रेस

साल 2016 में निर्माता साजिद नाडियाडवाला के नेतृत्व में बागी फ्रेंचाइजी की शुरुआत हुई थी। फिल्म के पहले पार्ट में टाइगर श्रॉफ के साथ श्रद्धा कपूर नजर आईं। 2018 में इसका सीक्वल यानी बागी 2 को रिलीज किया गया और दिशा पाटनी ने उसमें श्रद्धा को रिप्लेस किया। इसके बाद 2020 में आई बागी 3 के जरिए श्रद्धा कपूर ने इस फ्रेंचाइजी में वापसी की।

अब पिंकविला की रिपोर्ट के आधार पर ये खबर सामने आ रही है कि बागी 4 में ये दोनों अदाकारा नहीं दिखाई देंगी। पंजाबी एक्ट्रेस सोनम बाजवा (स्भ्ठ्ठद्व क्चड्डद्भ2ड्ड) टाइगर श्रॉफ की इस मूवी का हिस्सा बनेंगी। जिसकी जानकारी उन्होंने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर दी है। बॉलीवुड में बतौर एक्ट्रेस सोनम बाजवा अपनी छाप छोड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

सिर्फ बागी 4 ही नहीं बल्कि, सुपरस्टार अक्षय कुमार की कॉमेडी फ्रेंचाइजी फिल्म हाउसफुल 5 में भी सोनम अहम किरदार निभाती हुई नजर आएंगी। बता दें कि हाउसफुल 5 सोनम बाजवा की पहली हिंदी फिल्म होने वाली है, जो अगले साल बड़े पर्दे पर रिलीज होगी।

हनी सिंह

की जिंदगी पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'यो यो हनी सिंह फेमस' का ट्रेलर हुआ रिलीज, जानें कब और कहां देख सकते हैं

पुष्पा 2 इन दिनों थिएटर्स में धमाल मचा रही है. फिल्म लोगों को खूब पसंद आ रही है और करोड़ों की कमाई कर रही है. इस फिल्म के गाने भी खूब वायरल हो रहे हैं. पुष्पा 2 का क्रेज लोगों में इसके पहले पार्ट पुष्पा को देखने के बाद आया है. पुष्पा- द राइज में सामंथा ने ऊं अंटावा गाने से महफिल लूट ली थी. लेकिन इस बार फिल्म में श्रीलीला का एक बेहतरीन डांसिंग नंबर है.

ये काफी एनर्जेटिक है और लोगों को पसंद आ रहा है.हाल ही में एक्ट्रेस श्रीलीला ने अपनी फिल्म का गाना गाते हुए एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें उनकी गोद में एक छोटी सी बच्ची नजर आ रही है. श्रीलीला अपने इस नन्ही सी फैन को प्यार कर रही हैं और किस करते हुए किसिक गाते नजर आ रही हैं. अब श्रीलीला के इसी वीडियो पर फैन्स जमकर कमेंट कर रहे हैं. इसी बीच इब्राहिम अली खान का कमेंट वायरल हो रहा है.

श्रीलीला के वीडियो पर क्या बोले इब्राहिम अली

श्रीलीला का यह वीडियो उनकी वैनिटी वैन के अंदर का है. वैनिटी वैन में ये छोटी सी बच्ची एक्ट्रेस से मिलने के लिए पहुंच गई थी. जिसके बाद श्रीलीला ने उसको गोद में उठा लिया और किसिक गाना गाने लगीं. गाना गाने के बाद एक्ट्रेस ने बच्ची को कसकर गले लगाया और प्यार से किस कर लिया. वीडियो शेयर करते हुए श्रीलीला ने कैप्शन में लिखा, किसिक किड्स फॉर द क्यूट किडी, वैनिटी विजिटर. वीडियो में श्रीलीला एक खूबसूरत ब्लैक आउटफिट में नजर आ रही हैं, वहीं छोटी बच्ची ने फ्लोरल ड्रेस कैरी की है.

इंस्टाग्राम पर श्रीलीला का ये वीडियो देखने के बाद सैफ अली खान के शहजादे इब्राहम अली खुद को रोक नहीं पाए और एक मजेदार सा कमेंट कर डाला. इब्राहिम ने मजाकिया अंदाज में कमेंट बॉक्स में लिखा, तुम इतनी छोटी सी बच्ची के साथ छेड़छाड़ क्यों कर रही हो. जवाब में श्रीलीला ने लिखा, ये प्यारा सा एग्रू है.

इब्राहिम और श्रीलीला का वर्कफ्रंट

इब्राहिम अली की बात करें तो वह सरजमीं के जरिए बॉलीवुड में डेब्यू के लिए पूरी तरह से तैयार हैं. इस फिल्म में उनके साथ काजोल और पृथ्वीराज सुकुमारन नजर आएंगे. इसी के साथ खबर ये भी आ रही है कि श्रीलीला बॉलीवुड में इब्राहिम अली खान के साथ अपने डेब्यू के लिए तैयार है. इब्राहिम और श्रीलीला की साथ में आने वाली फिल्म का नाम दिलेर बताया जा रहा है.